CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवसूत्ररहस्यम्

सोदाहरणहिन्दीभाषानुवादसहितम्)

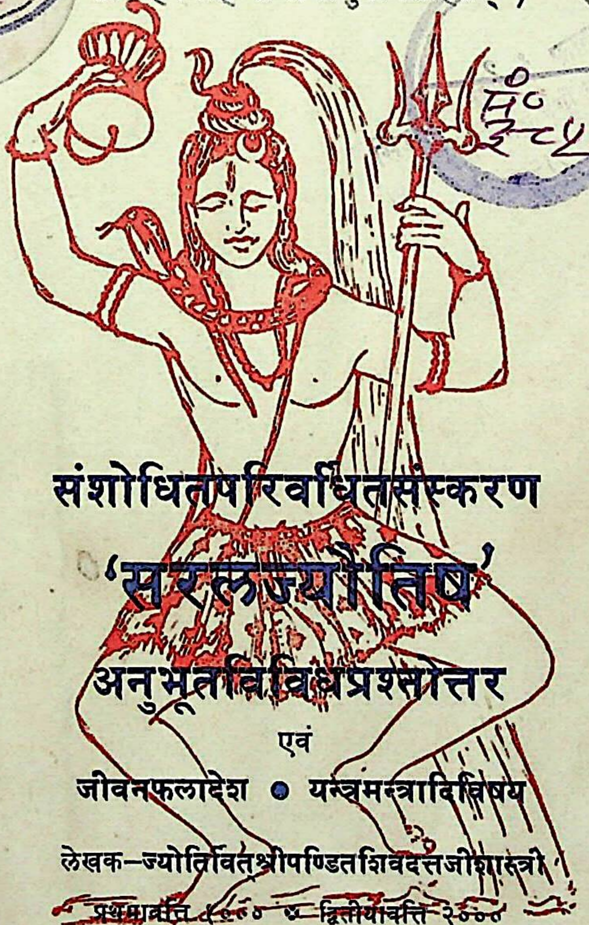

संशोधितपरिवर्धितसंस्करण

'सरलज्योतिष'

अनुभूतविविधप्रश्नोत्तर

एवं

जीवनफलादेश • यन्त्रमन्त्रादिविषय

लेखक–ज्योतिर्वितश्रीपण्डितशिवदत्तजीशास्त्री

प्रथमावृत्ति १००० • द्वितीयावृत्ति २०००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या.................. प्राप्ति-संख्या....................

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम श्री शिवसूत्ररहस्यम्.......................

लेखक पं० शिवदत्त जी शास्त्री..................

लेनेवाले का	देनेकी	लेनेवालेका	लौटानेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्री शिवसूत्ररहस्यम् ॥

(संशोधितंपरिवर्द्धितञ्च)

(उदाहरणहिन्दीभाषानुवादसहितम्)

अर्थात्

[अनुभूतज्यौतिष-यन्त्र-मन्त्रादि विषयपरिपूर्णम्]

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान नरिया, (का.) वाराणसी

लेखकः

इटावामण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामवास्तव्यसुधीशिरोमणि-

-विद्वत्सार्वभौमश्रीपं०श्यामलालशर्मसूनुः

श्रीपं० शिवदत्तशास्त्री व्या०आ०आ० कर्म काण्डविशारदः

(सर्वाधिकारः सुरक्षितः पुस्तकलेखकाधीनः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखक :—ज्योतिर्वित्श्रीपं० शिवदत्तशास्त्री
व्या०आ०आ०कर्मकाण्डविशारद
स्थान—सलेमपुर । पत्रालय—अछल्दा । मण्डल—इटावा (उ० प्र०)

यह पुस्तक या इसका कोई अंश विना लेखक की लिखित आज्ञा के कोई न छापें । —लेखक

प्रकाशक :—श्री कुमुदेशचन्द्र जैन
स्थान—४८/१६२ रेशमगली पचकूचा जनरलगंज कानपुर—१
फोन नं० ६३४२९

भाद्रवदि ८, शुक्रवार २०२८ ता० १३-८-७१

प्रथमावृत्ति—१०००

पुस्तकप्राप्तिका स्थान—१—श्री चन्द्रशेखरत्रिपाठी
एम. ए., एल. टी. लेक्चरार
मकान नं० ७३ मुहल्ला ठाकुरान
मु०पो०लखना जिला इटावा (उ०प्र०)
२—श्री कुमुदेशचन्द्र जैन
४८/१६२ रेशमगली पचकूचा जनरलगंज
कानपुर—१ (उ०प्र०)

नोट—डाक व्यय भेजने पर पुस्तक निःशुल्क भेजी जायगी। उत्तर के लिये कार्ड या टिकट भेजना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० ३८५
२९२५

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
१—	प्रार्थना (सरस्वती की)	
२—	ग्रन्थ प्रकाशित करने का उद्देश्य	१
३—	ग्रन्थ में प्रकाशनीय विषय	२-३-४
४—	विविध विषयोपयोगी चक्र	५
५—	प्रश्न करने का नियम	७
६—	प्रश्नोत्तर निकालने की प्रथम विधि	७-८-९
७—	प्रसंगवश इष्टकाल का विवरण	९-१०
८—	विनाइष्टकाल के प्रश्नोत्तर निकालने की द्वितीय विधि	११
९—	प्रश्नोत्तर निकालने की तृतीय विधि	११-१२
१०—	अहोरात्र में-वार-नक्षत्र-तिथि आदिकों -का चतुर्दश सूत्रानुसार विभाग	१३-१४-१५-१६
११—	नं० १ प्रश्नावली	१७

विविध प्रकार के प्रश्न व प्रश्नोत्तर सूची

संख्या —	अक्षर	प्रश्न —	पृष्ठ	—प्रश्नोत्तर—	पृष्ठ
१ —	अ	—परदेश में गये व्यक्ति के — आगमन आदि का निर्णय	१७	— ,, —	२१
२ —	आ	—मुकदमें में क्या होना हैं इसका निर्णय	१७	— ,, —	२२
३ —	इ	—नौकरी मिलने आदि का निर्णय	१७	— ,, —	२३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या	अक्षर	प्रश्न	पृष्ठ	प्रश्नोत्तर	पृष्ठ में
४—	ई	गर्भ में क्या है इसका निर्णय	१७	— „ —	२४
५—	उ	नष्टवस्तुमिलने आदि का निर्णय	१७	— „ —	२५
६—	ऊ	रोगी का रोग दूर होने आदि का निर्णय	१७	— „ —	२६
७—	ऋ	व्यापार में लाभ या नुकसान का निर्णय	१७	— „ —	२७
८—	ॠ	यात्रा करने में शुभाशुभ का निर्णय	१७	— „ —	२८
९—	ऌ	तवादिला होगा या नहीं इसका निर्णय	१७	— „ —	२९
१०—	ॡ	मन में निश्चित विचार पूर्ण होने का निर्णय	१७	— „ —	३०
११—	ए	आज का दिन मेरा कैसा रहेगा इसका निर्णय	१७	— „ —	३१
१२—	ऐ	खोया हुआ पशु किस दिशा में है इसका निर्णय	१७	— „ —	३२
१३—	ओ	वह मनुष्य या स्त्री विश्वास पात्र है या नहीं का निर्णय	१७	— „ =	३३
१४—	औ	विवाह का प्रश्न	१७	— „ —	३४
१५—	ह	साझेदारी के काम में लाभ या नुकसान का निर्णय	१८	— „ —	३५
१६—	य	शत्रुओं पर विजय या पराजय का निर्णय	१८	— „ —	३६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या	अक्षर — प्रश्न	पृष्ठ		प्रश्नोत्तर		पृष्ठ में
१७—	व...वह मनुष्य या स्त्री या बच्चा जीवित है या नहीं का निर्णय	१८	—	,,	—	३७
१८—	र...परीक्षा मे फेल या पास का निर्णय	१८	—	,,	—	३८
१९—	ल...बेकार मनुष्य का रोजगार लगने का निर्णय	१८	—	,,	—	३९
२०—	ञ...चोरी गई वस्तु का स्थान निर्णय	१८	—	,,	—	४०
२१—	म...वार्ता सत्य हैं या मिथ्या का निर्णय	१८	—	,,	—	४१
२२—	ङ...काम में सफलता मिलेगी या नहीं का निर्णय	१८	—	,,	—	४२
२३—	ण..हारजीत का निर्णय (मल्ल युद्ध अर्थात् कुश्ती में)	१८	—	,,	—	४३
२४—	न...यह वर्ष कैसा जायगा सुख प्रद या कष्ट प्रद	१८	—	,,	—	४४
२५—	झ...जिस व्यक्ति से मिलने जा रहा हूँ वह मिलेगा या नहीं	१८	—	,,	—	४५
२६—	भ...जो काम करने जा रहा हूँ इसमें लाभ या हानि क्या होगा	१८	—	,,	—	४६
२७—	घ...क्या कभी सन्तान होगी या नहीं का निर्णय	१८	—	,,	—	४७
२८—	ढ...उस व्यक्ति के पास जाना है कार्य पूर्ण होगा या नहीं	१८	—	,,	—	४८
२९—	ध..कूप खोदने में जल का निर्णय	१९	—	,,	—	४९
३०—	ज...इस स्थान को छोड़ कर अन्य स्थान में जाने से कैसा रहेगा	१९	—	,,	—	५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या	अक्षर — प्रश्न	पृष्ठ	प्रश्नोत्तर	पृष्ठ में
३१—	व...जेलखाने से छूटेगा या सजा मिलेगी	१९	— ,, —	५१
३२—	ग...इस वस्तु में लाभ होगा या नुकसान	१९	— ,, —	५२
३३—	ड...गल्ले आदि का व्यापार किया जाये नहीं	१९	— ,, —	५३
३४—	द...वर्षा होगी या नहीं	१९	— ,, —	५४
३५—	ख...इस वर्ष में तेजी रहेगी या मन्दी	१९	— ,, —	५५
३६—	फ...परदेश में गये हुए का विशेष निर्णय	१९	— ,, —	५६
३७—	थ...खेती करने से लाभ होगा या नहीं	१९	— ,, —	५७
३८—	ठ...भैंस या बैल आदि लेकर काम करने में लाभ या हानि	१९	— ,, —	५८
३९—	थ...किसी व्यक्ति को अपने यहाँ रखने से लाभ या हानि	१९	— ,, —	५९
४०—	च किसी व्यक्ति को रुपया वस्तु देने से लाभ या हानि	१९	— ,, —	६०
४१—	ट...जप पूजन व अनुष्ठान व्रत में सफलता का प्रश्न	१९	— ,, —	६१
४२—	त...न्यायकर्ता न्यायी है या अन्यायी इसका निर्णय	१९	— ,, —	६२
४३—	क...उन्नति तरक्की आदि का निर्णय	१९	— ,, —	६३
४४—	प...मकान शुभ है या अशुभ इसका निर्णय	१९	— ,, —	६४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या	अक्षर	— प्रश्न	पृष्ठ	प्रश्नोत्तर	पृष्ठ में
४५—	श	वर्तमान कष्ट से मुक्त (छुटकारा) होने का निर्णय	२०	— „ —	६५ में
४६—	ष	सट्टा लाटरी आदि में सफलता का निर्णय	२०	— „ —	६६
४७—	स	रोग है या प्रेत बाधा आदि का निर्णय	२०	— „ —	६७
४८—	ह	ऋण (कर्ज़) दूर होगा या नहीं का निर्णय	२०	— „ —	६८
४९—		विशेष आवश्यक सङ्केत व मूक प्रश्न	२०	— „ —	६८ से ७७ तक
५०—		नं० २ प्रश्नावली			७८
५१—		न० २ प्रश्नावली के अनुसार प्रश्नोत्तर			७९
५२—		शिव सूत्रों के आधार से पिण्ड बनाकर अनेक प्रकार के प्रश्नों के उत्तर निकालने की अन्य विधि			८०
५३—		पिण्ड बनाने की विधि			८१
५४—		पिण्ड बनाने की विधि सरल हिन्दी भाषा में			८२
५५—		उदाहरण पिण्ड बनाने का			८३
५६—		जय पराजय निर्णय उदाहरण सहित			८३ से ९१
५७—		पिण्ड द्वारा विविध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर निकालना			९१ से ९७ तक
	(क)	गर्भ में पुत्र अथवा कन्या का निर्णय			९२
	(ख)	जय पराजय निर्णय			९२
	(ग)	मूक प्रश्न निर्णय			९२
	(घ)	कार्य कब होगा इसका निर्णय			९३
	(च)	हमारा समय कैसा जायेगा इसका निर्णय			९३
	(छ)	परदेशी के आगमन आदि का निर्णय			९३
	(ज)	चुनाव (एलेक्शन में) जय-विजय का निर्णय			९४ से ९७ तक
५८—	(क)	स्त्री पुरुष के मध्य में प्रथम किसकी मृत्यु होगी इसका निर्णय उदाहरण सहित (प्रथम नियम)			९८ से १०० तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ख) स्त्री पुरुष के मध्य में प्रथम किसकी मृत्यु होगी इसका निर्णय उदाहरण सहित-द्वितीय नियम १०१ से १०३ तक
(ग) स्त्री पुरुष के मध्य में प्रथम किसकी मृत्यु होगी इसका निर्णय उदाहरण सहित-तृतीय नियम १०३ से १०९ तक
५९— शिवचतुर्दश सूत्रों द्वारा विविध प्रश्नोत्तर निकालने की अन्यविधि ११०
६०— सर्वसा धारण के लिये अति सरलनियम प्रश्नोत्तर निकालने का १११
६१— भूमि संशोधनादि प्रकरणम् ११९
६२— तात्कालिक सिवसूत्रस्थापन चक्रम ११४
६३— प्रसङ्गवश भूमि में स्थित द्रव्य शल्यादि विचार ११५
६४— द्रव्यादि निर्णय ११६
६५— अहो रात्र में २८ नक्षत्रों का भोग्य काल ११८
६६— अहो रात्र में चतुर्दश सूत्रों का भोग्य काल ११९
६७— सूत्रों का नक्षत्र विभाग १२०
६८— तिथि आदि निर्णयार्थ अष्टा विशति कोष्ठात्मक चक्र १२१
६९— द्रव्य लाभा लाभ निर्णय १२३
७०— द्रव्यादि स्थिति की गहराई १२३
७१— प्रसङ्गवश चोर आदि के नाम का प्रथमाक्षर निकालने की विधि १२५
७१— मुहूर्त विषये निर्णय
इति भूमि संशोधनादि प्रकार: पुनश्च १११
७२— जातक फला देश वर्णन ११२
७३— शिव सूत्र स्थापन कुण्डली ११३
७४— १२ भावों का शुभ तथा अशुभ फल का विवरण ११४
७५— शिव चतुर्दश सूत्र भोग्यकाल ११५
७५— दशा का वर्णन प्रकार ११५
७६— शिव सूत्र दशा चक्र (१) ११७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७—	श्री शिवसूत्राक्षर दशा चक्र (२)	पुनः	११८
७८—	शिवसूत्रणां यन्त्र रूपेण विधानम्		११९
७९—	अथ शिवसूत्रयन्त्र रूप		१२२
८०—	अथशिवसूत्रों का यन्त्र रूप से सङ्क्षेप से विवेचन		१२२
८१—	शिवसूत्रों की मन्त्र रूप से उपयोगिता वर्णन		१२५
	(क) विच्छू विष उतारने का वर्णन		
	(ख) सर्प के विष दूर करने का उपाय		
	(ग) प्रेतवाधा होने पर उपाय		
	(घ) ज्वरतिजारी चौथिया आदि दूर करने का उपाय।		
	(च) सकल रोग दूर करने का उपाय		
	(छ) श्वास उन्माद आदि रोग दूर करने का उपाय		
	ज) शिवसूत्र कल्याणप्रद है इत्यादि वर्णन। इति शिवसूत्र का मन्त्र रूप से वर्णन समाप्त		
८३—	शिवसूत्रों की प्रार्थना		
८३—	श्री गुरुदेव चरण कमल प्रार्थना		
८४—	लेखक का वंशव ग्राम आदि वर्णन		

परिशिष्टभाग

श्री देवीशकुनावली

(उदाहरण हिन्दी भाषानुवाद सहित)

१—	श्री देवी शकुनावली चक्रम्
२—	श्री देवी शकुनावली निरूपण उदाहरण सहित
३—	प्रश्न विषयिक नियम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ द्वितीयावृत्तिपरवक्तव्य ॥

इस श्रीशिवसूत्ररहस्य की प्रथमावृत्ति प्रकाशित होते ही शीघ्र समाप्ति हो गई विद्वान् महात्मा एवम् साधारण जनता ने भी इस पुस्तक की मुक्तकण्ठ से विशेष प्रशंसा की इसमें प्रकाशित सभी विषय पूर्ण सत्य घटित होने पर संशोधित तथा परिवर्द्धित करने के लिये विद्वद्वृन्द एवम् महात्माओं ने आज्ञा प्रदान की उन पूज्य जनों की आज्ञानुसार संशोधित तथा परिवर्द्धित करके पुस्तक प्रकाशित आपके कर कमलों में सादर समर्पित है। मानव स्वभाववश त्रुटि होना स्वाभाविक है अतः सुजनसमुदाय क्षमा करें तथा त्रुटियों की सूचना दें ताकि अग्रिम संस्करण में सुधार हो सके। अपनी अस्वस्थता एवं समयाभाव के कारण इस पुस्तक को यहीं समाप्त करना पड़ रहा है शीघ्र अगले संस्करण में सूत्र में अक्षरों का विवेचन, योग, वेदान्त आयुर्वेद आदि का विशद् विवेचन एवं चौदह वार ही डमरू बजाने का रहस्य स्पष्ट किया जायेगा।

विनीत—शिवदत्तशास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ प्रकाशक के दो शब्द ॥

हमारे त्रिकालदर्शी महर्षियों ने जिनके जीवन विशेषरूप से तपोमय अवस्था में ही बीते हैं सदैव लोक कल्याणार्थ अपूर्व दृष्टि से जनहित निहित किये है। महर्षि पाणिनि जी ने घोर तपस्या के प्रभाव से शिवजी की डमरू की नाद से प्राप्त चौदह सूत्रों द्वारा लोकहित के लिये व्याकरणशास्त्र की रचना की एवं अन्यान्य महर्षियों ने अति तपस्या के प्रभाव से उन्हीं चौदह सूत्रों के द्वारा संसार के कल्याण के लिये ज्योतिष-तन्त्र-मन्त्र आदि अनेक विषयों की रचना की।

महर्षियों के मूल रचना के आधार से ही ऐहलौकिक एवं पारलौकिक श्रेय प्राप्त को दृष्टि में रखते हुये भवानीशंकर के परम भक्त, अनेक स्तोत्रों के रचयिता-ग्रन्थलेखक-प्रवक्ता-ज्योतिष-व्याकरण-तन्त्र-साहित्य-धर्मशास्त्र आदि के अति सुयोग्य विद्वान् परमपूज्य गुरुदेव श्री १०८ श्रीमान् पं० शिवदत्तजीशास्त्री ने अपूर्व-अद्वितीय श्रीशिवसूत्ररस्यम्" इस पुस्तक की रचना सुचारुरीति से की तथा साधारण जन भी इस पुस्तक से लाभ उठा सकें अतः अतिरमणीय-सहित हिन्दी भाषानुवाद भी किया उन्होंने मेरी प्रार्थना पर जनताजनार्दन की सेवाहेतु उसके प्रकाशन का आदेश मुझे प्रदान किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूँ कि परमपूज्य श्रद्धेय शास्त्री जो की रचित अन्य सभी पुस्तकों के प्रकाशन करने वाले अन्य भक्तों के समान ही मुझे भी आपलोगों के समक्ष अतुलनीय-अद्वितीय-अपूर्व विषय वाली पुस्तक प्रस्तुत करने का सुअवसर मिला।

प्रकाशित पुस्तक आपलोगों के करकमलों में सादर समर्पित है इसकी-उपयोगिता तथा उत्कृष्टता का निर्णय आप लोग स्वयं कर सकेंगे। परमश्रद्धेय विद्वज्जनों से नम्र निवेदन है कि इस पुस्तक से आप आपना तथा जनता का अवश्य कल्याण करने की कृपा करें तथा पुस्तक रचियता एवं प्रकाशक के परिश्रम को सफल बनावें।

पुस्तक शुद्ध छपे इसका यथा सम्भव प्रयास मेरी ओर से किया गया है किन्तु परमपूज्य शास्त्री जी की अनुपस्थिति में पुस्तक छपने के कारण यदि उसमें कुछ अशुद्धियां रह गई हों तो पाठक गण क्षमा करें एवं मानव सुलभ त्रुटियों की सूचना दें ताकि अग्रिम संस्करण में सुधार हो सके।

आपका विनीत—
कुमुदेशचन्द्र जैन
प्रकाशक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्कथन

लोकहितैषी सकल जगदाधार जगन्नियन्ता जगदीश्वर आधिदैविकादि-दुःखत्रयसन्तप्त जनों के उद्धारार्थं एवं धर्मादि स्थापनार्थ-ब्रम्ह-विष्णु-शकर आदि अनेक स्वरूपों से युग युग में अवतार लेकर लोक का कल्याण करते हैं यह एक सुनिश्चत सिद्धान्त है। जिस समय दाक्षीपुत्र महामुनि पाणिनि ने व्याकरण विद्या साम्राज्य लाभ के लिये प्रयाग क्षेत्र में अक्षयवट के नीचे सर्व विद्याधीश्वर भगवान् शिव का समाराधन करने के लिये तीव्र तपस्या की, उसी समय उसी क्षेत्र में सनकादि सिद्ध भी ब्रम्हज्ञान प्राप्त के लिये तप कर रहे थे। तथा अन्यान्य योगी जन भी यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र-ज्योतिषादि की ज्ञान प्राप्ति के लिये तीव्र तप कर रहे थे चिरकाल में कठोर तपस्या से परितुष्ट भगवान् शिव ने सभी लोगों को वर देने के लिये प्रकट होकर नृत्य के समय चौदहवार डमरू बजाया।

उस डमरू का शब्द पाणिनिको अष्टाध्यापी ग्रन्थ निर्माण का उपयोगी अइउण् आदि हल् पर्यन्त चतुर्दश सूत्ररूप प्रतीत हुआ। पाणिनि जी ने चतुर्दश सूत्रों के आधार पर व्याकरण शास्त्र की रचना की। सनकादि सिद्धों ने उनचौदह सूत्रों के आधार पर ब्रम्हज्ञान की स्थापना की उन सनकादि सिद्धों को चतुर्दश सूत्र ब्रम्हज्ञान रूप में प्रतीत हुये थे। अन्यान्य योगी जनों को अपने अपने मनोऽभीष्ट इच्छानुसार यन्त्र-तन्त्र व मन्त्र रूप से चतुर्दश सूत्र प्रतीत हुये अतः उनलोगों ने चौदह सूत्रों के आधार पर यन्त्र-मन्त्र व तन्त्र की स्थापना की। किसी योगी जन को अपने मनोऽभीष्टइच्छानुसार—ज्योतिष आदि रूप में चतुर्दश सूत्र प्रतीत हुये। अतः उन लोगों ने चौदह सूत्रों के आधार पर ज्योतिष आदि की स्थापना की भगवान् शिव द्वारा प्राप्त चतुर्दश सूत्राधार होने से सभी लोगों की स्थापनायें अति श्रेष्ठ लोक कल्याण के लिये हुई। चौदह सूत्रों का पूर्ण रहस्य एवं महिमा दुर्गेय है सिद्ध योगीजन तथा विद्वज्जन ही जानते हैं।

सन् १९६० में आसाम से भगवती कामाख्या देवी के दर्शन करके वापस लौटते समय वाराणसी में एक तपो मूर्ति योगिराज महात्मा जी द्वारा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान् शिव डमरू के नाद से प्राप्त चतुर्दश सूत्रों की महत्ता अनेक विषयों पर सङ्केत रूप से मैंने प्राप्त की थी। चौदह सूत्रों को यन्त्र-तन्त्र व मन्त्र स्वरूप होने के कारण संसार में कोई भी ऐसा कठिन से कठिन कार्य नहीं है जो इनके द्वारा शीघ्र पूर्ण न होके अर्थात् सभी कार्य शीघ्र पूर्ण हो सकते हैं। सभी घोर सङ्कट दूर हो सकते हैं।

अनेक प्रकार के प्रश्न चाहे प्रत्यक्ष के हों ए। मानसिक, उनके उत्तर तत्काल सही निकाले जा सकते हैं भूत-भविष्य वर्तमान के प्रश्नोत्तर देना भी चतुर्दश सूत्रों द्वारा कोई कठिन नहीं है। जातक शिशु के जन्म कालिक लग्ना-नुसार चतुर्दशसूत्रों की स्थिति के आधार से सारे जीवन का शुभ तथा अशुभ फल कहा जा सकता है। संसार के प्राणियों के सभी प्रकार के प्रश्न के उत्तर निकालने में चतुर्दश सूत्ररूप एक सिद्धसत्य साधन है। उन्हीं महात्मा जी के सङ्केत के आधार से ही मेरा प्रयास है सरलपद्यों-द्वारा उसका विस्तार वर्णन किया गया है। मुझे पूर्णविश्वास है कि इस चतुर्दशसूत्र रहस्य से समस्त विज्ञजनलाभान्वित होंगे और मेरे प्रयास को सफल बनावेंगे। यदि जनता का थोड़ा भी हित हुआ तो मैं अपने प्रयास को पूर्ण सफल समझूंगा।

अल्पज्ञता के कारण अतिगुप्तचतुर्दशसूत्ररहस्य प्रकाशन में जो त्रुटियां हों दयालु पाठक क्षमा करेंगे तथा उनसे मुझे भी ज्ञात कराने की कृपा करेंगे अग्रिम संस्करण में उनका संशोधन हो सके।

यदत्र स्खालितङ्किञ्चित् प्रमादेनभ्रमेणवा।
तत्सर्वं शोधयन्त्वार्याःकस्यनस्खलितम्मनः ॥
गच्छतः स्खलनङ्क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्तिदुर्जनास्तत्रसमादधतिसज्जनाः ॥

विनीत–शिवदत्त शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ग्रन्थपरिचय ॥

इस पुस्तक में आशुतोष भगवान् शङ्करजी की डमरू की नाद से उपलब्ध-चौदह सूत्रों द्वारा विविध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर निकालना तथा जातक के जीवन पर्यन्त तक का फलादेश निकालना परस्पर के संघर्ष (चुनाव) आदि में कौन विजयी होगा-इसका निर्णय करना-एवं स्त्री पुरुष-में प्रथम किसकी मृत्यु होगी इसका निर्णय तथा चौदहसूत्रों-को मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र आदि स्वरूप होने के कारण अनेक प्रकार के कठिन से कठिन कार्यों में लफलत प्राप्ति का उपाय एवं समस्त रोग आदि कष्ट दूर करने के पूर्ण अनेकबार के अनुभूत प्रयोग दिये गये हैं। तथा गृह निर्माण में शुभा शुभ भूमि आदि का निर्णय आदि अनेक विषय दिये गये हैं।.

प्रश्नोत्तर निकालने की विधि—

समस्त प्रश्नोत्तर निकालने की चार प्रकार की विधि लिखीं हैं किसी भी एक प्रकार से उत्तर निकाल लेना चाहिये पूर्णविवरण अतिसरल रीति से वहीं लिखा गया है। (१) इष्टकाल के द्वारा चौदह सूत्रों से प्रश्नोत्तर निकाला। (२) यदि इष्टकाल नहीं जानता है तो, अङ्गुली सूत्रों पर रखकर प्रश्नोत्तर निकालना। (३) चौदहसूत्रों के द्वारा क्रमशः पिण्डवनाकर विविध प्रकार के प्रश्नोत्तर निकालना। चौथा अति सरल नियम यह है-कि-पृच्छक से कहिये कि आपको क्या पूछना हैं पृच्छक का जो प्रश्न हो उस प्रश्न को प्रश्नावाली में देखिये किस अक्षर के सामने है वह अक्षर अवश्य स्मरण रखना चाहिये—इसके बाद पृच्छक से कहिये कि चौदह के अन्दर किसी एक अङ्क को कहिये अर्थात् १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४ इनमें से कोई एक अङ्क कहना चाहिये इसी से प्रश्नोत्तर निकाल आयगा यथा किसी ने प्रश्न किया कि अमुक स्त्री के गर्भ में क्या है तो यहां गर्भ के प्रश्न में (ई) अक्षर का प्रश्न है– (ई) इस अक्षर को स्मरण रखना चाहिये-पृच्छक ने चौदह अङ्का के मध्य में (६) छठवां अङ्क कहा है तो (ई) और ६ अङ्क का मिलान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलाया तो प्रश्नोत्तर निकला, पुत्र जन्म निश्चय, इसी प्रकार अनेक प्रकार के प्रश्नों के उत्तर निकाल लेना चाहिये। इस नियम में अङ्गुली रखवाना तथा मुख से सूत्र कहलाने आदि की कोई आवश्यकता नहीं हैं।

सङ्केत-इतना ध्यान अवश्य रहे कि पृच्छक ने क्या प्रश्न पूछा है वह ४८ अक्षरों में किस अक्षर के सामने का प्रश्न है वह अक्षर तथा चौदह तक में किसी एक अङ्क की सङ्ख्या का ध्यान रहे। दोनों के मिलान से उत्तर निकाल लेना चाहिये।

॥ मूकप्रश्न ॥

मूक प्रश्नों में पृच्छक पुष्प-फल-देवता या नदी-इनमें समय के नियमानुसार किसी एक का नाम कहे तथा १४ सूत्रों में किसी एक सूत्र को कहे या किसी पर अङ्गुली रखवे-पृच्छक के मुख से कहे हुये पुष्प आदि के प्रथम अक्षर तथा चौदह सूत्र का पूर्ववत् मिलान मिलाने से उत्तर सहित मूक प्रश्न निकल आयेगा।

यथा किसी ने मूक प्रश्न जानने के लिये गुलाब के पुष्प का नाम कहा-तथा हयवरट् यह सूत्र कहा या अङ्गुली रखी तो-ला, अक्षर तथा-हयवरट् इस सूत्र के मिलान में लाभ विषयिक प्रश्न है। इसका उत्तर प्रश्नावली में (ग) के सामने सुशोभन फल रहेगा यह उत्तर आया। ४३ अक्षर हैं मूक प्रश्न में।

आवश्यक सूचना

(१) प्रश्नाक्षर तथा सूत्र का मिलान का समझना अत्यावश्यक है।
(२) चौदह सूत्रों का जानना भी परमावश्यक है-यदि इस सूत्र (१४ सूत्र) याद न भी हों तो भी प्रश्नोत्तर आदि निकालने में असुविधा न होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) चौदह सूत्रों की सङ्ख्या आदि कोष्ठों में लिखी है उसी चक्र को सामने रखकर प्रश्नोत्तर आदि निश्चय कर लेना चाहिये।

(४) जहां सूत्र के अक्षर की गणना की आवश्यकता होगी वह अन्तिम अक्षर गणना में नहीं लिया जायगा—जैसे (अइउण्) में ण् यह हल् अक्षर होने से गणना में नहीं आयेगा। (ऋलृक्) में क् नहीं लिया जायगा। इसी प्रकार सभी सूत्रों में जानना चाहिये।

(५) १ अइउण्। २ ऋलृक्। ३ एओङ्। ४ ऐऔच्। ५ हयवरट्। ६ लण्। ७ ञमङणनम्। ८ झभञ्। ९ घढघष। १० जबगडदश्। ११ खफछठथचटतव्। १२ कपय् १३ शषसर्। १४ हल्। ये ही १४ सूत्र हैं। इन्हीं चौदह सूत्रों के द्वारा समस्त कार्यों में सफलता मिलती है। इनका जानना आवश्यक है।

(६) अन्तिम अक्षर सभी सूत्रों के दूर करने से कुल अक्षर ४३ होते है। आ+ई+ऊ+ॠ+ॡ=५ और बढ़ जाने से ४८ होते हैं। छोटा अक्षर बड़े का भी बोधक है यहां दोनों अक्षर लिये गये।

सङ्केत—जहां प्रश्नोत्तर आदि निकालने की विधि लिखी है वहां सभी विषय विस्तार पूर्वक लिखे हैं।

प्रश्नविषयकविवरणसमाप्त के बाद पृष्ठ सङ्ख्या १०५ पर भी सर्व साधारण के लिये अति सरल नियम प्रश्नोत्तर निकालने का लिखा है वहां भी देख लेना चाहिये। प्रश्न विषय समाप्ति पर पुनः स्मरण करा दिया है।

वक्तव्य—परदेश में गये व्यक्ति के आगमन आदि का फल प्रश्न पृष्ट १६ में है—उसका निर्णीत उत्तर पृष्ठ २० में है। विशेष निर्णय प्रश्न पृष्ट १८ में भी है उसका स्पष्ट उत्तर पृष्ट ५५ में भी है दोनों मिलान कर लेना चाहिये।

लेखक—शिवदत्तशास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयावृत्ति प्रकाशन में समयाभाव तथा अस्वस्थता के कारण विशेष संशोधन तथा परिवर्द्धन कर सकने में विवश रहा। यदि आशुतोष-करुणावरुणालय-भगवान् शिव की कृपा रही तो तृतीयावृत्ति में श्रीशिवजी से प्राप्त चतुर्दश सूत्रों में–वेदान्त-साङ्ख्य-योग आदि का विवेचन तथा अइउण् इस सूत्र में–अ+इ+उ ये तीन ही अक्षर क्यों। ऋऌक्--इस सूत्र में ऋ+ऌ ये दो ही अक्षर क्यों आदि शङ्का समाधान एवं चतुर्दश सूत्रों में प्रति सूत्र के अक्षरों पर शङ्का समाधान तथा अन्यान्य गुप्त रहस्य भी प्रकट करने का प्रयास करूंगा। परमपूज्य योगिराज तपोमूर्ति महात्मा जी ने चतुर्दशसूत्रों का अनेक विषयों पर गुप्त रहस्य केवल सङ्केतमात्र ही बतलाया था–पुनः विशेष प्रयत्न करने पर भी उनके दर्शन नहीं हुये।

भवदीय :–शिवदत्त शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

卐 श्री मद्गुरवेनमः 卐

(श्रीशिवसूत्र रहस्यरचयिता)

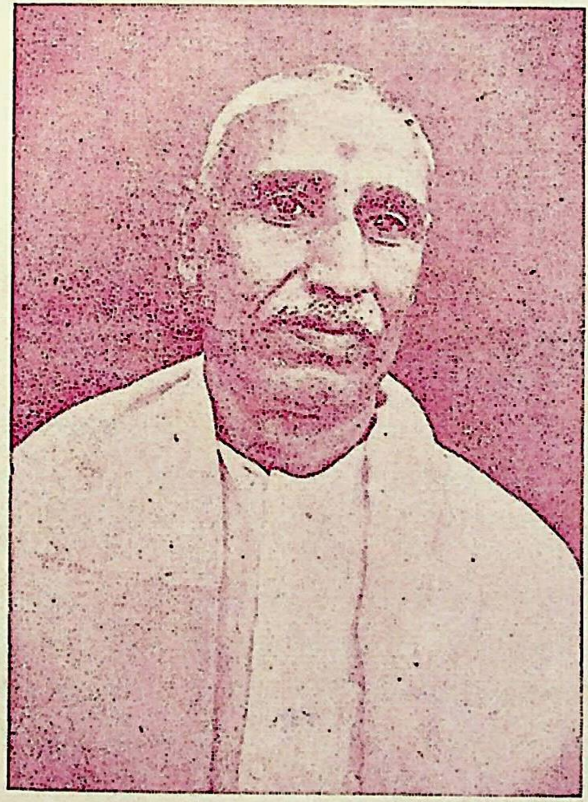

'श्रीशिवस्तोत्र' व 'श्रीहनुमत्स्तोत्र' आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता श्री शिवसूत्ररहस्य आदि ग्रन्थलेखक–प्रवक्ता–ज्यौतिष–व्याकरण–तन्त्र-साहित्य-धर्मशास्त्र आदि के अति सुयोग्य विद्वान्-परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-प्रातः स्मरणीय श्री १०८ श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

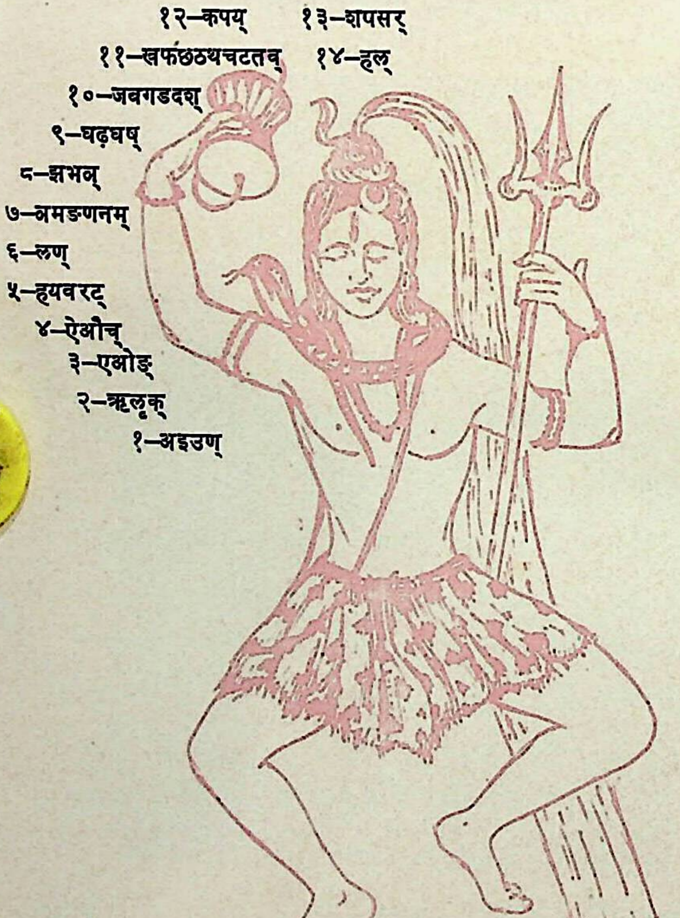

श्लोक १

शम्भोःप्रसादवहुशास्त्रविधानमूलं-
स्फोटस्वरूपमनिशं वहुमन्त्ररूपम् ।
भट्टोजिपाणिनिपतञ्जलिचिन्तितंयत्
वन्देमहेश्वरचतुर्दशसूत्रजालम् ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक १—

वागीश्वरींहरिविरञ्चिमहेशपूज्याम्—
भक्त्याप्रणम्यवरदाऽम्परमामुदाराम् ।
विद्वद्धितायशिवसूत्ररहस्यमेतत्—
सर्वङ्गुरोःकरुणया प्रकटीकरोमि ॥

× × × ×

अर्थ—

विष्णु—ब्रह्मा तथा शङ्कर से पूजित अत्यन्तउदास्मनोऽभीष्ट वरदेनेवाली, भगवती सरस्वतीदेवी को भक्तिपूर्वक प्रणाम करके श्रीगुरुदेव की कृपा से विद्वज्जन के हित के लिये शिवसूत्र रहस्य को प्रकट कर रहा हूँ ॥१॥

श्लोक २—

माहेश्वरे भुविचतुर्दशसूत्रजाले—
नाद्यावधिप्रकटितङ् खलुसद्रहस्यम् ।
केनापिगुप्तमधिकं विवुधेन सर्वन्—
तत्स्वल्पधीरहमिदम्प्रकटीकरोमि ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ–

श्री शिवजी की डमरू की नाद से प्राप्त चौदह सूत्रों का गुप्त–रहस्य अभी तक किसी भी विद्वान् ने सम्पूर्ण वर्णन–नहीं किया अतः अतिस्वल्पवुद्धवाला मैं उस गुप्त–रहस्य को प्रकाशित (प्रकट) कर रहा हूँ ॥२॥

× × × ×

श्लोक ३–

प्रश्नानाङ्किलमानवस्यमनसा सञ्चिन्तितानान्तथा
प्रष्टानामपिचोत्तराणिभुवनेदातुं समर्थोभवेत् ।
वोध्यञ्जातकजीवनावधिफलं सूत्रानुसारेणवा—
सूत्राणीह चतुर्दशैव विदुषाम्मन्त्रादिरूपाणिच ॥

× × × ×

अर्थ–

चौदह सूत्रों द्वारा मूक प्रश्न व अन्य सभी प्रकार के पूछे हुये प्रश्नों के उत्तर दिये जा सकते हैं। और जातक के समस्त जीवनपर्यन्त का फल भी कहा जा सकता है। तथा इन शिवडमरू की नाद से प्राप्त १४ सूत्रों को मन्त्र-तन्त्र यन्त्र आदि स्वरूप होने से मनुष्यों के समस्त सङ्कट दूर हो सकते हैं यह सब आगे वर्णन किया जायगा ॥३॥

× × × ×

श्लोक ४–

प्रश्नोत्तरस्यविधिमत्रवदामिपूर्वम्—
पश्चाच्च जातकशुभाशुभलक्षणादि ।
मन्त्रादिवर्णनमपूर्वमतीवरम्यम्—
पञ्चस्वरादिवहुगुप्तविधिब्रवीमि ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ-

प्रथम नाना प्रकार के प्रश्नोत्तर की विधि का वर्णन होगा- पश्चात् जातक के जीवनपर्यन्त का शुभ तथा अशुभ फलादेश कहा जायगा। एवम् मन्त्र आदि का सुन्दर वर्णन तथा पञ्च-स्वर आदि का विभाग वर्णन किया जायगा ॥४॥

× × × ×

श्लोक ५-

माहेश्वरेऽखिलचतुर्दशसूत्रजाले-
पञ्चस्वरादिवहुवर्णभिदांविभज्य ।
चैत्रादिमासरविचन्द्रकुजज्ञजीव-
शुक्रार्कयोहि विवुधैः क्रमशोनिरुक्ताः ॥

अर्थ-

महेश्वर के प्रसाद से प्राप्त १४ सूत्रों में (अइउएओआदि) इनवर्णो का विभाग तथा चैत्र आदि १२ मासों-का विभाग एवम् रविचन्द्र आदि ७ दिनों का विभाग क्रमशः करना चाहिये। आगे चक्र में देखिये स्पष्ट लिखा है ॥५॥

× × × ×

श्लोक ६-

मेषादिराशिनिवहङ् क्रमशस्तुविद्धि-
नक्षत्रभेदमपितत्र च कृत्तिकातः ।
सर्वंयथामतिविभज्य वदेत्फलानि-
लोके कदापिनहिहास्यपदंलभेत ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ–

चौदह सूत्रों में मेष आदि १२ राशियों का विभाग तथा कृत्तिका नक्षत्र से अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों का विभाग क्रमशः भरणी नक्षत्र पर्यन्त करना चाहिये। आगे लिखे हुये चक्र में सभी विषयों के विभाग देखने से स्पष्ट हो जायेंगे। प्रश्नोत्तर निकालने में इतना ध्यान रखना- चाहिये कि प्रश्नकर्ता १४ सूत्रों को जानता है या नहीं दूसरी बात यह भी जानना अतिआवश्यक कि उत्तर निकालनेवाला इष्टकाल आदि निकालना जनता है कि नहीं। यदि प्रश्नकर्त्ता तथा उत्तर दाता इन लिखित विषयों से अनभिज्ञ हैं तो उनको चाहिए कि आगे लिखे चक्र के आधार से जीवनफलादेश विचारें तथा दोनों के लिये अतिसरल उपाय से प्रश्नोंत्तर निकालने की विधि लिखी जायेगी उस रीति से प्रश्नोत्तर निकालने में कभी भी उपहास न होगा–उत्तर सत्य घटित होगा। आगे विशेष उपयोगी चक्र लिखा जा रहा है उसके आधार से प्रश्नोत्तर तथा जीवन पर्यन्त तक के फलादेश निकालने में विशेष सहायता मिलेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ अथविविधविषयज्ञानकेलियेउपयोगी चक्र ॥

शिवसूत्र	राशिगण	नक्षत्रगण	नक्षत्रगण	दिनगण	मासगण	तिथिगण	तिथिगण	स्वरगण	चरादिस्वभाव	अक्षरसूत्रों में	दिशायें	स्वर	वर्ण	वर्ण	वर्ण	शिवसूत्राक्षर	सूत्राक्षर	शिवसूत्राक्षर	सूत्राक्षर	सूत्रफल
अइउण्	मेष	कृति.	अ०	रवि	चै०	१	३०	अ	चर	३	पू	अ	क	द	स	अ	ञ	द	ह	अशुभ
ऋलृक्	वृष	रो०	ज्ये०	सोम	वै०	२	१५	इ	स्थि.	२	द०	आ	ख	घ	ह	इ	म	ख	०	शुभ
एओङ्	मिथुन	मृ०	मू०	भौम	ज्ये०	३	०	उ	द्वि.	२	प०	इ	ग	न	०	उ	ङ	फ	०	शुभा-शुभ
ऐऔच	कर्क	आ०	पू०	बुध	आ०	४	०	ए	च.	२	उत्त०	ई	घ	प	०	ऋ	ण	छ	०	शुभ
हयवरट्	सिंह	पु०	उ.षा	गुरु	श्रा०	५	०	ओ	स्थि.	४	मध्य	उ	च	फ	०	लृ	न	ठ	०	अशुभ
लण्	कन्या	पु०	अभि०	शुक्र	भा०	६	०	अ	द्वि.	१	पू०	ऊ	छ	ब	०	ए	झ	थ	०	शुभ
ञमङणनम्	तुला	आ०	श्र०	शनि	आ०	७	०	इ	च.	५	द०	ऋ	ज	भ	०	ओ	भ	च	०	शुभ
झभञ्	वृश्चिक	म०	ध०	रवि	का०	८	०	उ	स्थि.	२	प०	ॠ	झ	म	०	ऐ	घ	ट	०	अशुभ
घढधष्	धनुः	पू०	श०	चन्द्र	मार्ग	९	०	ए	द्वि.	३	उ०	लृ	ट	य	०	औ	ढ़	त	०	शुभ
जबगडदश्	मकर	उ.फा	पू.भा.	भौम	पौष	१०	०	ओ	च.	५	म०	लृ[२]	ठ	र	०	ह	घ	क	०	अशुभ
खफछठथ-चटतव्	कुम्भ	ह०	उ.भा.	बुध	माघ	११	०	अ	स्थि	८	पू०	ए	ड	ल	०	य	ज	प	०	अशुभ
कपय्	मीन	चि०	रे०	गुरु	फा०	१२	०	इ	द्वि.	२	द०	ऐ	ढ	व	०	व	ब	श	०	शुभ
शषसर्	मेष	स्वा०	अ०	शुक्र	चैत्र	१३	०	उ	च.	३	प०	ओ	त	श	०	र	ग	ष	०	अशुभ
हल्	वृष	वि०	भ०	शनि	वै०	१४	०	ए	स्थि.	१	उ	औ	थ	ष	०	ल	ड	स	०	शुभ

संङ्केत—श्लोक संख्या ५ तथा श्लोक संख्या ६ के आधार से चक्र बनाया गया है। लृ[२] इसे बड़ी लृ समझें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanas

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक ८—

ध्यात्वाशिवंसगिरिजम्फलपुष्पहस्त:—
प्रश्नंवदेन्निजमुखाद्‌विदुष:समक्षे ।
सूत्रञ्चशम्भुवरलब्धमपिप्रशान्त:—
प्रष्टासदैवकथयेत् फलबोधनाय ॥

× × × ×

अर्थ—

प्रच्छक को चाहिए कि अपने हस्त में फल पुष्प अथवा (चावल के ११ दाने) लेकर भगवान् शंकर जी व श्री जगदम्बा पार्वती जी का ध्यान करके उत्तरदाता दैवज्ञ के पास विशेष शान्त चित्त से अपने मुख से लिखे हुए प्रश्नों में से कोई एक प्रश्न पूछना चाहिए तथा शिव सूत्रों में से कोई एक सूत्र कहना चाहिए ।

श्लोक ८—

यत्प्रश्नकाले शिवसूत्रमुक्तं—
सूत्रघ्नसूत्राक्षरकाणितत्र ।
युक्तानिवै स्वेष्टघटीषुकृत्वा
वेदेन्दुभिश्चैव विभाजितानि ।

× × × ×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक ९–

शेषेण चप्रश्नकदम्बकानाम्
प्रश्नोत्तराणीह वदन्तुविज्ञाः ।
ध्यात्वा शिवः शम्भुपदारविन्दं
लोकोपकृत्यैकृतवान् रहस्यम् ॥

× × × ×

अर्थ–

प्रश्नकाल में प्रच्छक ने प्रश्न करने के बाद जो सूत्र अपने मुख से कहा है उस सूत्र की संख्या से तथा उस सूत्र के अक्षरों की संख्या से परस्पर गुणा करके। सूर्योदय काल से प्रश्न करते समय तक जो समय व्यतीत हुआ है इसी को इष्टकाल कहते हैं–इस इष्टकाल में सूत्र और सूत्राक्षर का परस्पर गुणा किया हुआ जो फल है उसको जोड़ कर १४ से भाग देना चाहिए शेष से प्रश्नोत्तर कहना चाहिए। श्री शिवदत्त शास्त्री ने भगवान् शंकर जी के चरण कमलों का ध्यान करके लोककल्याण हेतु यह गुप्त रहस्य (जैसा गुरुदेव जी से सङ्केत मिला वैसा ही) प्रकट किया ॥८·९॥

सङ्केत–

प्रश्नोत्तर निकालने में यह ध्यान सदा रखना चाहिये कि इष्ट काल का ग्रहण यहां केवल घटी में करना चाहिए पलों के ग्रहण से उत्तर निकालने में सन्देह रह जाता है अतः शिव सूत्र रहस्य के आधार में केवल घटी मात्र ही ग्रहण करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाहिए अतः यदि पल ३० से अधिक हों तो १ घटी मानकर घटी में जोड़ देना चाहिए। यदि ३० पल से कम हो तो पलों को छोड़कर केवल घटी से सभी कार्य में गणित करके प्रश्नोत्तर देना चाहिए। जैसे इष्टकाल यदि १० घ–२९ पल है तो यहां २९ छोड़कर केवल १० से ही गणित होगा। यदि कहीं इष्ट काल १२।३१ तो ३१ को १ घरी मानकर १२ में जोड़कर १३ से गणित करना चाहिए। यहां मुख्य कार्य घटी से ही करना होगा।

प्रश्नोत्तर निकालना

यदि पूछने वाला १४ सूत्रों को जानता है तो उससे कहिए कि पहिले लिखे हुए प्रश्नों में से कोई प्रश्न निश्चित कीजिए कि आपको क्या पूछना है इसके बाद १४ सूत्रों में किसी एक सूत्र को कहिए। सूत्रसंख्या तथा सूत्राक्षर का गुणा करके सूर्योदय काल से वर्तमान इष्टघटी में जोड़ करके १४ से भाग देकर शेष से उत्तर निकल आयेगा। जैसे किसी ने प्रश्न किया कि परदेश में गए व्यक्ति का विवरण कहिए पूछने वाले ने सूर्योदय काल से ७ घटी इष्टकाल पर प्रश्न किया है और प्रश्न का सूत्र (ऐऔच्) है जो कि अइउण् से चौथा पड़ता है। ४ सूत्र संख्या २ अक्षर संख्या ४×२=८ हुए सूर्योदय से इष्टकाल ७ जोड़ दिया तो ७+८=१५ हुए १४ का भाग दिया तो १ शेष बचा। परदेशी के प्रश्न में (अ) अक्षर का प्रश्न है १ शेष बचा तो सूत्र १ अइउण् के सामने (अ) का मेल मिलाया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो निकला 'सकुशल शीघ्र आयेगा' इस प्रकार अनेक प्रश्न निकाले जा सकते हैं। इतना ध्यान रहे कि जिस विषय का प्रश्न हो उसका अक्षर याद रखना चाहिए जैसे परदेशी के प्रश्न का अक्षर (अ) हैं। वाद में शेष बचे अंक से सूत्र संख्यामान-कर अक्षर और शेष बचे सूत्र सङ्ख्या के मिलन से फल (प्रश्नोत्तर) कह देना चाहिए। यहां शेष १ बचा। एक शेष 'अइउण्' सूत्र आया (अ) और अइउण् के मिलान से 'सकुशल शीघ्र आयेगा' यदि २ शेष वचते तो 'अ' अक्षर और ऋलृक्' दूसरा सूत्र होने से 'प्रेम में फँसा है आने में विघ्न है। यह प्रश्नोत्तर निकलता। इसी प्रकार अन्य सभी प्रश्नोत्तर निकाल लेना चाहिए। "ऐऔच्" इसका हल् अक्षर च् छोड़ दिया केवल (ऐ+औ) २ अक्षर हुए थे एवम् सर्वत्र जानना चाहिए।

॥ प्रसङ्गवशइष्टकालकाविवरण ॥

यह लिखा जा चुका है कि सूर्योदय काल से प्रश्न करते समय तक का जो व्यतीत समय है वही इष्टकाल है—जैसे किसी ने दिन में १० बजकर ३० मिनट पर प्रश्न किया तो इस समय का इष्ट निकालना है। इष्टकाल निकालने में सूर्योदय का ज्ञान परमावश्यक है मान लिया कि प्रश्न करने के दिन सूर्योदय ६ वजकर ३० मिनट का है तो १०–३० मिनट में ६ घं० ३० सूर्योदय के घंटा मिनट घटा दिए तो शेष ४ घंटा बचे। घंटाओं में यही इष्टकाल है। किन्तु यहां प्रश्नोत्तर निकालने में घड़ी–पलों की आवश्यकता है अतएव घन्टा ४ को ढाई से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणा किया तो १० घड़ी यही घड़ी में इष्टकाल हुआ। नियम—ढाई घड़ी का एक घन्टा होता है। ढाई पल का एक मिनट होता है। ढाई विपल का एक सेकेण्ड होता है। प्रश्नोत्तर निकालने के लिए तथा जातक के फलादेश जानने के लिए इष्टकाल आदि का ज्ञान अति आवश्यक है। इष्टकाल—लग्न—नवांशा आदि के जानने के लिए ज्योतिष के अन्य ग्रंथ देखना चाहिए

× × × ×

श्लोक १०—

प्रष्टावदेन्निजमुखाच्छिवसूत्रमेकं—
प्रश्नाङ्कितांक्षरमपि प्रवदेत्तदानीम्।
मेलापकेनविबुधाश्चतयोर्ब्रुवन्तु—
प्रश्नोत्तराणिविविधानि सुनिश्चितानि॥

× × × ×

श्लोक ११—

चेत्प्रश्नकाले शिवसूत्रमेकं—
प्रष्टायदावैकथनेऽसमर्थः।
हस्ताङ्गुलीस्थापनमेवकुर्या—
च्छेषन्तदापूर्ववदेवचिन्त्यम्॥

॥ विना इष्टकाल के प्रश्नोत्तर निकालना॥

यदि दैवज्ञ (उत्तर देने वाला पण्डित) इष्टकाल नहीं जानता है या बिना इष्टकाल के प्रश्नोत्तर निकालना चाहता है तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृच्छक से कहना चाहिये कि लिखे हुए प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न को कहिये तथा १४ सूत्रों में एक सूत्र कहिये– दो बातों से ही प्रश्नोत्तर निकल आयेगा– जो प्रश्नोत्तर के लिये प्रश्न पूछा है उसका अक्षर (अ) आदि याद रखिये तथा कहे हुये सूत्र को याद रखिये– दोनों के मेलापक से उत्तर निकल आयेगा ॥१०॥ यदि सृच्छक १४ सूत्रों में एक भी सूत्र नहीं कह सकता है तो– उससे कहिये कि प्रश्नों में जो प्रश्न करना है वह बतलाइये तथा चौदह सूत्रों में एक सूत्र पर अङ्गुली रखवाइये– तो दोनों के मेलापक से उत्तर निकल आयगा। ॥११॥ चाहे मुख से सूत्र कहे या अङ्गुली रक्खी जाये मेलापक दोनों प्रकार का एक ही होगा उत्तर सही निकलेगा– जैसे किसी ने प्रश्न किया कि अमुक स्त्री के गर्भ में क्या है तो यह प्रश्न नं० ४ में 'ई' अक्षर का प्रश्न है–यहां 'ई' यही प्रश्नाङ्कित अक्षर है इसे याद रखिये तथा पृच्छक ने मुख से 'हयवरट्' कहा अथवा 'हयवरट्' इस सुत्र पर अङ्गुली रक्खी है यहाँ 'ई' इस प्रश्नांकित अक्षर के सामने 'हयवरट्' इस सूत्र का मेलापक मिलाया तो निकला (कन्या जन्म लेगी)

विशेष ध्यानदेने की बात यह है कि प्रश्नाङ्कित अक्षर तथा सूत्र दोनों के मिलान से उत्तर सही निकलेगा। प्रथम प्रश्नों में एक प्रश्न करना है इस प्रश्न का उत्तर अ––आ––इ––ई ––उ––ऊ आदि जो वहाँ लिखा है वह याद रखना चाहिये तथा बाद में सूत्र जो मुख से कहा है या अङ्गुली रक्खी गई है उससे मिलाना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—चतुर्थी—नवमी—चतुर्दशी—इन तीन तिथियों में प्रश्न नहीं करना चाहिये यदि प्रश्नोत्तर की आवश्यकता ही पड़ जाये तो प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक प्रश्न किये तथा प्रश्नोत्तर दिये जा सकते हैं। एक दिद में एक व्यक्तिको एक ही प्रश्न करना चाहिये। मनोरञ्जन तथा अपमान के लिए प्रश्न नही करना चाहिए। १४ सूत्रवाली चक्र में किसी एक सूत्र पर अङ्गुली रखकर- तथा लिखे हुये प्रश्नों में प्रश्न का मिलान करने से ही उत्तर निकालना सर्वसाधारण के लिये अच्छा रहेगा। केवल अङ्गुली स्थापना से प्रश्नोत्तर निकल आयेगा उत्तर सही निकलेगा। यों तो इष्टकाल आदि क्रम से भी उत्तर सही निकलते हैं किन्तु वहाँ इष्टकाल का ज्ञान तथा १४ सूत्रों का ज्ञान होना परमावश्यक है—अन्तिम नियम में केवल प्रश्न करने का नियम तथा अङ्गुली स्थापन का क्रम मालूम करके उत्तर निकालने में उलझन नहीं होगी। उत्तर सभी नियमों से सही निकलेंगे।

× × × ×

श्लोक १२—

अहोरात्रमध्ये घटीनांसदैव—
विभागंविधायाथ सूर्योदयात्तु।
तिथीनान्दिनानान्तथाभादिकानां—
शुभंवाऽऽशुभं शम्भुसूत्रानुसारात्॥

× × × ×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—दिन तथा रात्रि की ६० घटी में तिथि १५-बार ७-नक्षत्र २७-राशि १२-स्वर ५-आदि का भाग देकर विभाग बनाकर-एवम् ६० घटी में १४ सूत्रों का भी भाग देकर-क्रमशः शिवसूत्रानुसार शुभ तथा अशुभ फल तिथि आदि का कहना चाहिये ॥१२॥

यथा—किसी के लिये वार अशुभ है तो शुभ सूत्र के उदय में अशुभ बार में भी शुभ कर्म कर सकता है। इसी प्रकार तिथि आदि में भी समझना चाहिये। मान लीजिये किसी के लिये सोमबार अशुभ है तो सोमबार में शुभ समय कब आयेगा इस ज्ञान के लिये ६० घटी में ७ का भाग दिया तो स्थूल रीति से ८ घटी ३४ पल सोम दिन का उदय रहा इसके बाद १७ घटी ८ पल तक भौमवार का उदय रहेगा। सोम का फल शुभ रहेगा। भौन का फल अशुभ रहेगा। इसी प्रकार १७ घटी ८ पल के बाद के बाद बुधवार का उदय होगा जो शुभ रहेगा। इसी प्रकार पूर्ण अहोरात्र में ७ दिनों का विभाग जानना चाहिये। यही क्रम तिथि आदि में जानना चाहिये। जैसे किसी के लिये पञ्चमी तिथि अशुभ है तो अहोरात्र में १५ का भाग दिया तो एक हिस्सा में ४ घटी हुई पञ्च में प्रथम पञ्चमी का उदय ४ घटी रहेगा। पश्चात् ४ घटी के-८ घटी तक षष्ठी तिथि का उदय रहेंगा। यह शुभ रहेगा इसके पश्चात् १२ घटी तक सप्तमो तिथि का उदय रहेगा। यही क्रम ६० में बना लीजिये। पृष्ठ ५ में लिखे चक्र से स्पष्ट हो जायगा। यही क्रम नक्षत्रों तथा राशि आदि में जानना चाहिये। इतना ध्यान रहे कि यदि दिन का विचार करना हो तो उस दिन का सूत्र देखिये पृष्ठ ५ के चक्र में प्रथम उदय सूर्योदय पर किस सूत्र का है उससे ही ६० घटी में क्रम बनाना चाहिये। यही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम तिथि-नक्षत्र-मास-स्वर आदि में जानना चाहिये। पृष्ठ ५ का चक्र देखने से सब स्पष्ट हो जायगा कि किस दिन किस तिथि आदि में प्रथम उदय किस सूत्र का है। उसका शुभ तथा अशुभ क्या फल होगा।

यहां एक विशेषता जाननी चाहिये कि वार आदि को विभाग के घटी पल के साथ १४ सूत्रों का उदय भी क्रमशः बदलता जायगा। तथा वार-तिथि आदि भी अपने-अपने विभागानुसार बदलती जायगी। जैसे—पञ्चमी तिथि में पञ्चमी तिथि का भोग ४ घटी रहा साथ में 'हयवरट्' सूत्र भी ४ घटी १७ पल रहा पञ्चमी के बाद षष्ठी तिथि ८ घटी तक रहेगी और 'हयवरट' सूत्र के पश्चात् 'लण्' सूत्र भी ८ घटी ३४ पल तक रहेगा यही क्रमवार-राशि नक्षत्र आदि में जानना चाहिये।

अर्थात्-६० घटी में ७ बार-१५ तिथियां २७ नक्षत्र १२ राशि ५ स्वर-१२ मास अदि क्रयशः भोग करेंगे-इसी क्रम से ६० घटी में १४ सूत्र भी भोग करेंगे। भोग क्रम की घटी-पल पृथक-पृथक रहेंगे। आगे भूमि शुभा-शुभ विचार प्रकरण में स्पष्ट लिखी है।

सङ्केत—यह मिलान नहीं मिलाना चाहिये कि दिन तिथि नक्षत्र आदि का एक समय में ही सबका शुभ अशुभ फल समान हो। फल में विषमता हो सकती है अतएव एक-एक का विभागानुसार शुभा-शुभ फल सूत्रों के उदय क्रम से जानना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारांश—यदि किसी भी समय वार-तिथि आदि में किसी एक की अथवा सभी की अनुकूलता न हो तो पूर्वोक्त क्रम से तात्कालिक वार आदि के अनुसार तात्कालिक शुभ शिवसूत्र के उदय में कार्यारम्भ विशेष शुभ रहेगा। इस क्रम से प्रत्येक वार आदि में शिवसूत्र का उदय तत्काल में भिन्न २ रहेगा।

यदि सभी वार आदि में शिवसूत्र की अनुकूलता लेनी है तो ६० घाटी में प्रत्येक शिवसूत्र का उदय ४ घटी १७ पल आदि रहेगा इस क्रम से एक ही समय में सभी में अनुकूलता आ सकती है।

यथा— किसी को सोमवार आदि अशुभ है तो सोमवार में प्रथम ४ घटी १७ पल ऋलृक्, सूत्र का उदय रहा। ८ घटी ३४ पल तक (एओङ) सूत्र का उदय रहा। इसी क्रम से १४ सूत्रों का उदय जानना चाहिये। शुभ सूत्र के उदय में वार तिथि-नक्षत्र राशि आदि सभी शुभ फल देंगे।

(लेखक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० १ प्रश्नपत्रावली

१ अइउण्	२ ऋलृक्	३ एओङ	४ ऐओच्
५ हयवरट्	६ लण्	७ अम्ङणनम्	८ झभञ्
९ घढ़धष्	१० जबगडदश्	११ खफछठथ चटतव्	१२ कपय्
१३ शषसर्	१४ हल्		

सङ्केत—इन १४ सूत्रों में किसी एक सूत्र पर अंगुली रखना चाहिए।

प्रश्न

१ अ—परदेश में गये व्यक्ति के आगमन आदि का फल।
२ आ मुकदमें में क्या होना है इसका निर्णय।
३ इ—नौकरी मिलने आदि का निर्णय।
४ ई—गर्भ में क्या है इसका निर्णय।
५ उ—नष्ट वस्तु मिलने न मिलने आदि का निर्णय।
६ ऊ—रोगी के रोग दूर होने आदि का निर्णय।
७ ऋ—व्यापार में लाभ या नुकसान का निर्णय।
८ ॠ—यात्रा करने में शुभाशुभ का निर्णय।
९ लृ—तबादला होगा या नहीं इसका निर्णय।
१० लॄ*—मन में निश्चित विचार पूर्ण होने का निर्णय
११ ए—आज का दिन मेरा कैसा रहेगा इसका निर्णय।
१२ ऐ—खोया हुआ पशु किस दिशा में है इसका निर्णय।
१३ ओ—वह मनुष्य या स्त्री विश्वासपात्र है या नहीं का निर्णय।
१४ औ—विवाह का प्रश्न।

*लॄ इसको बड़ी लृ समझें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५ ह्‌–साझेदारी के काम में लाभ या नुकसान का निर्णय ।

१६ य–शत्रुओं पर विजय या पराजय का निर्णय ।

१७ व–वह मनुष्य या स्त्री या बच्चा जीवित है या नहीं। इसका निर्णय ।

१८ र–परीक्षा में पास या फेल का निर्णय ।

१९ ल–बेकार मनुष्य का रोजगार लगने का निर्णय ।

२० म–वार्ता सत्य है या मिथ्या का निर्णय ।

२१ ञ–चोरी गई वस्तु का स्थान निर्णय ।

२२ ङ–काम में सफलता मिलेगी या नहीं का निर्णय ।

२३ ण–हार जीत का निर्णय (मल्लयुद्ध अर्थात् कुश्ती में)

२४ न–यह वर्ष कैसा जायगा सुखप्रद या कष्टप्रद ।

२५ झ–जिस व्यक्ति से मिलने जा रहा हूँ वह मिलेगा या नहीं

२६ भ–यह काम करने जा रहा हूँ इसमें क्या होना है लाभ या हानि ।

२७ घ–क्या कभी सन्तान होगी या नहीं का निर्णय ।

२८ ढ़–उस व्यक्ति के पास जाना है कार्य पूर्ण होगा या नहीं का निर्णय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९ ध- कूप खोदने में जल का निर्णय।

३० ज–इस स्थान को छोड़कर अन्य स्थान में जाना कैसा रहेगा।

३१ ब–जेलखाने से छूटेगा या सजा मिलेगी।

३२ ग–इस वस्तु में लाभ होगा या नुकसान।

३३ ड–गल्ले का व्यापार किया जाये या नहीं।

३४ द–वर्षा होगी कि नहीं।

३५ ख–इस वर्ष में तेजी रहेगी या मन्दी।

३६ फ–परदेश में गये हुये का विशेष निर्णय।

३७ छ–ख़ेती करने से लाभ होगा या नहीं।

३८ ठ–भैंस या बैल आदि लेकर काम करने में लाभ या हानि।

३९ थ–किसी व्यक्ति को अपने यहाँ रखने से लाभ या हानि।

४० च–किसी व्यक्ति को रुपया या वस्तु देने में लाभ या हानि

४१ ट–जप-पूजन-अनुष्ठान-व्रत में सफलता के प्रश्न का उत्तर।

४२ त–न्यायकर्ता न्यायी है या अन्यायी।

४३ क–उन्नति (तरक्की आदि) का निर्णय।

४४ प–यह मकान शुभ है या अशुभ इसका निर्णय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५ स-वर्तमान कष्ट से मुक्त (छुटकारा) होने का निर्णय।

४६ ष-सट्टा लाटरी आदि में सफलता का निर्णय।

४७ स-रोग है या प्रेत वाधा आदि का निर्णय।

४८ ह-ऋण (कर्ज) दूर होगा या नहीं

४९ -मूक प्रश्न

सङ्केत-ह-दो हैं एक (हयवरट्) इस सूत्रका। दूसरा (हल्) इस सूत्र का। (हयवरट्) इसका (ह) यह चिन्ह है। (हल्) इसका (ह) यह चिन्ह है।

१ २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) परदेश में गये व्यक्ति का आगमन आदि का निर्णय।

सं०	प्रश्न-सूत्र	फल
१.	अ-अइउण्	=सकुशल शीघ्र आयेगा।
२.	अ-ऋलृक्	=प्रेम में फँसा है आने में विघ्न है।
३.	अ-एओङ्	=रोगयुक्त है आने में विलम्ब है।
४.	अ-ऐऔच्	=कभी भी न आयेगा।
५.	अ-हयवरट्	=कुछ विलम्ब है शीघ्र आगमन होगा।
६.	अ-लण्	=आना कठिन है।
७.	अ-ञमङणनम्	=शीघ्र आने की आशा है।
८.	अ-झभञ्	=कुछ कारण हैं न आने में शीघ्र आयेगा।
९.	अ-घढधष्	=शीघ्र आयेगा।
१०.	अ-जबगडदश्	=आने में विलम्ब है।
११.	अ-खफछठथ-चटतव्	=शीघ्र आयेगा सकुशल।
१२.	अ-कपय्	=वापस आने में सन्देह है।
१३.	अ-शषसर्	=आने में विलम्ब है।
१४.	अ-हल्	=आना कठिन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) मुकदमे में क्या होगा—निर्णय ।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. आ–अइउण्	=उचित न्याय की आशा नहीं (विपरीत जायगा)
२. आ–ऋलृक्	=उचित न्याय न होगा (विपरीत जायगा)
३. आ–एओङ्	=फैसला कर लेना चाहिये आपस में।
४. आ–ऐऔच्	=जय की आशा कम है।
५. आ–हयवरट्	=विजय होने की पूर्ण आशा।
६. आ–लण्	=राजीनामा से विशेष अच्छा रहेगा।
७. आ–ञमङणनम्	=विजय होना निश्चित है।
८. आ–झभञ्	=धोखा होने की सम्भावना है।
९. आ–घढधष्	=विजय होनी है। राजी नामा न करना।
१०. आ–जबगडदश्	=पराजय की सम्भावना है।
११. आ–खफछठथचटतव्	=विजय होने की आशा है।
१२. आ–कपय्	=अन्याय से पराजय की आशा।
१३. आ–शषसर्	=विजय होने की कम आशा।
१४. आ–हल्	=विजय होगी, विघ्न विशेष।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) नौकरी मिलने आदि का निर्णय।

सं०	प्रश्न	फल
१.	इ—अइउण्	=नौकरी मिलने की कम आशा।
२.	इ—ऋलृक्	=खर्च करने से नौकरी मिल जायगी।
३.	इ—एओङ्	=काम नहीं बनेगा।
४.	इ—ऐऔच्	=काम में विघ्न पड़ेगा।
५.	इ—हयवरट्	=किसी की सहायता से काम बन जायगा।
६.	इ—लण्	=विघ्न विशेष है कठिनता से काम बनेगा।
७.	अमङणनम्	=काम बन जायेगा कठिनता से।
८.	इ—झभञ्	=नौकरी अवश्य मिलेगी।
९.	इ—घढ़धष्	=देर से मिलेगी धैर्य धरो।
१०.	इ—जबगड़दश्	=काम नहीं बनेगा।
११.	इ—खफछठथ-चटतव्	=व्यय करो काम बन जायगा।
१२.	कपय्	=दूसरी जगह कोशिश करो यहां नहीं काम बनेगा।
१३.	इ—शषसर्	=शत्रु गण रुकावट डाल रहे हैं।
१४.	इ—हल्	=सिफारिश से काम बन जायगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) गर्भ में क्या है, इसका निर्णय ।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. ई–अइउण्	=कन्या होगी कम आयु वाली ।
२. ई–ऋलृक्	=बालक जन्म किन्तु जीवन में सन्देह ।
३. ई–एओङ्	=कन्या जन्म होगा ।
४. ई–ऐऔच्	=पुत्र जन्म होगा-दीर्घायु ।
५. ई–हयवरट्	=कन्या जन्म लेगी ।
६. ई–लण्	=पुत्र जन्म निश्चय ।
७. ई–ञमङणनम्	=दुर्बल पुत्री जन्म होने की आशा।
८. ई–झभञ्	=पुत्र जन्म की आशा ।
९. ई–घढधष्	=कन्या जन्म की आशा ।
१०. ई–जबगडदश्	=पुत्री जन्म अथवा जोड़ा ।
११. ई–खफछठथ-चटतव्	=कन्या योग-माता को विशेष कष्ट ।
१२. ई–कपय्	=पुत्र जन्म निश्चय ।
१३. ई–शषसर्	=पुत्र जन्म ।
१४. ई–हल्	=पुत्र जन्म होगा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) नष्ट वस्तु मिलने आदि का निर्णय।

सं०	प्रश्न सूत्र	फल
१.	उ–अइउण्	=किसी की सहायता से वस्तु मिले।
२.	उ–ऋलृक्	=वस्तु मिलने की आशा ही किन्तु मिलना नहीं।
३.	उ–एओङ्	=वस्तु मिलना कठिन।
४.	उ–ऐऔच्	=वस्तु नहीं मिलेगी।
५.	उ–हयवरट्	=उद्योग करो आशा है मिलने की।
६.	उ–लण्	=वस्तु मिलने की पूर्ण आशा।
७.	उ–ञमङणनम्	=मिलने की आशा पूर्ण प्रयास कीजिये।
८.	उ–झभञ्	=पता चल जायगा–किन्तु वस्तु मिलना कठिन सा है।
९.	उ–घढधष्	=माल मिलने की आशा कम।
१०.	उ–जबगडदश्	=मिलने की पूर्ण आशा।
११.	उ–खफछठथ चटतव्	=वस्तु नहीं मिलेगी।
१२.	उ–कपय्	=आधा माल नष्ट हो गया है–पता चल जायगा।
१३.	उ–शषसर्	=किसी समय वस्तु मिलने की आशा
१४.	उ–हल्	=नष्ट धन नहीं मिलेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६) रोगी के दूर होने आदि का निर्णय।

सं०	प्रश्न–सूत्र	=	फल
१.	ऊ–अइउण्	=	रोग दूर होगा–नियम से रहिये।
२.	ऊ–ऋलृक्	=	रोग दूर होगा--समय लगेगा।
३.	ऊ–एओङ्	=	रोग दूर होगा-व्यय विशेष होगा।
४.	ऊ–ऐऔच्	=	रोग दूर होने की कम आशा है।
५.	ऊ–हयवरट्	=	अधिक दिन रोग रहेगा।
६.	ऊ–लण्	=	रोग प्रबल है-पूजन पाठ करवाइये।
७.	ऊ–जमङणनम्	=	कठिनता से दूर होगा।
८.	ऊ–झभञ्	=	शीघ्र रोग दूर होगा।
९.	ऊ–घढधष्	=	रोगी नीरोग होगा-वैद्य बदलिये।
१०.	ऊ–जबगडदश्	=	रोग दूर होगा।
११.	ऊ–खफछठथ-चटतव्	=	ग्रह दशा खराब है रोग दूर होगा।
१२.	ऊ–कपय्	=	अवश्य रोग दूर होगा।
१३.	ऊ–शषसर्	=	रोग दूर होना अति कठिन।
१४.	ऊ–हल्	=	रोग अधिक दिन तक रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[७] व्यापार में लाभ या क्षति का निर्णय।

स०	प्रश्न=सूत्र	= फल
१.	ऋ–अइउण्	=लाभ योग अच्छा रहेगा।
२.	ऋ–ऋलृक्	=लाभ न होगा।
३.	ऋ–एओङ्	=लाभ अच्छा होगा।
४.	ऋ–ऐऔच्	=लाभ योग अच्छा है।
५.	ऋ–हयवरट्	=लाभ न होगा।
६.	ऋ–लण्	=लाभ योग अच्छा है।
७.	ऋ–ञमङणनम्	=बचत कम रहेगी।
८.	ऋ–झभञ्	=हानि होने की सम्भावना पूर्ण
९.	ऋ–घढधष्	=लाभ हानि सम रहेगी।
१०.	ऋ–जबगडदश्	=लाभ योग अच्छा रहेगा।
११.	ऋ–खफछठथ-चटतव्	=लाभ योग अच्छा रहेगा।
१२.	ऋ–कपय्	=लाभ योग साधारण।
१३.	ऋ–शषसर्	=लाभ योग अच्छा।
१४.	ऋ–हल्	=लाभ नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain.-Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८) यात्रा करने में शुभाशुभ का निर्णय।

सं०=प्रश्न=सूत्र		= फल
१.	ऋ–अइउण्	=यात्रा शुभ रहेगी।
२.	ऋ–ऋलृक्	=यात्रा शुभ रहेगी व्यय विशेष।
३.	ऋ–एओङ्	=यात्रा शुभ न होगी।
४.	ऋ–ऐऔच	=यात्रा शुभाशुभ रहेगी।
५.	ऋ–हयवरट्	=यात्रा विशेष अशुभ रहेगी।
६.	ऋ–लण्	=लाभ योग अच्छा रहेगा।
७.	ऋ–ञमङणनम्	=यात्रा आश्चर्यमय होगी।
८.	ऋ–झभञ्	=लाभ हानि सम यात्रा में।
९.	ऋ–घढधष्	=यात्रा अशुभ रहेगी।
१०.	ऋ–जबगडदश्	=यात्रा शुभ रहेगी।
११.	ऋ–खफछठथ चटतव्	=यात्रा सम रहेंगी।
१२.	ऋ–कपय्	=यात्रा हानिकारक रहेंगी।
१३.	ऋ–शषसर्	=यात्रा सम रहेंगी।
१४.	ऋ–हल्	=यात्रा हानिप्रद रहेंगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(९) तवादिला होण नहीं इसका निर्णय।

स०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. लृ–अइउण्	=देरी से तबादिला होगा।
२. लृ–ॠलृक्	=तबादिला होगा।
३. लृ–एओङ्	=अभी रुकावट है कुछ समयबाद होगा।
४. लृ–एऔच	=तबादिला नहीं होगा।
५. लृ–हयवरट्	=नहीं होगा।
६. लृ–लण्	=तबादिला होगा।
७. लृ–ञमङणनम्	=तबादिला देर से होगा।
८. लृ–झभञ्	=तबादिला अवश्य होगा।
९. लृ–घढधष्	=तबादिला रुक कर होगा।
१०. लृ–जबगडदश्	=तबादिला देरी से होगा।
११. लृ–खफछठथ	
१२. लृ–कपय्	=तबादिला रुक कर होगा।
१३. लृ–शषसर्	=तबादिला नहीं होगा।
१४. लृ–हल्	=तबादिला देर से होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१०) मन में निश्चित विचार पूर्ण होने का निर्णय।

सं०=प्रश्न=सूत्र		= फल
१.	लृ*-अइउण्	=मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२.	लृ*-ऋलृक्	=विलम्ब से इच्छा पूर्ण होगी।
३.	लृ*-एओङ्	=इच्छा पूर्ति न होगी।
४.	लृ*-ऐऔच्	=विश्वासघात होगा।
५.	लृ*-हयवरट्	=इच्छा पूर्ति होगी।
६.	लृ*-लण्	=इच्छा पूर्ति न होगी।
७.	लृ*-ञमङणनम्	=शत्रुगण काम विगाड़ रहे हैं।
८.	लृ*-झभञ्	=देरी से काम पूर्ण होगा।
९.	लृ*-ढधष्	=सहायता से काम बनेगा।
१०.	लृ*-जबगडदश्	=काम पूर्ण होगा।
११.	लृ*-खफछठथ चटतव्	=विलम्ब से कार्य होगा।
१२.	लृ*-कपय्	=काम न बनेगा।
१३.	लृ*-शषसर्	=विश्वासघात से काम विगड़ेगा।
१४.	लृ*-हल्	=काम बन जायेगा।

*लृ इसको बड़ी लृ समझें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११) आज का दिन मेरा कैसा रहेगा—इसका निर्णय।

सं०—प्रश्न—सूत्र	= फल
१. ए—अइउण्	=आज का दिन चिन्ताप्रद रहेगा
२. ए—ऋलृक्	=अच्छा रहेगा।
३. ए—एओङ्	=अशुभ रहेगा।
४. ए—ऐऔच्	=अच्छा रहेगा।
५. ए—हयवरट्	=अशुभ रहेगा।
६. ए—लण्	=शुभ रहेगा।
७. ए—ञमङणनम्	=विशेष खराब रहेगा।
८. ए—झभञ्	=साधारण रहेगा।
९. ए—घढधष्	=अच्छा दिन रहेगा।
१०. ए—जबगडदश्	=चिन्ताजनक रहेगा।
११. ए—खफछठथ-चटतव्	=अच्छा रहेगा दिन।
१२. ए—कपय्	=अशुभ रहेगा आज दिन।
१३. ए—शषसर्	=अच्छा रहेगा दिन।
१४. ए—हल्	=अशुभ चिन्ताप्रद बीतेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१२) खोया हुआ पशु किस दिशा में है इसका निर्णय।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. ऐं—अइउण्	=उत्तर पश्चिम के कोण में है मिलने की आशा कम
२ ऐं—ऋलृक्	=उत्तर दिशा में मिलेंगा
३. ऐं—एओङ्	=पूर्व में है मिलेंगा।
४. ऐं—ऐऔच्	=उत्तर में गया है मिलने की आशा है।
५. ऐं—हयवरट्	=पूर्व तथा उत्तर के कोण में है कठिन है मिलना
६. ऐं—लण्	=दक्षिण दिशा में मिलेगा
७. ऐं—ञमङणनम्	=पश्चिम गया है मिलने की आशा है
८. ए—झभञ्	=दक्षिण में है नहीं मिलेंगा।
९. ऐं—खढधष्	=पश्चिम में गया है मिलने की आशा है
१०. ऐं—जबगदश्	=उत्तर गया है कम आशा है
११. ऐं—खफछठथ-चटतव्	=उत्तर गया है मिलेगा
१२. ऐं—कपय्	=पूर्व की तरफ गया है मिलेगा।
१३. ए—शषसर्	=उत्तर गया है मिलेगा।
१४. ऐं—हल्	=पूर्वोत्तर में है नहीं मिलेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१३) वह मनुष्य या स्त्री विश्वास पात्र है या नहीं इसका निर्णय।

सं०	प्रश्न	फल
१.	ओ–अइउण्	वह व्यक्ति ईमानदार है।
२.	ओ–ऋलृक्	विश्वास के योग्य है।
३.	ओ–एओङ्	विश्वास के योग्य नहीं है।
४.	ओ–ऐऔच्	विश्वास के योग्य है।
५.	ओ–हयवरट्	विश्वास के योग्य नहीं है।
६.	ओ–लण्	विश्वास के योग्य है।
७.	ओ–ञमङणनम्	विश्वास योग्य है।
८.	ओ–झभञ्	विश्वास योग्य नहीं है।
९.	ओ–घढधष्	विश्वास योग्य नहीं है।
१०.	ओ–जबगडदश्	विश्वास योग्य है।
११.	ओ–खफछठथ-चटतव्	विश्वास पात्र है।
१२.	ओ–कपय्	विश्वास के योग्य नहीं है।
१३.	ओ–शषसर्	विश्वास के योग्य है।
१४.	ओ–हल्	विश्वास योग्य नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१४) विवाह का प्रश्न

सं०	प्रश्न	फल
१.	औ–अइउण्	=विवाह होने में देर है।
२.	औ–ऋलृक्	=किसी की सहायता से विवाह होगा।
३.	औ–एओङ्	=विवाह होगा–देर है।
४.	औ–ऐऔच्	=विवाह होगा देर है।
५.	औ–हयवरट्	=विवाह अच्छा होगा।
६.	औ–लण्	=विलम्ब से विवाह होगा।
७.	औ–ञमङणनम्	=विवाह का फल अशुभ रहेगा।
८.	औ–झभञ्	=विवाह होने की आशा नहीं है।
९.	औ–घढ़धष्	=विवाह होने की पूर्ण आशा।
१०.	औ–जबगडदश्	=विवाह में विघ्न हैं।
११.	और–खफछठथ-चटतव्	=विवाह होगा।
१२.	औ–कपय्	=विवाह परेशानी से होगा।
१३.	औ–शषसर्	=विवाह विलम्ब से होगा।
१४.	औ–हल्	=विवाह शुभ होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१५) साझेदारी के काम में लाभ या नुकसान का निर्णन।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. हं'—अइउण्	=लाभ का योग है।
२. हं'—ऋलृक्	=लाभ होगा किन्तु साझेदारी में झगड़ा होगा।
३. हं'—एओङ्	=नुकसान होगा।
४. हं'—ऐऔच्	=लाभ का योग पूर्ण है।
५. हं'—हयवरट्	=लाभ का योग बनता है।
६. हं'—लण्	=साधारण लाभ होगा।
७. हं'—जमङणनन्	=नुकसान होने की आशा है।
८. हं'—झभञ्	=लाभ का योग बनता है।
९. हं'—घढ़धष्	=हानि का योग बनता है।
१०. हं'—जबगडदश्	=लाभ होगा।
११. हं'—खफछठथ-चटतव्	=लाभ-क्षति सम
१२. हं'—कपय्	=नुकसान का योग।
१३. हं'—शषसर्	=लाभ होगा।
१४. हं'—हल्	=लाभ का योग है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१६) शत्रुओं पर विजय या पराजय का निर्णय ।

सं०	प्रश्न – सूत्र	फल
१.	य–अइउण्	=मुकदमा लड़ने पर जीत होगी।
२.	य–ऋलृक्	=परस्पर मेल करना उचित है।
३.	य–एओङ्	=पराजय होगा।
४.	य–ऐऔच्	=पराजय होगा।
५.	य–हयवरट्	=जीत होगी।
६.	य–लण्	=परेशानी पैदा करेगा।
७.	य–ञमङणनम्	=विजय होगी।
८.	य–झभञ्	=शत्रु कमजोरहोगयाहै विजय होगी।
९.	य–घढधष्	=शत्रु दुष्ट है विजय आशा कम
१०.	य–जबगडदश्	=विजय होगी।
११.	य–खफछठथ-चटतव्	=सुलह होने की आशा है।
१२.	य–कपय्	=शत्रु क्षति पहुँचावेगा।
१३.	य–शषसर्	=हार होने की पूर्ण संभावना।
१४.	य–हल्	=निश्चित जीत होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१७) वह मनुष्य, स्त्री या बच्चा जीवित या नहीं इसका निर्णय।

सं०—प्रश्न—सूत्र	=	फल
१. व—अइउण्	=	जीवित नहीं है।
२. व—ऋऌक्	=	जीवित है। सकुशल
३. व—ऐओङ्	=	जीवन में सन्देह है।
४. व—ऐऔच	=	जीवित है।
५. व—हयवरट्	=	जीवित नहीं है।
६. व—लण्	=	जीवन में सन्देह।
७. व—जमङणनम्	=	जीवित है।
८. व—झभञ्	=	जीवित नहीं है।
९. व—घढधष्	=	जीवित है।
१०. व—जबगडदश्	=	जीवित नहीं है।
११. व—खफछठथ-चटतव्	=	जीवित है।
१२. व—कपय्	=	जीवित है।
१३. व—शषसर्	=	जीवित नहीं।
१४. व—हल्	=	जीवित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१८) परीक्षा में पास या फेल का निर्णय ।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. र–अइउण्	=परीक्षा में पास होने में सन्देह है।
२. र–ऋऌक्	=उत्तीर्ण होने में कम आशा है।
३. र–एओङ्	=अवश्य उत्तीर्ण होना है।
४. र–ऐऔच्	=उत्तीर्ण होना है।
५. र–हयवरट्	=उत्तीर्ण होने का योग है।
६. र–लण्	=उत्तीर्ण होना है।
७. र–ञमङणनम्	=कठिनता से पास होना।
८. र–झभञ्	=अवश्य पास होना है।
९. र–घढधष्	=उत्तीर्ण होने में सन्देह है।
१०. र–जबगडदश्	=उत्तीर्ण होने में सन्देह है।
११. र–खफछठथ-चटतव्	=उत्तीर्ण होने में सन्देह है।
१२. र–कपय्	=उत्तीर्ण होने की आशा है।
१३. र–शषसर्	=उत्तीर्ण होना है।
१४. र–हल्	=उत्तीर्ण होना कठिन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१९) बेकार मनुष्य का रोजगार लगने का निर्णय।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. ल—अइउण्	=शीघ्र रोजगार लगेगा।
२. ल—ऋलृक्	=विशेष सिफारिश से रोजगार लगेगा।
३. ल—एओङ्	=कठिनता है लगने में।
४. ल—एऔच्	=रोजगार देर से लगेगा।
५. ल—हयवरट्	=रोजगार देर से लगेगा।
६. ल—लण्	=विघ्न है रोजगार लगने में।
७. ल—ञमङणनम्	=देर से रोजगार लगेगा।
८. ल—झभञ्	=रोजगार देर से लगेगा।
९. ल—घढधष्	=रोजगार लगने में विघ्न हैं।
१०. ल—जबगडदश्	=शीघ्र लगने की आशा है।
११. ल—खफछठथचटतव्	=कठिनता से लगेगा।
१२. ल—कपय्	=लगने की आशा है।
१३. ल—शषसर्	=रोजगार लगने में विघ्न है।
१४. ल—हल्	=रोजगार लगने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२०) वार्ता सत्य है या मिथ्या का निर्णय ।

सं०=प्रश्न=सूत्र		= फल
१.	म–अइउण्	=वार्ता सत्य है ।
२.	म–ऋलृक्	=वार्ता झूठी है ।
३.	म–एओङ्	=सही वार्ता है ।
४.	म–ऐऔच्	=सही वार्ता नहीं है ।
५.	म–हयवरट्	=वार्ता सत्य है ।
६.	म–लण्	=वार्ता सत्य है ।
७.	म–ञमङणनम्	=वार्ता-सत्यासत्य ।
८.	म–झभञ्	=वार्ता असत्य है ।
९.	म–घढधष्	=वार्ता सही नहीं है ।
१०.	म–जबगडदश्	=वार्ता सही है ।
११.	म–खफछठथ-चटतव्	=वार्ता झूठ है ।
१२.	म–कपय्	=वार्ता सत्य है ।
१३.	म–शषसर्	=वार्ता असत्य है ।
१४.	म–हल्	=वार्ता असत्य है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२१) चोरी गई वस्तु का स्थान निर्णय।

सं०—प्रश्न—सूत्र		= फल
१.	अ—अइउण्	=अपने घर में देखिये।
२.	अ—ऋलृक्	=घर से बाहर चली गयी।
३.	अ—एओङ्	=कहीं चारपाई के पास।
४.	अ—ऐऔच्	=अपनें कहीं पास में है।
५.	अ—हयवरट्	=उपहास्य के रूप में चुराई। तृण, आदि में देखिये।
६.	अ—लण्	=गोबर आदि में है।
७.	अ—ञमङणनम्	=ईंटों में रख दी गई है।
८.	अ—झभञ्	=किसी बर्तन में रक्खी है।
९.	अ—घढधष्	=पृथ्वी में गाड़ दी गई है।
१०.	अ—जबगडदश्	=जल के पास देखिये।
११.	अ—खफछठथ-चटतव्	=ऊपर कहीं छत पर है।
१२.	अ—कपय्	=खेत में जुआर आदि में।
१३.	अ—शषसर्	=छप्पर में देखिये।
१४.	अ—हल्	=राख या भट्टा में है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२२) काम में सफलता मिलेगी या नहीं का निर्णय।

सं०=प्रश्न=सूत्र		=	फल
१.	ङ—अइउण्	=	सफलता कठिन है।
२.	ङ—ऋलृक्	=	निश्चित सफलता होगी।
३.	ङ—एओङ्	=	देर से सफलता मिलेगी।
४.	ङ—ऐंऔच्	=	सफलता मिलेगी
५.	ङ—हयवरट्	=	सफलता की आशा छोड़ो।
६.	ङ—लण्	=	सफलता होगी देर है।
७.	ङ—ञमङणनम्	=	सफलता कठिन है।
८.	ङ—झभञ्	=	सफलता मिलेगी।
९.	ङ—घढ़धष्	=	सफलता मिलेगी।
१०.	ङ—जबगडदश्	=	सफलता न मिलेगी।
११.	ङ—खफछठथ-चटतव्	=	सफलता मिलेंगी।
१२.	ङ—कपय्	=	सफलता मिलेगी।
१३.	ङ—शषसर्	=	सफलता की आशा नहीं।
१४.	ङ—हल्	=	सफलता कठिन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२३)· हार जीत का निर्णय (मल्ल युद्ध में) ।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१· ण–अइउण्	=शत्रु को पछाड़ेंगा ।
२· ण–ऋलृक्	=जीतने का योग है ।
३· ण–एओङ्	=हारने का योग है ।
४· ण–ऐंऔच्	=हारनें का योग है ।
५· ण–हयवरट्	=शत्रु को हरा देंगा ।
६· ण–लण्	=जीतने का योग है ।
७· ण–ञमङणनम्	=चतुरता से लड़ो जीत होगी ।
८· ण–झभञ्	=हारने का भय है ।
९· ण–घढ़धष्	=मत लड़ो झगड़ा होगा ।
१०· ण–जबगडदश्	=जीत होगी ।
११· ण–खफछठथ-चटतव्	=जीत होनें की आशा ।
१२· ण–कपय्	=जीत का योग है ।
१३· ण–शषसर्	=पराजय होगी ।
१४· ण–हल्	=विजय होगी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२४) यह वर्ष कैसा जायगा सुखप्रद या कष्टप्रद ।

सं० — प्रश्न — सूत्र	=	फल
१ न—अइउण्	=	साधारण जायगा ।
२. न—ऋलृक्	=	अच्छा जायगा ।
३. न—एओङ्	=	अशुभ जायेगा विशेष ।
४. न—ऐऔच्	=	यह वर्ष अच्छा जायगा ।
५. न—हयवरट्	=	विशेष अशुभ जायगा ।
६. न—लण्	=	वर्ष साधारण जायगा ।
७. न—ञमङणनम्	=	वर्ष कष्टप्रद रहेगा ।
८. न—झभञ्	=	यह वर्ष अच्छा रहेगा ।
९. न—घढधष्	=	साधारण जायगा ।
१०. न—जबगडदश्	=	यह वर्ष शुभ जायगा ।
११. न—खफछठथ-चटतव्	=	यह वर्ष अशुभ जायगा ।
१२. न—कपय्	=	यह वर्ष शुभ जायगा ।
१३. न—शषसर्	=	यह वर्ष साधारण रहेगा ।
१४. न—हल्	=	वर्ष अच्छा रहेगा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२५) जिस व्यक्ति से मिलने जा रहा हूँ वह मिलेगा या नहीं।

सं० — प्रश्न — सूत्र	= फल
१ झ—अइउण्	=शीघ्र मिलेगा।
२. झ—ऋलृक्	=मिलने की कम आशा।
३. झ—एओङ्	=मिलेगा।
४. झ—ऐऔच्	=शीघ्र मिलेगा।
५. झ—हयवरट्	=मिलने में विलम्ब है अर्थात् नहीं मिलेगा।
६. झ—लण्	=मिलेगा।
७. झ—ञमङणनम्	=मिलेगा देर से।
८. झ—झभञ्	=मिलेगा शीघ्र।
९. झ—घढधष्	=मिलने की आशा कम।
१०. झ—जबगडदश्	=नहीं मिलेगा।
११. झ—खफछठथचटतव्	=शीघ्र मिलेगा।
१२. झ—कपय्	=मिलना नहीं चाहता है।
१३. झ—शषसर्	=शीघ्र मिलेगा।
१४. झ—हल्	=देर से मिलेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२६) यह काम करने जा रहा हूँ क्याहोना है लाभ या नुकसान ।

सं० = प्रश्न--	= फल
१. भ—अइउण्	=इस काम में हानि होगी ।
२. भ—ॠलृक्	=इस काम में लाभ होगा. ।
३. भ—एओङ्	=इस काम में लाभ होगा ।
४. भ—ऐऔच्	=इस काम में क्षति होगा ।
५. भ—हयवरट्	=इस काम में हानि लाभ सम
६. भ—लण्	=हानिकारक यह काम रहेगा ।
७. भ—ञमङणनम्	=इस काम में लाभ होगा ।
८. भ—झभञ्	=यह काम सम रहेंगा ।
९. भ—घढ़धष्	=यह काम लाभप्रद रहेगा ।
१०. भ—जबगडदश्	=यह काम हानिप्रद रहेगा ।
११. भ—खफछठथ-चटतव्	=यह काम लाभप्रद रहेगा ।
१२. भ—कपय्	= काम लाभप्रद रहेगा ।
१३. भ—शषसर्	=यह काम हानिप्रद रहेगा ।
१४. भ—हल्	=इस काम में लाभ रहेगा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२७) क्या कभी सन्तान होगी या नहीं का निर्णय।

सं०	प्रश्न=सूत्र	= फल
१.	घ–अइउण्	=उपाय से सन्तान होगी।
२.	घ–ऋलृक्	=सन्तान होना कठिन है।
३.	घ–एओङ्	=उपाय से सन्तान होगी।
४.	घ–ऐऔच्	=सन्तान योग है साधारण।
५.	घ–हयवरट्	=सन्तान योग है।
६.	घ–लण्	=उपाय से सन्तान योग।
७.	घ–ञमङणनम्	=सन्तान योग कम।
८.	घ–झभञ्	=होकर नष्ट होने का योग।
९.	घ–घढधष्	=सन्तान होना कठिन।
१०.	घ–जबगडदश्	=उपाय से सन्तान योग।
११.	घ–खफछठथचटतव्	=सन्तान योग है।
१२.	घ–कपय्	=सन्तान होगी व्रत से।
१३.	घ–शषसर्	=उपाय करो शीघ्र होगी।
१४.	घ–हल्	=सन्तान उपाय से भी नहीं।

नोट :—सन्तान से पुत्र सन्तान जानना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२८) जिस व्यक्ति के पास जाना है वहाँ कार्य होगा या नहीं का निर्णय

सं० = प्रश्न - सूत्र	= फल
१. ढ़–अइउण्	= कार्य पूर्ण होगा।
२. ढ़–ऋलृक्	= कार्य पूर्ण न होगा।
३. ढ़–एओङ्	= कार्य पूर्ण होने की कम आशा।
४. ढ़–ऐऔच्	= कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।
५. ढ़–हयवरट्	= कार्य पूर्ण हो जायेगा।
६. ढ़–लण्	= काम होने में सन्देह है।
७. ढ़–ञमङणनम्	= कार्य पूर्ण हो जायगा।
८. ढ़–झभञ्	= कार्य पूर्ण नहीं होगा।
९. ढ़–घढधष्	= कार्य बन जायगा।
१०. ढ़–जबगडदश्	= कार्य पूर्ण होगा।
११. ढ़–खफछठथ-चटतव्	= कार्य पूर्ण नहीं होगा।
१२. ढ़–कपय्	= कार्य पूर्ण होने की आशा।
१३. ढ़–शषसर्	= काम पूर्ण होना कठिन।
१४. ढ़–हल्	= कार्य पूर्ण हो जायगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२९) कूप खोदने में जल का निर्णय।

सं० = प्रश्न = सूत्र		= फल
१.	ध-अइउण्	=शीघ्र जल निकलेगा।
२.	ध-ऋलृक्	=मिश्रित जल निकलेगा।
३.	ध-एओङ्	=अच्छा जल निकलेगा।
४.	ध-ऐऔच्	=जल निकलने में कठिनता पड़ेगी।
५.	ध-हयवरट्	=शीघ्र अमृत सम जल निकलेगा।
६.	ध-लण्	=शीघ्र जल निकलेगा।
७.	ध-ञमङणनम्	=जल कम निकलेगा।
८.	ध-झभञ्	=विलम्ब से जल निकलेगा।
९.	ध-घढधष्	=क्षार जल कम निकलेगा।
१०.	ध-जबगडदश्	=शीघ्र जल निकलेगा।
११.	ध-खफछठथ-चटतव्	=मिला हुआ जल निकलेगा।
१२.	ध-कपय्	=अच्छा जल निकलेगा।
१३.	ध-शषसर्	=जल का अभाव रहेगा।
१४.	ध-हल्	=अच्छा जल निकलेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३०) इस स्थान को छोड़कर अन्य स्थान में जाना कैसा रहेगा।

सं०	प्रश्न—सूत्र	= फल
१.	ज—अइउण्	=अन्य स्थान से जाना शुभ।
२.	ज—ऋलृक्	=अन्य स्थान में जाना शुभ।
३.	ज—एओङ्	=इसी स्थान में लाभ होगा।
४.	ज—ऐऔच्	=कहीं नहीं जाना चाहिये।
५.	ज—हयवरट्	=अन्य स्थान में न जाइये।
६.	ज—लण्	=अन्य स्थान में लाभ होगा।
७.	ज—ञमङणनम्	=यहीं रहो अन्य स्थान में न जाइये।
८.	ज—झभञ्	=दूसरे स्थान में लाभ होगा।
९.	ज—घढधष्	=यहीं लाभ होगा कहीं न जाओ।
१०.	ज—जबगडदश्	=दूसरी जगह जाओ।
११.	ज—खफछठथ-चटतव्	=दूसरी जगह जाओ।
१२.	ज—कपय्	=यहीं लाभ रहेगा।
१३.	ज—शषसर्	=यहीं लाभ होगा।
१४.	ज—हल्	=यहीं लाभ होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३१) जेलखाने से छूटेगा या सजा मिलेगी

सं०—प्रश्न—सूत्र	= फल
१. ब—अइउण्	=छूटने का योग है।
२. ब—ऋलृक्	=छूट जायगा कठिनता से।
३. ब—एओङ्	=छूट जायगा निश्चित।
४. ब—ऐऔच्	=कठिनता से छूटेगा।
५. ब—हयवरट्	=शीघ्र छूट जायगा।
६. ब—लण्	=छूटने में अति कठिनता।
७. ब—ञमङणनम्	=प्रयत्न से अवश्य छूटेगा।
८. ब—झभञ्	=कदापि न छूटेगा।
९. ब—घढधष्	=शीघ्र छूटने वाला है।
१०. ब—जबगडदश्	=प्रयत्न कीजिये छूटेगा।
११. ब—खफछठथ-चटतव्	=प्रयत्न कीजिये छूटेगा।
१२. ब—कपय्	=अवश्य छूटेगा बिलम्ब से।
१३. ब—शषसर्	=छूटनें में कठिनता है।
१४. ब—हल्	=शीघ्र छूटेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३२) इस वस्तु में लाभ होगा या नुकसान:

सं०=प्रश्न=सूत्र		= फल
१.	ग–अइउण्	=इस वस्तु में नुकसान होगा।
२.	ग–ऋलृक्	=लाभ होगा निश्चित।
३.	ग–एओङ्	=लाभ का योग उत्तम।
४.	ग–ऐऔच्	=साधारण लाभ होगा।
५.	ग–हयवरट्	=अच्छा लाभ होगा।
६.	ग–लण्	=लाभ होगा साधारण।
७.	ग–ञमङणनम्	=नुकसान होगा।
८.	ग–झभञ्	=नुकसान होगा।
९.	ग–घढधष्	=सावधान रहिये नुकसान होगा
१०.	ग–जबगडदश्	=साधारण लाभ।
११.	ग–खफछठथ-चटतव्	=अच्छा लाभ।
१२.	ग–कपय्	=बहुत कम लाभ।
१३.	ग–शषसर्	=नुकसान का योग।
१४.	ग–हल्	=अच्छा लाभ होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३३) गल्ले का व्यापार किया जाये या नहीं ।

सं०=प्रश्न=सूत्र		= फल
१.	ड–अइउण्	=व्यापार म कीजिये ।
२.	ड–ऋलृक्	=व्यापार में लाभ होगा ।
३.	ड–एओङ्	=व्यापार बेचने का कीजिये ।
४.	ड–ऐऔच्	=गल्ला खरीदिये लाभ होगा ।
५.	ड–हयवरट्	=विशेष लाभ रहेगा ।
६.	ड–लण्	=नुकसान रहेगा ।
७.	ड–ञमङणनम्	=नुकसान रहेगा ।
८.	ड–झभञ्	=नुकसान रहेगा ।
९.	ड–घढधष्	=लाभ होगा साधारण ।
१०.	ड–जबगडदश्	=साधारण लाभ होगा ।
११.	ड–खफछठथ-चटतव्	=अच्छा लाभ होगा ।
१२.	ड–कपय्	=बेचना अच्छा है लाभ योग है ।
१३.	ड–शषसर्	=लाभ योग अच्छा है ।
१४.	ड–हल्	=साधारण लाभ योग ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३४) क्या वर्षा होगी या नहीं ।

सं०—प्रश्न—सूत्र	= फल
१. द—अइउण्	=पूर्ण वर्षा का योग है ।
२. द—ऋलृक्	=पूर्ण वर्षा का योग है ।
३. द—एओङ्	=वर्षा का योग अच्छा नही ।
४. द—ऐऔच्	=वर्षा का योग मध्यम ।
५. द—हयवरट्	=वर्षा का योग अच्छा है ।
६. द—लण्	=वर्षा का योग अच्छा है ।
७. द—ञमङणनम्	=वर्षा का योग अच्छा नहीं ।
८. द—झभञ्	=वर्षा का योग साधारण ।
९. द—घढधष्	=वर्षा का योग अच्छा नहीं ।
१०. द—जबगडदश्	=वर्षा का योग मध्यम ।
११. द—खफछठथ-चटतव्	=वर्षा का योग सम ।
१२. द—कपय्	=वर्षा का योग अच्छा ।
१३. द—शषसर्	=वर्षा का योग सम ।
१४. द—हल्	=वर्षा का योग अच्छा नहीं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३५) इस वर्ष में तेजी रहेगी या मन्दी।

सं०	प्रश्न—सूत्र	= फल
१.	ख—अइउण्	=लाभ होगा। तेजी रहेगी।
२.	ख—ऋलृक्	=मन्दी रहेगी।
३.	ख—एओङ्	=तेजी रहेगी।
४.	ख—ऐऔच्	=तेजी मन्दी सम।
५.	ख—हयवरट्	=मन्दी रहेगी।
६.	ख—लण्	=मन्दी रहेगी।
७.	ख—ञमङणनम्	=तेजी रहेगी।
८.	ख—झभञ्	=तेजी मन्दी सम।
९.	ख—घढधष्	=तेजी मन्दी सम।
१०.	ख—जबगडदश्	=तेजी अच्छी रहेगी।
११.	ख—खफछठथ-चटतव्	=तेजी रहेगी।
१२.	ख—कपय्	=तेजी मन्दी सम।
१३.	ख—शषसर्	=तेजी रहेगी।
१४.	ख—हल्	=तेजी मन्दी सम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३६) परदेश में गये व्यक्ति का विशेष निर्णय।

सं०	प्रश्न-सूत्र	= फल
१.	फ–अइउण्	=अभी परदेश में ही है।
२.	फ–ऋलृक्	=आने का विचार कर रहा है।
३.	फ–एओङ्	=चलकर आधे मार्ग में है।
४.	फ–ऐऔच्	=चल दिया है आ रहा है।
५.	फ–हयवरट्	=चलकर वापस लौट गया।
६.	फ–लण्	=चला नहीं है बीमार है।
७	फ–ञमङणनम्	=उसके मरण का सन्देह है।
८.	फ–झभञ्	=अभी चला नहीं है।
९.	फ–घढधष्	=चलने वाला है।
१०.	फ–जबगडदश्	=आ रहा है पास में है।
११.	फ–खफछठथ-चटतव्	=आ रहा है मार्ग में है।
१२.	फ–कपय्	=चलकर लौट गया।
१३.	फ–शषसर्	=बीमार है।
१४.	फ–हल्	=आयेगा नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३७) खेती करने से लाभ होगा या नहीं।

सं०	प्रश्न—सूत्र	=	फल
१.	छ—अइउण्	=	खेती में लाभ होगा।
२.	छ—ऋलृक्	=	खेती में नुकसान होगा।
३.	छ—एओङ्	=	खेती में लाभ कम होगा।
४.	छ—ऐऔच्	=	खेती में लाभ होगा।
५.	छ—हयवरट्	=	लाभ हानि सम रहेगी।
६.	छ—लण्	=	लाभ योग ।
७.	छ—ञमङणनम्	=	साधारण लाभ खेती में।
८.	छ—झभञ्	=	हानि होगी खेती में।
९.	छ—घढधष्	=	खेती में लाभ न होगा।
१०.	छ—जबगडदश्	=	खेती में अच्छा लाभ।
११.	छ—खफछठथ-चटतव्	=	खेती में बचत नहीं होगी।
१२.	छ—कपय्	=	खेती में बचत न होगी।
१३.	छ—शषसर्	=	खेती में लाभ होगा।
१४.	छ—हल्	=	खेती में हानि लाभ सम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३८) भैंस या बैल आदि लेकर काम करने में लाभ या हानि ।

सं० = प्रश्न = सूत्र		= फल
१.	ठ—अइउण्	=पशु विषय में हानि लाभ सम।
२.	ठ—ऋलृक्	=नुकसान होगा ।
३.	ठ—एओङ्	=हानि होगी—पशुओं का काम न करो ।
४.	ठ—एऔच्	=लाभ होगा ।
५.	ठ—हयवरट्	=नुकसान होगा ।
६.	ठ—लण्	=नुकसान होगा ।
७.	ठ—ञमङणनम्	=हानि लाभ बराबर ।
८.	ठ—झभञ्	=हानि लाभ सम ।
९.	ठ—घढधष्	=लाभ होगा ।
१०.	ठ—जबगडदश्	=हानि होगी ।
११.	ठ—खफछठथ चटतव्	=हानि लाभ बराबर ।
१२.	ठ—कपय्	=हानि लाभ सम ।
१३.	ठ—शषसर्	=लाभ होगा ।
१४.	ठ—हल्	=लाभ साधारण ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३९) किसी व्यक्ति को अपने यहाँ रखने से लाभ या हानि।

स०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. थ—अइउण्	=रखने में हानि होगी।
२. थ—ऋलृक्	=रखने में लाभ होगा।
३. थ—एओङ्	=लाभ होगा रखने में।
४. थ—ऐऔच्	=नुकसान करेगा।
५. थ—हयवरट्	=लाभ पहुँचायेगा।
६. थ-लण्	=नुकसान करेगा।
७. थ—ञमङणनम्	=लाभ पहुँचायेगा।
८. थ—झभञ्	=लाभ पहुँचायेगा।
९. थ—घढधष्	=नुकसान कुछ करेगा।
१०. थ—जबगडदश्	=पूर्ण नुकसान करेगा।
११. थ—खफछठथ-चटतव्	=लाभ पहुँचायेगा।
१२. थ—कपय्	=साधारण लाभ करेगा।
१३. थ—शषसर्	=नुकसान करेगा।
१४. थ—हल्	=लाभ पहुँचायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४०) किसी व्यक्ति को रुपया देने में लाभ या हानि ।

सं० = प्रश्न = सूत्र	= फल
१. च—अइउण्	=हानि होगी कुछ न दीजिये ।
२. च—ऋलृक्	=हानि होगी-देना नहीं ।
३. च—एओङ्	=हानि लाभ साधारण ।
४. च—ऐऔच्	=लाभ होगा-वस्तु दे सकते हो ।
५. च—हयवरट्	=कदापि न दीजिये-कुछ भी ।
६. च—लण्	=हानि लाभ-बराबर ।
७. च—ञमङणनम्	=लाभ रहेगा-कुछ भी दे दो ।
८. च—झभञ्	=कुछ भी न देना ।
९. च—घढधश्	=नुकसान रहेगा ।
१०. च—जबगडदश्	=परिणाम खराब होगा ।
११. च—खफछठथ-चटतव्	=कोई लाभ योग नहीं है ।
१२. च—कपय्	=हानि लाभ सम रहेगा ।
१३. च—शषसर्	=लाभ रहेगा दे सकते हो ।
१४. च—हल्	=कदापि कुछ भी न देना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४१) अनुष्ठान व्रत में सफलता का प्रश्न-हल ।

सं०=प्रश्न=सूत्र		= फल
१.	ट—अइउण्	=सफलता मिलेगी किन्तु कष्ट विशेष होगा ।
२.	ट—ऋलृक्	=सफलता नहीं मिलेगी ।
३.	ट—एओङ्	=विलम्ब से सफलता मिलेगी ।
४.	ट—ऐऔच्	=आरम्भ मत करो-सफल न होंगे ।
५.	ट—हयवरट्	=काम कठिन है डटें रहो ।
६.	ट—लण्	=सफलता में कठिनता है ।
७.	ट—ञमङणनम्	=सफलता कठिन है ।
८.	ट—झभञ्	=सफलता मिलेगी ।
९.	ट—घढधष्	=कष्ट विशेष पड़ेगा किन्तु बाद में सफलता ।
१०.	ट—जबगडदश्	=सफलता दूर है ।
११.	ट—खफछठथ-चटतव्	=सफलता मिलेगी ।
१२.	ट—कपय्	=नहीं मिलेगी सफलता ।
१३.	ट—शषसर्	=सफलता मिलना कठिन ।
१४.	ट—हल्	=विशेष कष्ट से सफलता का योग ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४२) न्यायकर्ता न्यायी है या अन्यायी ।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. त–अइउण्	=हाकिम न्याय करेगा ।
२. त–ऋलृक्	=न्याय करने में सङ्कोच कर रहा है ।
३. त–एओङ्	=न्याय करेगा ।
४. त–ऐऔच्	=न्याय होगा ।
५. त–हयवरट्	=न्याय करने में विचार बदल रहे हैं ।
६. त–लण्	=अन्याय करेगा ।
७. त–ञमङणनम्	=न्याय होगा ।
८. त–झभञ्	=अन्याय करेगा ।
९. त–घढधष्	=हाकिम नाराज है ।
१०. त–जबगडदश्	=अन्याय होगा ।
११. त–खफछठथ-चटतव्	=न्याय होगा ।
१२. त–कपय्	=न्याय होगा ।
१३. त–शषसर्	=न्याय होगा ।
१४. त–हल्	=अप्रसन्न है न्याय कर्ता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४३) उन्नति (तरक्की आदि) का निर्णय।

सं=प्र०=सूत्र	=	फल
१. क—अइउण्	=	तरक्की देर से होगी।
२. क—ऋलृक्	=	अभी आशा न करो।
३. क—एओङ्	=	होगी अभी देर है।
४. क—ऐऔच्	=	तरक्की होगी।
५. क—हयवरट्	=	तरक्की में विघ्न है।
६. क—लण्	=	विलम्ब है।
७. क—ञमङणनम्	=	आशा नहीं है अभी।
८. क—झभञ्	=	तरक्की होगी।
९. क—घढधष्	=	पूर्ण योग है।
१०. क—जबगडदश्	=	कुछ ही बिलम्ब है।
११. क—खफछठथ्-चटतव्	=	इस वर्ष न होगी।
१२. क—कपय्	=	कम आशा है।
१३. क—शषसर्	=	शीघ्र होगी।
१४. क—हल्	=	योग आरहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४४) यह गृह (मकान) शुभ है या अशुभ इसका निर्णय ।

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. प–अइउण्	=यह मकान अशुभ है ।
२. प–ऋलृक्	=शुभ है ।
३. प–एओङ्	=शुभ है सदा कल्याण रहेगा ।
४. प–ऐऔच्	=शुभ है प्रति विषय में ।
५. प–हयवरट्	=कोई दोष नहीं है ।
६. प–लण्	=चोरो आदि का भय है । =(अशुभ है) ।
७. प–ञमङणनम्	=अशुभ रहेगा । प्रेत बाधा आदि दोष है ।
८. प–झभञ्	=शुभ है ।
९. प–घढधष्	=अशुभ है ।
१०. प–जबगडदश्	=अशुभ है ।
११. प–खफछठथ-चटतव्	=साधारण है । (शुभाशुभ)
१२. प–कपय्	=शुभ है ।
१३. प–शषसर्	=विशेष शुभ है ।
१४. प–हल्	=अशुभ है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४५) वर्तमान कष्ट से मुक्ति (छुटकारा) होने का निर्णय ।

सं०=प्रश्न=सूत्र		= फल
१.	श–अइउण्	=कठिनता से छुटकारा होगा ।
२.	श–ऋलृक्	=उपाय कीजिये छुटकारा होगा।
३.	श–एओङ्	=उपाय से छुटकारा होगा ।
४.	श–ऐऔच्	=छुटकारा होना असंभव ।
५.	श–हयवरट्	=छुटकारा होगा ।
६.	श–लण्	=अति कठिन है ।
७.	श–ञमङणनम्	=कठिन है ।
८.	श–झभञ्	=विलम्ब से छुटकारा होगा ।
९.	श–घढधष्	=असंभव है छुटकारा ।
१०.	श–जबगडदश्	=उपाय से छुटकारा होगा।
११.	श–खफछठथ-चटतव्	=छुटकारा होगा ।
१२.	श–कपय्	=अति कठिन है ।
१३.	श–शषसर्	=कठिनता से ।
१४.	श–हल्	=असंभव है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४६) सट्टा लाटरी आदि में सफलता निर्णय।

सं०—प्र०—सूत्र	=	फल
१.	ष—अइउण्	=कामना पूर्ण होगी देर से।
२.	ष—ऋलृक्	=कठिनता है।
३.	ष—एओङ्	=पूर्ण न होगी सफलता
४.	ष—ऐऔच्	=आशा है।
५.	ष—हयवरट्	=आशा है।
६.	ष—लण्	=देर है सफलता मिलेगी।
७.	ष—ञमङणनम्	=नहीं मिलेगी।
८.	ष—झभञ्	=अति कठिन है।
९.	ष—घढधष्	=आशा है।
१०.	ष—जबगडदश्	=होने की आशा है।
११.	ष—खफछठथ-चटतव्	=होगी देर से।
१२.	ष—कपय्	=होगी।
१३.	ष—शषसर्	=होगी देर से।
१४.	ष—हल्	=असंभव है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४७) रोग है या प्रेत बाधा आदि का निर्णय।

सं०	प्रश्न—सूत्र	= फल
१.	स—अइउण्	=शारीरिक व्याधि है।
२.	स—ऋलृक्	=रोग है।
३.	स—एओङ्	=प्रेत बाधा है।
४.	स—ऐऔच्	=किसी ने कुछ करवाया है। (अभिचार)
५.	स—हयवरट्	=ग्रहारिष्ट है।
६.	स—लण्	=ग्रहारिष्ट हैं।
७.	स—ञमङणनम्	=शारीरिक कष्ट है।
८.	स—झभञ्	=प्रेत बाधा है।
९.	स—घढधष्	=ब्रह्म दोष है।
१०.	स—जबगडदश्	=शारीरिक रोग हैं।
११.	स—खफछठथ-—चटतव्	=शारीरिक रोग है।
१२.	स—कपय्	=किसी ने कुछ करवाया है।
१३.	स—शषसर्	=गुप्त रोग कठिन है।
१४.	स—हल्	=शारीरिक रोग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४८) ऋण (कर्ज) दूर होगा या नहीं का निर्णय।

सं०=प्र०=सूत्र		= फल
१.	ह¹–अइउण्	=ऋण दूर होगा देर से।
२.	ह¹–ऋलृक्	=विलम्ब है।
३.	ह¹–एओङ्	=दूर होगा।
४.	ह¹–ऐऔच्	=विलम्ब से होगा।
५.	ह¹–हयवरट्	=दूर होने में कठिनता है।
६.	ह¹–लण्	=दूर होगा।
७.	ह¹–ञमङणनम्	=दूर होगा शीघ्र।
८.	ह¹–झभञ्	=दूर होगा देर है।
९.	ह¹–घढधष्	=दूर होगा देर से।
१०.	ह¹–जबगडदश्	=कठिनता से दूर होगा।
११.	ह¹–खफछठथ-चटतव्	=अति कठिनता है दूर होने में।
१२.	ह¹–कपय्	=दूर होगा।
१३.	ह¹–शषसर्	=असंभव है।
१४.	ह¹–हल्	=दूर होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) ।। विशेष आवश्यक सङ्केत ।।

वहुत से प्रश्न ऐसे हैं कि इन प्रश्नों में प्रकाशित नहीं हैं–उन प्रश्नों के उत्तर निकालने के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये-इन प्रकाशित प्रश्नों में जिस प्रश्न से मिलता हुआ प्रश्न हो उसी प्रश्न के उत्तर क्रम से उत्तर जान लेना चाहिये।

अथवा–प्रश्न नं० १०–ॡ के प्रश्न के उत्तर को उत्तर मानकर निश्चय जान लेना चाहिये। अथवा-प्रश्न नं० २२-ङ के प्रश्न के उत्तर से उत्तर समझ लेना चाहिये।

(२) आगे लिखे मूक प्रश्नों (मानसिक प्रश्नों के) के उत्तर निकालने के लिये यह स्मरण रखना परमावश्यक है कि-जो श्रद्धा पूर्वक मूक प्रश्न करना चाहता है वह सर्व प्रथम भगवान् शिवजी का ध्यान करके फल पुष्प आदि हाथ में लेकर पृष्ठ सङ्ख्या ८० के अनुसार-फल-पुष्प-नदी या किसी देवता का नाम अपने मुख से कहे और चौदह सूत्रों में से एक सूत्र कहे या अङ्गुली रक्खे उत्तर देने वाले को चाहिये कि पुष्प फल नदी या जिस देवता का नाम पृच्छक ने कहा है–उसका प्रथम अक्षर जो हो उससे और चौदह सूत्रों में से जो सूत्र कहा है उन दोनों के पूर्ववत् मिलान मिलाकर उत्तर कह देना चाहिये।

यथा–प्रातः काल में किसी पृच्छक ने मानसिक प्रश्नोत्तर जानने के लिये "गुलाब" यह पुष्प कहा है। और चौदह सूत्रों में ५वां सूत्र "हयवरट्" यह सूत्र कहा है या अङ्गुली रक्खी है तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यहां "गुलाब" में "ग" यह प्रथम अक्षर है। 'ए-र-झ-ग-थ-ष' इन अक्षरों में (ग) यह अक्षर है। अतः (ग) और हयवरट् का मिलान मिलाने से लाभ विषयिक प्रश्न है। इसका उत्तर क्या होगा यह निकालने के लिये प्रश्नावली नं० २ में (ग) के सामने "सुशोभन फल रहेगा" यह लिखा है। एवम् और भी प्रश्नोत्तर निकाले जा सकते हैं।

प्रातःकाल में—पुष्प का नाम, मध्याह्न में-फल का नाम, सायङ्काल में—देवता का नाम और रात्रि में—नदी का नाम लेना चाहिये।

पृष्ठ सं० ८१ का श्लोक नं० २

श्लोक :— प्रातःकालेप्रश्नमेकनिगद्यान्-
मध्याह्नेवानामनित्यम्फलस्य ।
सायङ्काले देवतानामपुण्यं
रात्रौनद्यानामचोच्चारयेद्वै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानसिक प्रश्न (मूक प्रश्न) निकालना।
(अ-ऐ-ञ-ध-द-ट)

सं०=प्रश्न=सूत्र		= प्रश्न
१.	अइउण्	=जमीन या जीव सम्बन्धी प्रश्न।
२.	ऋलृक्	=कार्य सफलता का प्रश्न।
३.	एओङ्	=रोजगार या नौकरी या नष्ट वस्तु का प्रश्न।
४.	ऐऔच्	=लाभ हानि का प्रश्न।
५.	हयवरट्	=किसी व्यक्ति विषय का प्रश्न।
६.	लण्	=रोजगार या हानि लाभ का प्रश्न।
७.	ञमङणनम्	=परिवार सम्बन्धी प्रश्न।
८.	झभञ्	=यात्रा या रोग सम्बन्धी प्रश्न।
९.	घढ़धष्	=जमीन या जायदाद सम्बन्धी प्रश्न।
१०.	जबगडदश्	=धातु या द्रव्य सम्वन्धी प्रश्न।
११.	खफछठथचटतव्	=सामयिक स्थिति का प्रश्न।
१२.	कपय्	=किसी व्यक्ति विषय का प्रश्न।
१३.	शषसर्	=जायदाद या द्रव्य सम्बन्धी प्रश्न।
१४.	हल्	=यात्रा या पारिवाकि प्रश्न।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(इ-औ-म-ढ़-ख-त)

स०=प्रश्न=सूत्र	=	फल
१.	अइउण्	=जीव सम्बन्धी चिन्ता है ।
२.	ऋलृक्	=धातु सम्बन्धी चिन्ता है ।
३.	एओङ्	=मूल सम्बन्धी चिन्ता है।
४.	एऔच्	=जीव सम्बन्धी चिन्ता है ।
५.	हयवरट्	=धातु सम्बन्धी चिन्ता ।
६.	लण्	=धातु सम्बन्धी चिन्ता ।
७.	ञमङणनम्	=जीव चिन्ता जानना ।
८.	झभञ्	=धातु चिन्ता जानना ।
९.	घढ़धष्	=मूल सम्बन्धी चिन्ता है ।
१०.	जबगडदश्	=धातु चिन्ता जानना ।
११.	खफछठथ-चटतव्	=जीव चिन्ता जानना ।
१२.	कपय्	=मूल चिन्ता जानना ।
१३.	शषसर्	=जीव चिन्ता जानना।
१४.	हल्	=जीव-धातु-चिन्ता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(उ-हॅ-ङ-ध-फ-क)

सं०	प्रश्न—सूत्र	= फल
१.	अइउण्	=जायदाद सम्बन्धी प्रश्न।
२.	ऋऌक्	=किसी परिवार सम्बन्धी प्रश्न।
३.	एओङ्	=लाभ हानि-या विवाह सम्बन्धी।
४.	ऐऔच्	=धातु सम्बन्धी प्रश्न।
५.	हयवरट्	=मुकदमा या सुख दुख का प्रश्न।
६.	लण्	=किसी व्यक्ति के विषय का प्रश्न।
७.	ञमङणनम्	=पद या परिवार का प्रश्न।
८.	झभञ्	=यात्रा सम्बन्धी प्रश्न।
९.	घढधष्	= द्रव्य सम्बन्धी प्रश्न।
१०.	जबगडदश्	=किसी वस्तु सम्बन्धी प्रश्न।
११.	खफछठथ-चटतव्	=शारीरिक प्रश्न या वस्तु प्रश्न।
१२.	कपय्	=जीव सम्बन्धी प्रश्न।
१३.	शषसर्	=नष्ट प्रश्न धातु सम्बन्धी।
१४.	हल्	=यात्रा सम्बन्धो प्रश्न।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ऋ-य-ण-ज-छ-प)

सं०	प्रश्न-सूत्र	= फल
१.	अइउण्	=जायदाद या द्रव्य सम्बन्धी प्रश्न ।
२.	ऋलृक्	=किसी व्यक्ति के विषय का प्रश्न ।
३.	एओङ्	=जमीन सम्बन्धी प्रश्न ।
४.	ऐऔच्	=किसी व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न ।
५.	हयवरट्	=जीव सम्बन्धी प्रश्न ।
६.	लण्	=मृकदमा या विरोध का प्रश्न ।
७.	ञमङणनम्	=धन सम्बन्धी प्रश्न ।
८.	झभञ्	=नौकरी जायदाद का प्रश्न ।
९.	घढधष्	=यात्रा या गुप्त कार्य का प्रश्न ।
१०.	जबगडदश्	=जमीन सम्बन्धी प्रश्न ।
११.	खफछठथ-चटतव्	=धातु सम्बन्धी प्रश्न ।
१२.	कपय्	=परिवार सम्बन्धी प्रश्न ।
१३.	शषसर्	=वस्तु सम्बन्धी प्रश्न ।
१४.	हल्	=परिवार सम्बन्धी प्रश्न ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(लृ-व-न-ब-ठ-श)

सं० = प्रश्न =	= फल
१. अइउण्	=किसी व्यक्ति के विषय का प्रश्न।
२. ऋलृक्	=धन के विषय का प्रश्न।
३. एओङ्	=परिवार या पद के विषय का।
४. ऐऔच्	=किसी वस्तु सम्बन्धी प्रश्न।
५. हयवरट	=जमीन या पशु सम्बन्धी प्रश्न।
६. लण्	=विद्या या नौकरी का प्रश्न।
७. ञमङणनम्	=किसी संस्था का प्रश्न।
८. झभञ्	=वस्तु विषय का प्रश्न।
९. घढ़धष्	=लाभ हानि सम्बन्धी प्रश्न।
१०. जबगडदश्	=किसी व्यक्ति से धातु सम्बन्धी प्रश्न।
११. खफछठथ-चटतव्	=परिवार सम्बन्धी प्रश्न।
१२ कपय्	=व्यापार या जायदाद सम्बन्धी प्रश्न।
१३. शषसर्	=पशु या खेत सम्बन्धी प्रश्न।
१४. हल्	=विवाह या जमीन सम्बन्धी प्रश्न।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ए-र-झ-ग-थ-ष)

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. अइउण्	=किसी व्यक्ति के सबंध का प्रश्न ।
२. ऋलृक्	=यात्रा या उत्सव का प्रश्न
३. एओङ्	=स्थान सम्बन्धी प्रश्न ।
४. ऐऔच्	=मार्ग सम्बन्धित प्रश्न ।
५. हयवरट्	=लाभ विषयिक प्रश्न ।
६. लण्	=व्यक्ति सम्बन्धित प्रश्न ।
७. ञमङणनम्	=वस्तु के विषयिक प्रश्न ।
८. झभञ्	= कटुम्ब सम्बन्धी प्रश्न ।
९. घढधष्	=लाभ हानि का प्रश्न ।
१०. जबगडदश्	=अधिकार या जायदाद का प्रश्न ।
११. खफछठथ-चटतव्	=स्थान सम्बन्धित प्रश्न या व्यक्ति से सम्बन्धित प्रश्न ।
१२. कपय्	=लाभ हानि का प्रश्न ।
१३. शषसर्	=स्वास्थ्य या रोग सम्बन्धी प्रश्न ।
१४. हल्	=परिवार का प्रश्न ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ओ-ल-भ-ड-च-स-ह')

सं०=प्रश्न=सूत्र	= फल
१. अइउण्	=जमीन या पशु सम्बन्धी प्रश्न।
२. ऋलृक्	=परिवार सम्बन्धी प्रश्न।
३. एओङ्	=धन सम्बन्धी प्रश्न या रोग सम्बन्धी प्रश्न।
४. ऐऔच्	=कुटुम्ब का प्रश्न।
५. हयवरट्	=विवाह या लिखा पढ़ी सम्बन्धो प्रश्न।
६. लण्	=समाचार या किसी व्यक्ति का प्रश्न।
७. ञमङणनम्	=किसी वस्तु सम्बन्धी प्रश्न।
८. झभञ्	=विशेष चिन्ता युक्त प्रश्न वस्तु विषय का।
९. घढधष्	=जायदाद का प्रश्न।
१०. जबगडदश्	=वस्तु विषय का प्रश्न।
११. खफछठथचटतव्	=द्रव्य सम्बन्धी प्रश्न।
१२. कपय्	=परिवार या यात्रा सम्बन्धी प्रश्न।
१३. शषसर्	=किसी व्यक्ति के विषय का प्रश्न।
१४. हल्	=शुभ संदेश के विषय का प्रश्न। व्यक्ति सम्बन्धी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० २ प्रश्नावली

सङ्केत–इन ४३ कोठों में से एक कोठे के अक्षर पर अंगुली रखकर आगे लिखा प्रश्नोत्तर देखना चाहिये।

अ	इ	उ	ऋ	ऌ	ए	ओ
ऐ	औ	ह'	य	व	र	ल
ञ	म	ङ	ण	न	झ	भ
घ	ढ़	ध	ज	ब	ग	ड
द	ख	फ	छ	ठ	थ	च
ट	त	क	प	श	ष	स
✿	✿	✿	✿	✿	✿	✿ / ह'

सङ्केत–साधारण शुभाशुभ निर्णय के लिये ऊपर लिखे चक्र में किसी एक कोष्ठक के अक्षर पर अङ्गुला रख कर शुभ तथा अशुभ का निर्णय कर लेना चाहिये। जैसे किसी ने प्रश्न किया कि मैं जिस कार्य के लिये जा रहा हूँ उसका क्या परिणाम होगा। ऊपर कोष्टक (क) में अङ्गुली रख दी है तो क का प्रश्नोत्तर निकला कि प्रश्नोत्तर शुभ है अर्थात् कार्य सिद्ध हो जायगा। प्रश्नोत्तर दूसरे तरफ लिखे हैं।

सङ्केत–प्रश्नावली नं० २ के अक्षर माहेश्वर १४ सूत्रों के क्रमशः ४३ अक्षर हैं। प्रति अक्षर के प्रश्नानुसार फल (प्रश्नोत्तर) आगे लिखे हैं। अ से आ। इ से ई। उ से ऊ। ऋ से ॠ। ऌ से ॡ। का ज्ञान कर लेना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्नाली २

अनेक प्रश्नों के प्रश्न के उत्तर

अ	उत्तम प्रश्नोत्तर है।	ढ़	अति अशुभ फल।
इ	उत्तम प्रश्नोत्तर है।	घ	शुभ प्रश्नोत्तर रहेगा।
उ	अशुभ प्रश्नोत्तर है।	ज	विशेष अशुभ प्रश्नोत्तर रहेगा
ऋ	शुभ प्रश्नोत्तर है।	ब	विशेष अशुभ फल रहगा।
लृ	अति शुभ प्रश्नोत्तर।	ग	सुशोभन फल रहेगा।
ए	प्रश्नोत्तर शुभ रहेगा।	ड	अशुभ प्रश्नोत्तर रहेगा।
ओ	शुभ प्रश्नोत्तर	द	शुभ फल प्रश्न का होगा।
ऐ	विशेष अशुभ प्र०	ख	अशुभ फल प्रश्न का रहेगा।
औ	विशेष अशुभ प्र० उ	फ	शुभ फल रहेगा।
ह	सुन्दर प्रश्नोत्तर	छ	शुभ फल प्रश्न का होगा।
य	फल प्राप्ति का योग उत्तम है	ठ	शुभ फल प्रश्न का रहेगा।
व	अशुभ फल रहेगा	थ	अशुभ फल रहेगा प्रश्न का।
र	अशुभ प्रश्नोत्तर	च	प्रश्नोत्तर शुभ रहेगा।
ल	शुभ प्रश्नोत्तर	ट	प्रश्नोत्तर शुभ रहेगा।
ञ	अशुभ प्रश्नोत्तर	त	प्रश्नोत्तर शुभ रहेगा।
म	अशुभ प्रश्नोत्तर	क	प्रश्नोत्तर शुभ रहेगा।
ङ	अशुभ प्रश्नोत्तर	प	विशेष अशुभ फल प्रश्न का रहेगा।
ण	शुभ प्रश्नोत्तर		
न	शुभ प्रश्नोत्तर	श	शुभ फल रहेगा प्रश्न का।
क्ष	शुभ प्रश्नोत्तर	ष	अशुभ फल रहेगा प्रश्न का।
म	शुभ प्रश्नोत्तर	स	शुभ फल रहेगा प्रश्म का।
घ	विशेष सुन्दर प्र० उ	ह	शुभ फल रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवसूत्रों के आधार से पिण्ड बना कर अनेक प्रकार के प्रश्नों के उत्तर निकालने की अन्य विधि

श्लोक कुसुमफलयुनोनाशान्तचेताउदारः—
पशुपतिपदपद्मंसादरन्तत्रनत्वा ॥
सपदिबुधसमक्षे प्रश्नमेकंहिकुर्याद्—
विगतकपटजालःश्रद्धयाशुद्धकाले ॥१॥

अर्थ मनुष्य-पुष्प-फल आदि लेकर शान्त चित्त तथा उदार मन से भगवान् शङ्कर जी के चरण कमलों को आदर पूर्वक नमस्कार करके कपट आदि छोड़कर श्रद्धापूर्वक शुद्ध समय में दैवज्ञ (ज्यौतिषी) के समक्ष केवल एक ही प्रश्न करे ॥१॥

श्लोक प्रात कालेपुष्पमेकन्निगद्यान्—
मध्याह्नेवानामनित्यम्फलस्य ॥
सायङ्कालेदेवतानामपुण्यं—
रात्रौनद्यानामचोच्चारयेद्वै ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ पृच्छक (प्रश्न करने वाला) प्रातः काल में किसी एक पुष्प का नाम कहे। माध्याह्न में किसी एक फल का नाम कहे। सायङ्काल में किसी एक देवता का नाम तथा रात्रि में किसी एक नदी का नाम कहे। उसी नाम से पिण्ड बनाना चाहिये ॥२॥

॥ पिण्ड बनाने की विधि ॥

श्लोक नामस्वरव्यञ्जनयोगकेत्र—
सूत्रस्यसङ्ख्यामपिसूत्रमध्ये ॥
नामाक्षरस्यापिचयोगमेकङ्—
कृत्वोद्धतंव्यञ्जनसङ्ख्ययाच ॥३॥

अर्थ जो भी पृच्छक ने नाम (पुष्प या फल या देवनाम या नदीनाम) अपने मुख से कहा है—उस नाम के व्यञ्जन तथा स्वर जितने भी हों उनका योगकर लेवे-तथा नाम का प्रथमाक्षर जिस सूत्र में हो उस सूत्र की सङ्ख्या (अइउण्) से गिनकर जोड़ देना चाहिये और नाम का प्रथमाक्षर उस जोड़े हुये सूत्र में किस सङ्ख्या का है—उस अक्षर की सङ्ख्या भी जोड़ देनी चाहिये। इस प्रकार-स्वरो की सङ्ख्या तथा व्यञ्जनों की सङ्ख्या एवं अइउण् से वर्तमान सूत्र सङ्ख्या तक जो सङ्ख्या हो वह सङ्ख्या और सूत्र में अक्षर सङ्ख्या—इन चारों के योग को पिण्ड समझना चाहिये। इसी पिण्ड में व्यञ्जन सङ्ख्या का भाग देने से विविध प्रश्नोत्तर निकल आवेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। पिण्ड बनाने की विधि सरल हिन्दी भाषा में उदाहरण सहित ।।

पिण्ड बनाने में सावधानी रखनी चाहिये अन्यथा व्यजन तथा स्वर आदि जोड़ने में अशुद्धन हो जावे। शुद्ध पिण्ड बनने पर प्रश्नोत्तर सही निकलेंगे।

(१) पृच्छक के मुख से निकले पुष्प आदि के नाम को किसी कागज या तखती पर लिखकर पिण्ड बनाने में विशेष सुविधा रहेगी।

(२) पुष्प आदि के जो भी नाम हो उनके स्वर केवल (अइउण्) (ऋलृक) (एओङ) (ऐऔच्) इनचार सूत्रों में ही देखना चाहिये।

जंसे—सायङ्काल के प्रश्न में किसी ने (उमेश) देवता का नाम मुख से निकाला है तो इस नाम की स्वर सङ्ख्यानिकालनी है तो प्रथम अक्षर 'उ' यह अइउण्, इस प्रथम सूत्र का अक्षर है अतः 'उ' इसकी स्वर सङ्ख्या १ ही मानी जायगी। उमेश, में (मे) इस में (ए) यह स्वर (एओङ) इस तीसरे सूत्र में मिलने के कारण (ए) की स्वर सङ्ख्या सूत्र के ही सङ्ख्यागणनानुसार (३) ही रहेगी। यह क्रम सर्वत्र ऐसा ही रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) व्यञ्जन संख्या में सभी व्यञ्जन लियेजांयगे।

१+३+१=५

यथा–(उमेश) यहां म्+श्=२ व्यजन हैं। उ+ए+अ=३ ये स्वर हैं। यदि शङ्कर, नाम होता तो–श्+म्–क्+र्=४ व्यञ्जन अ+अ+अ=३ ये स्वर हैं। इस प्रकार व्यञ्जन तथा स्वरों का योग (उमेश) इस नाम में सूत्रानुसार–उ की+१। ए की+३ अ की+१=५ सङ्ख्या हुई। व्यञ्जन सङ्ख्या दो हुई।

(४) स्वर तथा व्यंजन सङ्ख्या का ज्ञान होने के बाद यह देखिये कि पुष्प आदि के नाम में प्रथम अक्षर १४ (चौदह) सूत्रों में किस सूत्र में आता है तथा जिस सूत्र में आता है तो उस सूत्र के अक्षर क्रम में–पहिला या दूसरा या तीसरा आदि में किससे मिलता है––यह ज्ञान होने पर––उस सूत्र की सङ्ख्या तथा सूत्र में अक्षर क्रम की सङ्ख्या––नोट कर लेना चाहिये–जैसे (उमेश) इस नाम में (उ) यह प्रथम अक्षर–अइउण् इस प्रथम सूत्र में तीसरे अक्षर से मिलता है तो–१ सङ्ख्या सूत्रानुसार हुई। ३ सङ्ख्या अक्षर क्रम से हुई। इन सबका योग करने से पिण्ड बन जायगा – उसी पिण्ड से विविध प्रश्नोत्तर निकाले जा सकते हैं।

१+३+१=५

यथा–(उमेश) इस नाम में उ+ए+अ=५ स्वर सङ्ख्या। म्+श्=२ व्यञ्जन सङ्ख्या। १ सूत्र सङ्ख्या। ३ अक्षर सङ्ख्या हुई इन सबका योग––५+२+१+३=११ हुई यही पिण्ड हुआ यही क्रम सर्वत्र जानना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) पिण्ड में प्रश्नानुसार—कहीं केवल व्यंजनों के योग का ही भाग दिया जायगा जैसे परस्पर विरोध में जय विजय के निर्णय में। (राम-रावण) (कृष्ण-कंस) आदि में। कहीं २-३-४-५ आदि का भाग दिया जायगा शेष से प्रश्नोत्तर निकलेंगे। इन सबका विवेचन आगे विस्तार पूर्वक किया जायगा।

सङ्केत—व्यंजनों के योग यदि ९ से अधिक होंगे तो वहां ९ आदि के स्थान में ६ से ही भाग देकर उत्तर निकल आयेगा—आगे सब वर्णन किया जायेगा।

चोदह सूत्र—अइउण्। (१) ॠऌक। (२) एओङ। (३) एऔच्। (४) हयवरट् (५) लण्। (६) ञमङणनम्। (७) झभञ्। (८) घढधष्। (९) जबगडदश्। (१०) खफछठथचटतव्। (११) कपय्। (१२) शषसर। (१३) हल्। (१४)

॥ जय पराजय निर्णय ॥

श्लोक शेषेणसर्वत्रफलवदेत्तु—
शेषोऽधिकस्तस्य पराजयःस्यात् ॥
शेषोऽल्पको यस्य स वै विजेता—
विज्ञाय चैवं विदुषा प्रवाच्यम्॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—दो या अधिक व्यक्तियों के जय पराजय निर्णय करने के लिये—उन व्यक्तियों के नामों से पूर्व नियमानुसार पृथक पृथक पिण्ड बनाकर प्रति व्यक्ति के पिण्ड में प्रति व्यक्ति के व्यञ्जन योग सङ्ख्या का भाग देने से जिसका शेष अधिक होगा वह पराजित होगा जिसका शेष न्यून होगा वह विजयी होगा। इस प्रकार दैवज्ञ जानकर के जय पराजय का निर्णय करे ॥४॥

श्लोक शेषौसमौयत्रययोस्तदातु-
नन्दाधिकेव्यञ्जनयोगकेवा ।
षड्भिस्तदातत्रविभज्यपिण्डं-
शेषेणसर्वत्रफलन्तथैव ॥५॥

अर्थ—यदि दोनों के शेष समहों अथवा व्यञ्जनों का योग एक का या दोनों का ९ नव से अधिक हो तो वहां व्यञ्जन के योग का भाग न देकर (६) छं का भाग देकर पूर्ववत् निर्णय करना चाहिये।

॥ दो व्यक्तियों में जय पराजय का निर्णय ॥

व्यक्ति के नाम का प्रथमाक्षर जिस सूत्र में हो उसकी सूत्र सङ्ख्या तथा व्यक्ति के नाम के आदि अक्षर को सूत्र में स्थिति के क्रमानुसार सङ्ख्या का योग एवं नाम की व्यञ्जन सङ्ख्या तथा महेश्वर सूत्रानुसार स्वर सङ्ख्या का योग करके उस योग में नाम के व्यञ्जन सङ्ख्या का भाग देकर जो शेष बचे उससे जय विजय का निर्णय दो व्यक्तियों का करना चाहिये 'योधिकः सः पराजितः"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व लिखित नियमानुसार दोनों व्यक्तियों के शेष से निर्णय कीजिये जिसका शेष अधिक होगा वह पराजित होगा। चौदह सूत्रों का पूर्ण ज्ञान परमावश्यक है।

(१) उदाहरण

यथा-राम और रावण के मध्य में जय पराजय का निर्णय करना है तो राम=में (र) हयवरट् इस पाँचवें सूत्र का चौथा अक्षर है अतः ५ सङ्ख्या सूत्रानुसार हुई ४ सङ्ख्या अक्षर क्रम से हुई। व्यञ्जन संख्या—र् म्=यह दो हुई। आ+अ यह स्वर संख्या हुई। स्वर संख्या (अइउण्) इस सूत्रानुसार दोनों (अ+आ) की प्रथम सूत्र में दोनों अक्षर होने से १+१ ही ली जायगी। र् म् ये व्यञ्जन होने से योग में दो का भाग देने से उत्तर स्पष्ट हो जायगा।

१ १ १ १

राम=र् म्। अ आ=१+१+१+१=४ व्यञ्जन तथा स्वर सङ्ख्या हुई। ५ सङ्ख्या (हयवरट्) में नाम का प्रथम अक्षर (र) होंने से ली गई। ४ सङ्ख्या हयवरट् इस पाँचवें सुत्र का चौथा अक्षर है (र) यह नाम का प्रथमाक्षर है। कुल र् १ म् १+अ—१ आ १ पांचवें सूत्र में नाम का प्रथमाक्षर होने से ५ सूत्र सङ्ख्या। ५ वें सूत्र का चौथा अक्षर होने से अक्षर सङ्ख्या ४ हुई कुल योग १३ हुआ। इसमें व्यञ्जन सङ्ख्या २ का भाग दिया तो शेष १ बचा इसे याद रखना चाहिए। दूसरा व्यक्ति रावण है—रावण में (रा) प्रथमाक्षर हयवरट् सूत्र का ही राम की तरह है—५ सङ्ख्या सूत्रानुसार हुई तथा ४ सङ्ख्या अक्षर क्रम से हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र् व् ण् ये तीन व्यञ्जन हैं इसकी सङ्ख्या ३ हुई। आ+अ+अ ये तीन स्वर हूये—तीनों स्वर (अइउण्) प्रथम सूत्र में अक्षर मिलने से १+१+१ तीनों स्वरों की सङ्ख्या ३ हुई।

५+४+३+३ कुल योग १५ हुआ रावण में व्यञ्जन सङ्ख्या ३ होने से भाग दिया तो शेष शुन्य हुआ इसे तीन मानना चाहिये अतः राम में १ शेष और रावण में तीन शेष होने से अधिक है (योऽधिकः सःपराजितः), इस नियम के अनुसार (रावण) पराजित हुआ शून्य रह गया। इसी क्रम से सर्वत्र जानना चाहिये।

(२) उदाहरण

।। कृष्ण और कंस में जय पराजय का निर्णय ।।

यथा—कृष्ण=क् ष् ण् ३ व्यञ्जन सङ्ख्या हुई। (ऋ) ऋलृक सूत्र का स्वर है अतः दूसरा सुत्र होने से २ सङ्ख्या हुई (जिस सूत्र का स्वर होगा उस सूत्र की सङ्ख्या ही स्वर सङ्ख्या जानना चाहिये) ण में अ की पूर्व नियमानुसार १ सङ्ख्या हुई। कुल योय=क् ष् ण्= ३ व्यञ्जन सङ्ख्या। २ ऋ स्वर की संख्या। १ ण में अ की संख्या। ६ सङ्ख्या स्वर तथा व्यञ्जनों की हुई।

कृष्ण में (क) अक्षर (कपय्) इस बारहवें सूत्र में प्रथम अक्षर होने से १२ सूत्रानुसार सङ्ख्या हुई तथा सूत्र में (क) यह प्रथमाक्षर होने से १ सङ्ख्या अक्षर क्रम से हुई। ६ सङ्ख्या स्वर तथा व्यञ्जनों की हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३ सङ्ख्या सूत्र तथा सूत्रानुसार अक्षर की हुई। १३+६=१९ हुये यहाँ व्यञ्जन सङ्ख्या ३ का भाग दिया तो १ शेष बचा इसे स्मरण रखना चाहिये।

कंस–क् न् स्+अ अ=५ स्वर व्यञ्जन योग। १२ सूत्र सङ्ख्या १ अक्षर सङ्ख्या=५+१२+१=१८ इसमें व्यञ्जन सङ्ख्या ३ का भाग दिया तो शून्य अर्थात् ३ शेष बचा फल उसका अशुभ रहा।

(३) उदाहरण

।। भीम और भगदन्त में जय पराजय का विचार ।।

व्य० स्व० स्व० सू० अं०

भीम=२+१+ १ + ८+२ क्रमशः व्यञ्जन–स्वर–सूत्र–सूत्राक्षर। योग १४ में व्यञ्जन २ का भाग दिया तो शेष शून्य अर्थात् २ रहा। भगवन्त से जय तथा विजय देखना है।

भगवन्त=भ्+ग्+द् न् त्=५+४ स्वर। ८ वां सूत्र। सूत्र का दूसरा अक्षर है। २+५+४+८+२=१९ कुल योग हुआ। व्यञ्जन सङ्ख्या ५ का भाग दिया शेष ४ बचा (योधिकः सः पराजितः) इसके अनुसार भबवन्त का फल अशुभ रहा।

(४) उदाहरण

।। भीम और जरासन्ध में जय पराजय विचार ।।

भीम=२ शेष देखिये नं० ३ में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जरासन्ध=ज्+र्+स्+न्+ध=५ व्यञ्जन योग। अ+आ+अ+अ=योग ४ स्वरों का। नाम का प्रथमाक्षर (जबगडदश्) इस दसवें सूत्र में होने से १० सङ्ख्या सूत्र की। ज सूत्र में प्रथमाक्षर होने से अक्षर सङ्ख्या ली। योग २० हुआ। व्यंजन सङ्ख्या ५ का भाग दिया तो शून्य अर्थात् ५ बचे। अधिक होने से पराजित हुये भगवन्त।

(५) उदाहरण

॥ राम-कुम्भकरण में जय पराजय निर्णय ॥

राम=राम का शेष १। नं० १ में देखिये।

कुम्भकरण = क् म् भ् क् र् ण् = ६ व्यञ्जन योग। उ अ अ अ अ=५ स्वर योग। १२वां सूत्र सङ्ख्या (कपय्) की। १ संख्या नाम के प्रथमाक्षर की सूत्र में। ६+५+१२+१=२४ व्यञ्जन संख्या ६ से भाग दिया तो शेष शून्य या ६ जानिये अधिक होने से पराजित हुआ।

(६) उदाहरण

॥ कर्ण और अर्जुन में विचार ॥

अर्जुन=र्+ज्+न्+अ+उ+अ=६ व्यञ्जन तथा स्वर योग। सूत्र सङ्ख्या १। सूत्र में नामाक्षर सङ्ख्या अतएव ६+१+१=८ योग। व्यञ्जन तथा स्वरों के योग में। व्यञ्जन ३ का भाग देने से २ शेष रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्ण : क्+र्+ण्+अ+अ=५ व्यञ्जन स्वर योग। सूत्र सङ्ख्या १२। नाम का प्रथम अक्षर सूत्र में प्रथम ही है अतः १ सङ्ख्या हुई। ५+१२+१=१८ योग में व्यञ्जन सङ्ख्या ३ का भाग दिया तो शेष शून्य अर्थात ३ बचे। अतः अधिक होने पर पराजित हुआ।

(७) उदाहरण

।। अर्जुन जयद्रथ में जयपराजय का विचार ।।

अर्जुन का शेष २ है नं० ६ में देखिये।

जयद्रथ=ज्+य्+द्+र्+थ्=५ व्यञ्जन योग। अ+अ+अ+अ=४ स्वर योग। सूत्र सङ्ख्या १० दशवें सूत्र में नाम का प्रथम अक्षर प्रथम होने से अक्षर सङ्ख्या १। ५+४+१=२० कुल योग। व्यञ्जन सङ्ख्या ५ का भाग दिया तो शेष शून्य अर्थात् ५ अधिक होने से जयद्रथ को अशुभ फल प्राप्त हुआ।

(८) उदाहरण

।। कृष्ण और पूतना में निर्णय ।।

कृष्ण का शेष १ है। पूतना=प् त् न्=३ व्यञ्जन। उ+अ+आ=३ स्वर नाम का प्रथम अक्षर (पू) यह (कपय्) इस बारहवें सूत्र में द्वितीय अक्षर पड़ता है अतएव १२+२=१४+३ व्यञ्जन सङ्ख्या+३ स्वर सङ्ख्या कुल योग २० हुआ। व्यञ्जन सङ्ख्या ३ से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाग देने से शेष २ रहे कृष्ण में शेष १ था। पूतना में शेष अधिक होने में अशुभ फल रहा। इसी प्रकार दो या तीन या अधिक में निर्णय करने के लिये यही क्रम रहेगा जिसके शेष कम होंगे वही विजयी होगा।

इतना ध्यान रहे कि यदि व्यञ्जन ९ हों या उससे अधिक हों तो वहाँ ६ से भाग देना चाहिये। यदि शेष दोनों विरोधियों के सम हों तो वही व्यञ्जन सङ्ख्या के योग से भाग न देकर दोनों पिण्डों में ६ का भाग देकर शेष से निर्णय करना चाहिये।

अनेक प्रकार के प्रश्नोत्तर निकालने के लिये–पृच्छक के मुख से–पुष्प का नाम या नदी का नाम या देव आदि का नाम कहला करके पूर्व लिखित विधि से पिण्ड बना लेना चाहिये–बाद में प्रश्नानुसाद भाग देकर फलादेश कहना चाहिये।

जैसे किसी ने पूछा इस स्त्री के गर्भ है या नहीं। मुख से (कमल) का पुष्प कहा तो पिण्ड बनाया पूर्ववत्।

कमल=क् म् ल्=तीन व्यञ्जन हुये। अ+अ+अ=३ स्वर हुये कमल का प्रथम अक्षर (कपय्) इस बारहवें सूत्र में पहिला अक्षर होने से अक्षर सङ्ख्या १ हुई। ३ व्यञ्जन। ३ स्वर। १२ वां सूत्र। पहिला अक्षर। योग १+३+३+१२+१९ इसमें २ का भाग दिया शेष एक बचा—उत्तर निकला गर्भ है। १९ यही पिण्ड है। इसी पिण्ड से बिविध प्रकार के उत्तर निकाले जा सकते हैं। पृथक् पृथक् अक्षरों का भाग देना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) यथा–गर्भ है या नहीं–इसके निर्णय में २ का भाग देना चाहिये १ में गर्भ है–२ में नहीं है यह उत्तर होगा।

(२) गर्भ में क्या हैं पुत्र या कन्या–इसके लिये ४ का भाग देना चाहिये। १-३ शेष में पुत्र। २-४ शेष में कन्या होगी।

(३) जय या विजय के प्रश्न में–३ से भाग देना चाहिये १ शेष से विजय। दो शेष से आपस में मेल। ३ शेष से पराजय होगा।

(४) मूक प्रश्न में–पिण्ड में ३ का भाग देना चाहिये–१ से जीव सम्बन्धी प्रश्न। २ शेष से धातु सम्बन्धी प्रश्न। ३ शेष से मूल वृक्षादि सम्वन्धी प्रश्न कहना चाहिये।

इनमें भी विशेष सूक्ष्म चिन्ता जानने के लिये जीव में कौन सा जीव जानने के लिये–पिण्ड में ३ का भाग देने से–१ से द्विपाद्। २ से चतुष्पाद्। ३ से सर्पादि विषय की चिन्ता कहना चाहिये।

पिण्ड में दो का भाग देने से–१ शेष से पुरुष सम्बन्धी चिन्ता। २ शेष से स्त्री सम्बन्धी चिन्ता कहना चाहिये।

इसी प्रकार धातु सम्बन्धी चिन्ता का ज्ञान–विशेष रूप से जानने के लिये ८ का भाग देना चाहिये। १ से सुवर्ण २ से चांदी। ३ से ताम्र। ४ से कांसा। ५ से पीतल। ६ से लोहा। ७ से शीशा। ८ से रांगा जानना जाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) कार्य कब तक पूर्ण होगा। इसके निर्णय के लिये पिण्ड में २ का भाग देना चाहिए—प्रथम तो यह देखना है कि कार्य होगा या नहीं—२ के भाग से यदि १ शेष रहे तो कार्य होगा २ रहे तो नहीं होगा। यदि होगा तो कब होगा इसके लिये ३ का भाग देना चाहिये १ शेष से शीघ्र+२ शेष से मास पर्यन्त में। ३ शेष से वर्ष में।

(६) कोई प्रश्न करे कि हमारा समय कैसा है। तो पुष्प आदि नाम के क्रम से पिण्ड बना लेना चाहिये—बाद में पूछने वाले नाम के अक्षरों का भी पिण्ड बना लेना चाहिये पूर्ववत्। प्रश्नाक्षरों के पिण्ढ का तथा नामाक्षरों के पिण्ड को जोड़कर ३ का भाग देकर—एक शेष इसका फल उत्तम। दो शेष से साधारण ३ शेष से अशुभ कहना चाहिये।

(७) परदेशी के आगमन आदि का निर्णय।

पूर्व विधि से बने हुये पिण्ड में परदेशो के नाम के अक्षरों का भी पिड बनाकर दोनों पिण्डों को जोड़कर ७ का भाग देकर—१ शेष से अभी आशा नहीं है चलने की। २ शेष से चल दिया। ३ शेष से आ रहा है। ४ शेष से बिल्कुल पास में हैं आने वाला है। ५ शेष से आने में सन्देह। ६ शेष से कष्ट में है। ७ शेष से परेशान होकर आने में विचार कर रहा है।

सङ्केत—सर्व प्रथम चौदह सूत्रों द्वारा विविध प्रकार के प्रश्नों केउत्तर अ+आ+इ+ई इत्यादि अक्षरों के मेलापक से दिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गये हैं—उन सब के उत्तर पिण्ड द्वारा भी दिये जा सकते हैं अर्थात् पिण्ड में १४ का भाग देकर शेष से सूत्र सङ्ख्यानुसार उत्तर देना चाहिये।

यथा–किसी ने प्रश्न किया कि गर्भ में क्या है–गुलाब का पुष्प पृच्छक ने कहा तो इसका पिण्ड बनाया–ग् ल् व्=३। उ+अ+अ+=३। दशवां सूत्र–तीसरा अक्षर। १०+३=१३ +३+३=१९ कुल योग पिण्ड हुआ इसमें १४ का भाग दिया तो शेष ५ बचा। यह (ई) अक्षर का प्रश्न है–५वां सूत्र में देखिये लिखा है कन्या जन्म लेगी इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर निकाले जा सकते हैं। शेष जो बचें उनसे वहीं लिखे उत्तर सूत्रों की सङ्ख्यानुसार ही कह देना चाहिये।

।। चुनाव में जय विजय का निर्णय ।।

चुनाव (एलेक्शन) में कौन विजयी होगा इसके निर्णय में इतना जानना परमावश्यक है कि पर्चा जिस नाम से दाखिल किया गया है वह नाम क्या है गणित करने में बिल्कुल अक्षरशः वही नाम होना चाहिये एक भी अक्षर अधिक या न्यून नहीं होना चाहिये अर्थात् पर्चा दाखिल करने का नाम कुछ हो गणित करने में कुछ हो तो उत्तर सत्य नहीं निकलेगा। क्योंकि "श्रीशिव सूत्र रहस्य" के आधार से पिण्ड बनाने में–स्वर+व्यञ्जन के सम्बन्ध से ही पिण्ड बनाने का विधान है अतः पूर्ण वही नाम होना चाहिये गणित करने में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह भी ध्यान रहे कि ४ से अधिक लड़नेवालों का भी निश्चय कुछ सन्देहजनक रहता है। दो लड़नेवालों में तो उत्तर बिल्कुल सत्य निकलेगा।

पूर्व कथित नियमानुसार पिण्ड बनाकर—वर्तमान ईशवीयसन् के अङ्कों का योग (१९७४) है। १+९+७+४=२१ हुआ (इसमें भी २+१=३ हुआ) पिण्ड में जोड़कर तथा शिव सूत्र सङ्ख्या १४ जोड़कर—व्यञ्जनों के योग का भाग देकर शेष से जय विजय का निर्णय हो जायगा।

इतनी यहां विशेषता रहेगी कि कलियुग में वर्तमान सन् के अङ्कों का योग करके व्यञ्जनों का भाग देने से जिसके शेष अधिक बचेंगे वही विजयी होगा क्रमशः न्यूनाधिक के अनुसार अनेकों में भी विजय निश्चित कर देना चाहिये। इसी क्रम से मतों की भी न्यूनाधिकता ज्ञात हो सकती है।

वाद विवाद (एलेक्शन) आदि निर्णय में विशेषता।

श्लोक :— युक्तां सतीं वा विदधीतपिण्ड—
ईश्वब्दसङ्ख्यां शिवसूत्रसङ्ख्याम्।
स्वैःस्वैःस्थितै र्व्यञ्जनसङ्घकैश्च—
ब्रूयाद्विभज्याशुफलंसुधीरः ॥ १ ॥
शेषोऽधिकोयस्यजनस्यनूनं
भवेद्विजेताभुवनेसएव।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यनिष्ठैस्तु महर्षिसङ्घै–
र्लोकोपकाराय समीरितंहि ।। २ ।।

× × × ×

अर्थ–पूर्व रीति से निर्मित पिण्ड में क्रमशः वर्तमान ईशवीयसन् सङ्ख्या तथा शिवसूत्रसङ्ख्या (१४) जोड़कर उसमें अपने अपने व्यञ्जनों के योग का भाग देकर धैर्यतापूर्वक फल कहे ।।१।। अधिक शेषवाला विजयी तथा न्यून शेषवाला पराजित होगा । आचार्यवान् महर्षियों ने लोकोपकार के लिये ऐसा कहा है ।।२

अन्य युगों में जिसके शेष न्यून हों वह विजयी होता है किन्तु कलियुग में अधिक शेषवाला विजयी होता है ।

यथा–किसी का नाम–रामसिंह है तो इसका पूर्व नियमानुसार पिण्ड बनाया– र्+म+स्+न्+ह=५ व्यञ्जन हुये आ+अ+इ +अ=४ स्वर हुये । ५वां सूत्र । ४ चौथा सूत्र का अक्षर । कुल योग ५+४+५+४=१८ हुआ । व्यञ्जन योग ५ स्मरण रखना चाहिये इसी का भाग दिया जायगा । वर्तमान १९७४ है तो १+९+७+४=२१ योग हुआ । २+१=३ । यही सन् का अङ्कों का योग हुआ । १८ पिण्ड में ३ योग सन् के अङ्कों का और जोड़ दिया तो २१ हुआ इसमें १४ जोड़ा तो ३५ हुआ ५ का भाग देने से ० शून्य शेष बचा अर्थात् ५ शेष ।

दूसरा लड़ने वाला मान लीजिये–रामनाथ है तो पिण्ड बनाया र्+म्+न्–थ्=४ व्यञ्जन हुये । आ+अ+आ+अ=४ ये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर हुये ५ वां सूत्र । चौथा अक्षर सूत्रका । ४+४+५+४=१७ कुल योग हुआ यही पिण्ड हुआ--सन् के अङ्कों का योग पूर्ववत ३ हुआ वह भी जोड़ दिया तो=२० योग हुआ तथा १४ जोड़कर ३४ हुआ ४ का भाग दिया २ शेष बचा । यहां व्यञ्जनों का योग ४ का भाग देने से २ शेष बचा अतः ५ शेष वाला रामसिंह विजयी होगा । इसी प्रकार जितने भी लड़ने वाले हों, अधिक शेष वाला विजयी होगा । इतना ध्यान रहे कि जिस नाम से पर्चा स्थापित किया गया है । वही नाम होना चाहिये एक अक्षर भी न्यूनयाअधिक न हो । उत्तर सत्य निकलेगा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीपुरुषयोर्मध्येप्राङ्नरस्य नार्यावा मृत्युर्भविष्य तीतिनिर्णयः ।

प्रथममतम्

श्लोकः ६–प्राग्योषितोवाथनरस्यमृत्यु–
भर्वीतिलोके यदिकोऽपिपृछेत् ।
उक्तक्रमेणैवविधायपिण्डौ–
भक्तन्नृपिण्डन्नगसङ्ख्ययाच ॥ ६ ॥

× × × ×

श्लोकः ७ · स्त्रीपिण्डकञ्चैवसदैवकुर्यात्–
स्त्रीव्यञ्जनानाङ्किल योगकेन ।
भक्तम्फलंशेषवलेनवाच्यं–
शेषोऽधिकोमृत्युमुपैष्यतीति ॥ ७ ॥

प्रथममतम्

"स्त्री- पुरुष के मध्य में प्रथम किसकी मृत्यु होगी–इस निर्णय जानने के लिये–श्लोक सङ्ख्या ६ व ७ का अर्थ का विवरण लिखा जा रहा है यह नियम प्रथम है ।

अर्थ श्लोक ६-७-यदि कोई पृच्छक किसी पुरुष व स्त्री के विषय में यह प्रश्न करे कि प्रथम पुरुष की मृत्यु होगो या स्त्री की तो ऐसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्नोत्तर के लिये स्त्री के नाम व पुरुष के नाम के पूर्व कथित नियमानुसार पृथक् पृथक् पिण्ड बना लेना चाहिये । पुरुष के पिण्ड में ७ का भाग सदा देकर शेष निकाल लेना चाहिये । एवम् स्त्री के नाम के पिण्ड में स्त्री के नाम के व्यञ्जनों का भाग देकर शेष निकाल लेना चाहिये—जिसके अधिक शेष होंगे उसकी मृत्यु पहिले होना निश्चित है । (पिण्ड बनाने का नियम पीछे लिखा गया है । सदा पिण्ड का नियम वही रहेगा ।)

(१) (क) यथा—पाण्डु—३ व्यञ्जन+२ स्वर+१२ बारहवां (कफ्य्) सूत्र+२ दूसरा अक्षर-प-प यह कफ्यू सूत्र का । अतः योग =१९ यह पिण्ड हुआ ।

कुन्ती—३ क् न् - त् व्यञ्जन+२ उ-ई स्वर+१२ बारहवां सूत्र (कफ्य्+१ पहिला अक्षर (क) है—योग—३+२+१२+१= १८=पिण्ड हुआ । १९ पाण्डु पिण्ड में ७ का भाग दिया शेष तो शेष ५ बचे ।

१८ कुन्ती के पिण्ड में ३ व्यञ्जन योग का भाग दिया तो शेष शून्य अर्थात् ३ बचे तो यहां पाण्डु में शेष अधिक होने से प्रथम पाण्डु की मृत्यु हुई थी ।

(१) पाण्डु=प ण्—ड्=३ व्यञ्जन+अ—उ=२ स्वर+ १२ बारहवां सूत्र+१२+अक्षर २=१९ पिण्ड है ।

[ख] माद्री=म्—द्—र् ३ व्यञ्जन+आ—२ स्वर +७ सातवां सूत्र (ञमङणनम्) (२ दूसरा अक्षर सूत्र का है । योग ३+२+७+२=१४ पिण्ड हुआ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाण्डु के पिण्ड १९ में ७ के भाग से ५ शेष बचते हैं।

माद्री में माद्री के नाम के व्यञ्जन योग ३ का भाग देने से २ शेष बचे अतः अधिक शेष वाले पाण्डु की मृत्यु पूर्व में हुई थी।

(१) दशरथ=४ स्वर+४ व्यञ्जन+१० वांसूत्र (जबगड्दश्) ५ पांचवां अक्षर कुल ४+४+१०+५=२३ में ७ का भाग देने से २ शेष बचे।

कैकेयी=३ व्यञ्जन+४+१+१ स्वर+१२ बारहवांसूत्र + १ पहिला अक्षर=योग ३+४+१+१+१२+१=२२ पिण्ड हुआ।

४+१+१=६ स्वर

कैकेयी के २२ पिण्ड में ३ व्यञ्जनों का भाग देने से १ भाग शेष बचा अतः दशरथ की मृत्यु प्रथम हुई शेषाधिक्य के कारण।

(१) मेघनाद=४ व्यञ्जन+६ स्वर+७ सातवां सूत्र (ञमङणनम्)+दूसरा अक्षर सूत्रका (म) योग ४+६+७+२ =१९ पिण्ड हुआ।

१+३+१+१=६ स्वर

सुलोचना=४व्यञ्जन+६ स्वर (सु, का १ लो, चका ३ का १ ना, का १)+१३ तेरहवां सूत्र (शषसर्)+३ तीसरा अक्षर सूत्र का=कुल योग–४+६+१३+३=२६ पिड हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेघनाद के पिण्ड में ७ का भाग देने से शेष ५ बचे सुलोचना के पिण्ड में सुलोचना के नाम के व्यञ्जन योग ४ का भाग देने से २ शेष बचते हैं मेघनाद के शेष अधिक होने प्रथम उसकी मृत्यु हुई थी।

इसी प्रकार अन्यत्र सभी स्त्री पुरुषों में विचार करना चाहिये यह नियम प्रथम है अतः १ लिखा है उदाहरण ३ दे दिये हैं।

× × × ×

नियमोद्वितीयः

श्लोक ८— शेषौ समौ चेदुभयोर्यदाच
विद्वत्समाजेंन विनिश्चितन्तत्
पिण्डन्नरस्यैवविभज्य षड्भिः–
शेषेणसर्वत्रफलन्तथैव ॥ ८ ॥

अर्थ–जहाँ दोनों शेष समूहों अथवा जहाँ व्यञ्जन योग सात से, अधिक हों वहाँ पर छै से भाग देना चाहिये, अथवा व्यञ्जनों के योग से भाग देना चाहिये।

विशेषः—शेषौसमौयत्रययोस्तदातुसप्ताधिके व्यञ्जनयोगकेवा,
षड्भिस्तदातत्रविमज्य पिण्डं योगेनवा व्यञ्जनसङ्घकेन॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—दूसरे नियम का उदाहरण आदि क्रम

अर्थ—यदि स्त्री व पुरुष के नामों के पिण्डों में क्रमशः अर्थात् पुरुष के नाम के पिण्ड में ७ का भाग देने से तथा स्त्री के नाम के पिण्ड में स्त्री के व्यन्जनों के योग का भाग देने से दोनों स्थानों में शेष समान बचते हों तो वहां पर पुरुष पिण्ड में ६ का भाग देकर शेष निकाल लेना चाहिये तथा स्त्री के नाम के पिण्ड में स्त्री के नाम के व्यन्जन योग का ही भाग पूर्ववत् नियमानुसार देकर शेष से फल कहना चाहिये। ऐसा विद्वत्समाजने निश्चय किया है।८

(२) [क] यथा—नियम दूसरा—उदाहरण—१

१+१+१+१+१+१=स्वर

(२) (क) नारायणराम=६ व्यन्जन+६ स्वर+७वां सूत्र+५ वाँ अक्षर=२४ पिण्ड हुआ—७ के भाग देने से ३ शेष रहे।

१+१+३+१=स्वर

महादेवी=४ व्यन्जन+६ स्वर+७वां सूत्र+२ दूसरा अक्षर=१९ पिण्ड हुआ—इसमें स्त्री व्यन्जन ४ का भाग दिया तो शेष ३ बचे। शेष सम होने से उत्तर स्पष्ट न हो सका अतएव नियम दूसरा श्लोक ८ का आधार लीजिये—पुरुष पिण्ड में ६ का भाग दिया तो शेष शून्य बचे जो ६ के बराबर हैं। स्त्री पिण्ड में स्त्री व्यंजन योग ४ का भाग दिया—तो शेष ३ बचे—अतएव पुरुष के शेष अधिक बचने से पुरुष की मृत्यु प्रथम हुई थी। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अत्रविशेषः—शेषौसमौ यत्र नरस्य नार्यास्–
सप्ताधिके व्यञ्जन योगकेवा ।
षट्सङ्ख्ययातत्रविभज्यपिण्डौ–
नार्यानरस्यात्रफलन्तथैव ॥१॥

अर्थ—जहाँ पर शेष सम बचते हों अथवा व्यञ्जनों का योग एक या दोंनों का ७ से अधिक हो तो वहाँ नारी और नर के पिण्डों में ६ का भाग देकर पूर्ववत् फल कहे। यदि शेष समान भी हों किन्तु व्यञ्जनों का योग दोनों का या एक का ७ से अधिक हो तो भी दोनों पिण्डों में ६ का भाग देकर शेष द्वारा पूर्ववत् फल कहे।

॥ अथनियमस्तृतीयः ॥

श्लोकः ९—यदाव्यञ्जनानान्नरस्यैव योगो-
भवेदल्पकोवासमः स्यात्कदाचित् ।
तदातत्रयोगेविधायाथवृद्धि-
विभज्यापि तेनैवपिण्डन्नरस्य ॥ ९ ॥

× × × ×

श्लोकः १०—विधिःपूर्ववत्तत्रशेषोविधेयो-
वुधेनाखिलः सत्यवाचाधरायाम् ।
फलंवाच्यमस्यांसदानिर्भयेन-
भवेदर्थलाभोयशोलाभकश्च ॥ १० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—स्त्री के नाम के व्यञ्जनों के योग से यदि पुरुष के नाम के व्यञ्जनों का योग न्यून हो अथवा सम हो तो वहाँ पुरुष के नाम के व्यञ्जनों के योग में इतनी वृद्धि कर देनी चाहिये कि स्त्री के नाम के व्यञ्जनों के योग से एक अधिक हो जावे। उसी वृद्धि किये व्यञ्जनों के योग से पुरुष के नाम के पिण्ड में भाग देकर शेष निकाल लेना चाहिये। स्त्री के पिण्ड में स्त्री के व्यञ्जनों योग का भाग देकर शेष निकालकर फलादेश वर्णन करने से पृथ्वी में सत्यवाणी होने से यश तथा अर्थ प्राप्त होता है। शेष समस्त क्रिया पूर्ववत् जानना चाहिये अर्थात् अधिक शेष वाला प्रथम मृत्यु को प्राप्त हुगा। १० ॥

× × × ×

॥ तृतीय नियम उदाहरण ॥

उदाहरण—

(३) (क) रावण—३ व्यञ्जन+३ स्वर+५वां सूत्र+चौथा अक्षर=१५ पिण्ड हुआ।

मन्दोदरी=५ व्यञ्जन+६ स्वर+७ वाँ सूत्र+२ दूसरा अक्षर है कुल योग २० पिण्ड हुआ।

यहां रावण का व्यञ्जन योग कम है—मन्दोदरी का अधिक है—अतएव ९ वें तथा १० वें श्लोकानुसार कार्य कीजिये तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सफलता मिल जायेगी अर्थात् मन्दोदरी के व्यञ्जन योग ५ है—रावण का व्यञ्जन योग ३ इसमें ३ को वृद्धिकर देने से मन्दोदरी से १ अधिक हो गया।

रावण के पिण्ड में भी ३ की वृद्धि हो गई अतएव १५+३ =१८ यह पिण्ड हुआ इसमें ६ व्यञ्जन का भाग देने से ०० अर्थात् ६ शेष बचे। मन्दोदरी में ५ का ही [व्यञ्जन] भाग दिया तो ० अर्थात् ५ शेष बचे। रावण के अधिक होने से प्रथम रावण की मृत्यु हुई थी।

सङ्केत=पाण्डु तथा कुन्ती व माद्री में प्रथम नियम तथा तृतीय नियम से फलादेश समान आया।

३. (अ) पाण्डु=३ व्यञ्जन+२ स्वर+१२ वाँ सूत्र+२ दूसरा अक्षर=१९ पिण्ड हुआ।

कुन्ती=३ व्यञ्जन+२ स्वर+१२वाँ सूत्र+१ पहिला अक्षर =१८ पिण्ड हुआ।

माद्री=३ व्यञ्जन+२ स्वर+७ वाँ सूत्र+२ दूसरा अक्षर =१४ पिण्ड हुआ।

यहाँ स्त्रियों तथा पुरुष का व्यञ्जन योग सम है अतएव पुरुष में १ की वृद्धि की तो ४ व्यञ्जन योग हुआ पिण्ड में भी १ बढ़ गया तो २० हुये ४ व्यञ्जन का भाग दिया तो शून्य अर्थात् ४ शेष बचे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुन्ती के पिण्ड में कुन्ती के व्यञ्जन योग ३ का भाग दियातो शून्य बचा अर्थात् ३ शेष जो पाण्डु के शेष से कम है। अत: पाण्डु प्रथम मृत्यु को प्राप्त हुये थे। माद्री के नाम के पिण्ड १४ में माद्री के नाम के व्यञ्जनों के नाम के योग का भाग दिया तो २ बचा तो जो पाण्डु के शेष से न्यून है। अत: पाण्डु प्रथम मृत्यु को हुये थे।

३. (ग) दशरथ = ४ व्यञ्जन + ४ स्वर + १० वां सूत्र + ५ वां अक्षर सूत्र का = २३ पिण्ड हुआ।

कौशल्या = ४ व्यञ्जन + ६ स्वर + १२ वाँ सूत्र + १ पहिला सूत्राक्षर = २३ पिण्ड हुआ।

सुमित्रा = ४ व्यञ्जन + ३ स्वर + १३ तेरहवांसूत्र + ३ तीसरा अक्षर सूत्र का २३ पिण्ड हुआ।

यहाँ पुरुष तथा स्त्रियों का व्यञ्जन योग समान है अतएव दशरथ के नाम के व्यञ्जनों के योग में १ की वृद्धि कर दी तो ५ व्यञ्जन योग हो गया अत: पिण्ड में भी एक की वृद्धिहोने से २४ पिण्ड हुआ। इसमें पुरुष के नाम के व्यञ्जन योग ५ का भाग दिया तो शेष ४ बचे। स्त्रियों में क्रमश: ४—४ का अर्थात् अपने अपने व्यञ्जन योग का भाग देने से क्रमश: शेष ३—३ बचे जो दशरथ के शेष से न्यून है अतएव दशरथ की प्रथम मृत्यु हुई थी। एवं सर्वत्र यही क्रम जानना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति तीसरा नियम का क्रम

सङ्केत=कुल तीन नियम हैं—उनके आधार से निश्चय करके स्त्री पुरुष के मध्य में प्रथम किसकी मृत्यु होगी निश्चय कह देने से उपहास न होगा।

स्त्री के पिण्ड में प्रायः स्त्री नाम के व्यञ्जनों के योग का ही भाग दिया जाता है—पुरुष पिण्ड में परिवर्तन नियमानुसार हो सकता है।

यथा—(१) यदि शेष सम बचे तो पुरुष पिण्ड में ६ का भाग दीजिये। स्त्री पिण्ड में स्त्री व्यञ्जन योग का भाग रहेगा।

(२) यदि स्त्री तथा पुरुष के नामों के व्यञ्जन योग समान हों अथवा पुरुष के नाम के व्यञ्जन योग से स्त्री के नाम के व्यञ्जन योग अधिक हों—तो स्त्री के नाम के व्यञ्जन योग से पुरुष नाम का व्यञ्जन योग एक अधिक कर दीजिये अर्थात् स्त्री के नाम के व्यञ्जन योग से पुरुष के नाम का व्यञ्जन योग एक से न्यून न हो।

नोट—व्यञ्जन योग में वृद्धि होने से पिण्ड में भी उतनी ही वृद्धि हो जायगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ द्वितीयमतम् ॥

श्लोकः—द्वयोः पिण्डयोर्वासुयोगं विधाय-
द्वयोर्व्यञ्जनानाञ्च योगेन धीमान् ।
विभज्याथवै पिण्डयोगन्द्वयोस्तु-
वदेदाशु सत्यं फलं शान्तचित्तः ॥

अर्थ—स्त्री व पुरुष के पिण्ड योग में स्त्री व पुरुष के व्यञ्जनों के योग का भाग देकर शान्त चित्त से निम्नलिखित सत्य फल कहे।

श्लोकः-शेषेऽसमे वै पुरुषस्यमृत्युनार्याश्चमृत्युर्हिसमेऽभिधेय।
शम्भोःप्रसादादुपलब्धसूत्रैर्मुनीश्वरैर्निश्चितएषएवः ॥

अर्थ—विषम शेष रहने पर पुरुष की तथा सम शेष रहने पर स्त्री की मृत्यु जानना चाहिये। मुनीश्वरों ने भगवान् शिव की कृपा से प्राप्त सूत्रों के द्वारा ऐसा निश्चय किया है।

॥ तृतीयमतम् ॥

श्लोकः—पिण्डद्वयैक्यन्तु विभज्यनन्दंश्-
शेषैं समे स्त्रीमरणंभवेत्प्राक् ।
मृत्पुर्हिशेषेविषमेचपुँसः-
शेषेनवाङ्केऽपिभवेद्धियोषितः ॥

अर्थ—पिण्ड द्वय योग को नव से भाग देने से यदि सम शेष बचें तो स्त्री की प्रथम मृत्यु कहना चाहिये तथा विषम शेष में पुरुष की प्रथम मृत्यु होना निश्चित है। नव शेष में प्रायः स्त्री की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम मृत्यु होती है। (नव शेष का अर्थ शून्य शेष जानना चाहिये।

सङ्केतः—तीनों प्रकार के मत से गणित करके दो मतैक्य में फलादेश कहे। यदि तीनों प्रकार में भिन्नता हो तो द्वितीय मत के पिण्डद्वय योग में एक जोड़कर शेष क्रिया पूर्ववत् करके दो मतैक्य में निश्चित सत्य फल कहे।

विशेषआवश्यकसूचना

स्त्री वा पुरुष में प्रथम किसकी मृत्यु होना है इस ज्ञान के लिये प्रश्नकर्ता के मुख से जो नाम (स्त्री व पुरुष) के निकलें चाहे वे नाम अशुद्ध हों या शुद्ध, उनसे ही पूर्ण पिण्डादि कार्य करना चाहिये अपनी तरफ से कुछ भी संशोधन नहीं करना चाहिये अन्यथा फलादेश में अन्तर अवश्य होगा। क्योंकि स्वर और व्यञ्जनों से ही पिण्डादि कार्य होता है। एक भी स्वर या व्यञ्जन के न्यूनाधिक से विशष अन्तर पड़ जायेगा। अतएव सावधानी से दोनों नाम लिखकर पिण्डादि कार्य करना चाहिये। (हयवरट्) सूत्र में (व) का ज्ञान और "जबगडदश्" इस सूत्र में (ब) का ज्ञान करना चाहिये। छोटे 'हकार' में 'हयवरट्' का 'ह' लेना चाहिये। और बड़े 'हकार' में 'हल्' का हं लेना चाहिये।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
किशुनलाल	– कृष्णलाल।	विशुन नरायण	– विष्णु नारायण।
ईसुरी प्रसाद	– ईश्वरी प्रसाद।	पारवती	– पार्वती।
वुधा	– बुधा।	जमुना	– यमुना आदि।

जैसा शुद्ध अशुद्ध जितना नाम पृच्छक कहे उसी से गणित करना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ शिवचतुर्दश सूत्रों द्वारा विविध प्रश्नोत्तर निकालने की अन्यविधि

पृच्छक के प्रश्न पूछने के वाद–शिवचतुर्दश सूत्रों में कोई एक सूत्र मुख से कहना चाहिये या अंगुली रखना चाहिये किसी एक सूत्र पर। अथवा चौदह तक के अंकों के अन्दर कोई एक अंक कहना चाहिये उससे भी उस संख्या का सूत्र जानना चाहिये सूत्र संख्या–सूत्र के अक्षर जितने भी हों तथा पृच्छक के नाम के अक्षर– इन सबको जोड़कर ३ का भाग देकर शेष से प्रश्नोत्तर कहना चाहिये। तीन शेष का अर्थ है शून्य शेष अर्थात शून्य वचने पर तीन शेष जानना चाहिये।

प्रश्नोत्तर निकालना–यथा किसी ने गर्भ सम्बन्धी प्रश्न पूछा है और मुख से ५ वाँ सूत्र हयवरट्, कहा है – पृच्छक का नाम रामनाथ है। तो ५ सूत्र संख्या– ४ सूत्र के अक्षरों की सख्या ४ नाम के अक्षरों की संख्याकुल योग– १३ हुआ इसमें ३ का भाग देने पर १ शेष वचा अतः पुत्र जन्म होगा। इसी प्रकार विविधि प्रश्नों के उत्तर निकाले जा सकते हैं।

प्रश्न निर्णय— १ शेष में	२ शेष में	३ शेष में
पुत्र कन्यादि निर्णय–में पुत्र	कन्या	पुत्र या गर्भपात।
मूक प्रश्न में– धातु	मूल	जीव
पराजय या विजय प्रश्न में-विजय	पराजय	मेल
तेजी मन्दी प्र० में–तेजी	मन्दी	सम
विवाह प्रश्न में– होगा	नहीं होगा	विलम्ब है

सङ्केत– इसी प्रकार अनेक प्रश्नों के उत्तर निकाले जा सकते हैं एक शेष का फल शुभ रहेगा। २ शेष का अशुभ रहेगा। ३ अर्थात् शून्य शेष का फल सम रहेगा।

— × —

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। सर्वसाधारण के लिए अति सरल नियम प्रश्नोत्तर निकालने का ।।

पृच्छक (पूछने वाला) जो भी प्रश्न करे उस प्रश्न को प्रश्नावली में देखकर प्रश्न का अङ्कित अक्षर स्मरण रखना चाहिए। इसके बाद पृच्छक से चौदह तक के अङ्कों में किसी एक अङ्क को मुख से कहलाना चाहिए। प्रश्न का अंकित अक्षर तथा मुख से जो भी एक से लेकर चौदह के अन्दर किसी एक अङ्क को कहा है। उन दोनों के मिलान से उत्तर निकल आयेगा।

जैसे किसी ने प्रश्न किया कि अमुक स्त्री के गर्भ में क्या है तो यह प्रश्न 'ई' अक्षर का है यही 'ई' ही प्रश्न अङ्कित अक्षर है। पूछने वाले ने मुख से ५ अङ्क कहा है तो 'ई' और ५ अङ्क के सामने मिलान मिलाने से उत्तर निकला कि कन्या जन्म लेगी।

इसी क्रम से सभी प्रश्नोत्तर निकाले जा सकते हैं इस विधि से उत्तर निकालने में चौदह सूत्रों को याद रखने की भी आवश्यकता नहीं है। यह नियम अति सरल है।

।। इति प्रश्नविवरण समाप्त ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमिसंशोधनादिप्रकरणम्

श्लोकः—नत्वाशिवन्तुकरुणालयमत्युदारं-
देवीञ्चसर्वंजगताञ्जननींप्रणम्य ।
ध्यात्वा गुरोश्च पदपद्मयुगन्दयालो-
भूमेर्विशोधनविधिं कथयामिसूत्रैः ।। १ ।।

अर्थः—अत्यन्त दयालु श्री शङ्कर जी को नमस्कार करके तथा जगज्जननी भगवती देवी को प्रणाम करके तथा दया की मूर्ति श्री गुरुचरण कमलों का ध्यान करके गृहादि निर्माण के लिये भूमि संशोधनादि विधि वर्णन कर रहा हूँ ।।१।।

श्लोकः—आयामविस्तारकयोश्चसङ्ख्ये-
कृत्वाहते चैवपरस्परंवै ।
वेदेन्दुभक्ते तुफले तयोस्तु-
शेषेण भूमेश्च शुभाशुभञ्च ।। २ ।।

अर्थः—जितनी भूमि में गृह निर्माण करने का विचार हो उस भूमि का दीर्घ तथा विस्तार अर्थात् लम्बाई तथा चौड़ाई नाप कर-परस्पर गुणा कर गुणनफल में चौदह का भाग. देने से जो शेष बचें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनसे निम्नलिखित विधि से शुभ तथा अशुभ फल कहना चाहिये ॥२॥

श्लोकः—अशुभेवशुभञ्चशुभाशुभं-
शुभमलन्नशुभंशुभमेवच ।
अतिशुभन्नशुभन्तुशुभन्नसत्-
त्वशुभमेवशुभन्नशुभंशुभम् ॥ ३ ॥

(अंकचिह्न: १ २ ३ / ४ ५ ६ / ७ ८ ९ १० / ११ १२ १३ १४)

अर्थः—१ अशुभ—२ शुभ—३ शुभाशुभ—४ अत्यन्त शुभ—५ अशुभ६—शुभ—७ शुभ—८ अशुभ—९ शुभ—१०अशुभ-११ अशुभ-१२—शुभं—१३—अशुभ—१४ शुभ। चतुर्दश सूत्रों का फल क्रमशः जानना चाहिये ॥३॥

श्लोकः—फलमिदङ्कथितम्मुनिमण्डले-
र्जनहितायशुभाशुभमद्भुतम् ।
वदतिशम्भुमतम्मतिमान्नरः—
भवतिपूज्यतमो धरणीतले ॥ ४ ॥

अर्थ—चतुर्दश सूत्रानुसार जो शुभ तथा अशुभ फल—मुनीश्वरों ने कहा है वह भगवान् शङ्कर का मत है—जो मनुष्य इस प्रकार फल को कहता है वह संसार में विशेष पूजनीय होता है ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तात्कालिकशिवसूत्रस्थापनचक्रम् ॥

संवत् २०३१ चैत्रसुदि ७ सप्तमीशनिवारे ता० ३०-३-१९७४ प्रातः ७ सप्तवादनसमये । सूर्योदयादिष्टम् ०२/४७/३०

स्पष्टलग्नम् ०१/०८/३/४९/२६ लग्नवत् क्रिया करने से यह चक्र सम्पन्न हुआ है यदि वृषलग्न वर्तमान हो तो प्रथम स्थान में २ रखना चाहिये ।

<table>
<tr><td>३
एओङ्</td><td>२
ऋलृक्</td><td rowspan="2">अइउण्
१</td><td>१४
हल्</td><td>१३
शषसर्</td></tr>
<tr><td colspan="2">४
ऐऔच्</td><td colspan="2">१२
कपय्</td></tr>
<tr><td colspan="2">५
हयवरट्</td><td rowspan="2">८
झभञ्</td><td colspan="2">११
खफछठथचटतव्</td></tr>
<tr><td>६
लण्</td><td>७
ञमङणनम्</td><td>९
घढधष्</td><td>१०
जबगडदश्</td></tr>
</table>

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इनमें ग्रह भी स्थापित किये जा सकते हैं।

१३वें स्थान का फल–शरीर सम्बन्धी आदि फलज्ञान के लिये तथा १४वें स्थान का फल—धन सम्बन्धी आदि (द्यूत-सट्टा-लाटरी आदि,) ज्ञान के लिये जानना चाहिये। इन स्थानों से विशेष सूक्ष विचार किये जाते हैं।

सङ्केत:—"अइउण्" तथा "शषसर्" जिस भाव में होंगे इन दोनों सूत्रों का फल समान ही रहेगा—इतनी विशेषता होगी कि १५ अश तक 'अइउण" का फल रहेगा पश्चात् (१६ अंश से ३० अंश तक "शषसर्" का फल रहेगा। एवमेव—'ऋलृक्' तथा "हल्" का फल जानना चाहिये।

प्रसङ्गवश भूमि में स्थित द्रव्यशल्यादि विचारः।

श्लोकः—तात्कालिकंसूत्रचयन्तुशम्भो-
नंक्षत्रसङ्घञ्चतथाविधाय ।
संस्थाप्यसूत्राणिशिवस्यतत्र
नक्षत्रमध्येक्रमशस्सुधीमान् ॥५॥

× × × ×

प्रष्टुर्मुखाच्चैवफलादितस्मिन्-
कालेनिशश्याशुविधार्यपिण्डम् ।
नानाविधसत्यफलन्धरायां-
ब्रूयाद्बुध:शम्भुमतानुसारम् ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—जिस स्थान में (गृहया मैदान में) द्रव्य आदि निर्णय करना हो तो वहां पर प्रच्छक खड़े होकर प्रश्न करे—प्रश्न करते समय का तात्कालिक शिव सूत्र तथा तात्कालिक नक्षत्र निकाल ले-पश्चात् अष्टाविंशतिकोष्ठात्मक में नक्षत्र तथा शिव सूत्र स्थापित करे ॥५॥ प्रश्न करते समय प्रच्छक के मुख से नियमानुसार 'पुष्प आदि' कहलाकर उसका (पूर्व नियमानुसार) पिण्ड बना ले। इन सबके मिलाने से नाना प्रकार के फल चतुर्दश सूत्रों द्वारा कहे ॥६॥

सङ्केत—गृह द्वार में कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ कर २८ कोष्ठात्मक चक्र बनावे। यदि मैदान (समया विषम भूमि मात्र ही हो) तो वहां वर्तमान सूत्रोदय की दिशा में चक्र स्थापन करना चाहिये। द्रव्य या शल्प का निर्णय) (ऐऔच्) और 'हयवरट्' इन सूत्रों से ही करे।

॥ द्रव्यादिनिर्णयः ॥

श्लोकः—'ऐऔच्' यदास्यान्निजभस्यकोष्ठे-
तस्यैवनक्षत्रचयेतथावा ।
वासस्तथापञ्चमसूत्रकस्य-
ब्रूयान्निधिविज्ञवरोहितत्र ॥७॥

× × × ×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोकः—भिन्नेत तदा भिन्नफलंप्रवाच्यं
नूनं हिदैवज्ञ वरेणसत्यम् ।
'ऐऔच्' च सूत्रङ् किलयत्रकोष्ठे-
तत्रैवविद्वांस्तु निधिंवदेच्च ॥८॥

× × × ×

श्लोकः—'हयवरट्' भुवियत्रवुधस्तदा-
वदतुशल्यमपिद्वयमेववा ।
फलमिदंशिवसूत्रवलेनतु-
निगदितङ्किलपूर्वंमहर्षिभिः ॥९॥

अर्थ—'ऐऔच्' सूत्र सथा 'हयवरट' यह सूत्र यदि 'ऐऔच' सूत्र के नक्षत्र (अष्टाविंशति कोष्ठात्मक चक्र के ऊपर नक्षत्र लिखे हैं) में हों तो निश्चय निधि है ऐसा उत्तर विद्वान् देवे। यदि एक दूसरे के नक्षत्रों में सूत्र हों तो कुछ नहीं है ऐसा कहे। यदि अपने अपने नक्षत्रों में दोनों सूत्र हों तो स्वल्पनिधि तथा स्वल्पशल्य है ऐसा कहे। यदि दोनों 'हयवरट्' सूत्र के नक्षत्रों में हो तो केवल अस्थि आदि हैं धन कुछ भी नहीं है ऐसा कहे। 'ऐऔच्' सूत्र के कोठे में निधि तथा 'हयवरट्' सूत्र के कोठे में अस्थि आदि कहे। तपस्वी मुनि मण्डली ने ऐसा निर्णय किया है ॥७।८।९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहोरात्र (२४ घंटों में) २८ नक्षत्रों का भोग्यकाल। (स्थूलमान से) पृष्ठ १३ श्लोक १२ के आधार से।

घटी—पल — वि०—प्रवि०	नक्षत्र नाम	सं०	घंटा—मि०—से०—प्र०से०
०२ । ०८ । १४ । १७	तक अश्विनी	१	०० । ५१ । २५ । ५३
०४ । १७ । ८ । ३४	तक भरणी	२	०१ । ४२ । ५१ । ०६
०६ । २५ । ४२ । ५१	,, कृतिका	३	०२ । ३४ । १७ । ०९
०८ । ३४ । १७ । ०८	,, रोहिणी	४	०३ । २५ । ४२ । ५२
१० । ४२ । ५१ । २५	तक मृगशिरा	५	०४ । १७ । ०८ । ३५
१२ । ५१ । २५ । ४२	तक आर्द्रा	६	०५ । ०८ । ३४ । १८
१४ । ५९ । ५९ । ५९	,, पुनर्वसु	७	०६ । २० । ०० । ०१
१७ । ०८ । ३४ । १६	,, पुष्य	८	०६ । ५१ । २५ । ४४
१९ । १७ । ०८ । ३३	,, आश्ले०	९	०७ । ४२ । ५१ । २७
२१ । २५ । ४२ । ५०	,, मघा	१०	०८ । ३४ । १७ । १०
२३ । ३४ । १७ । ०७	तक पू० फा०	११	०९ । २५ । ४२ । ५३
२५ । ४२ । ५१ । २४	तक उ० फा०	१२	१० । १७ । ०८ । ३६
२७ । ५१ । २५ । ४१	तक हस्त	१३	११ । ०८ । ३४ । ०९
२९ । ५९ । ५९ । ५८	,, चित्रा	१४	१२ । ०० । ०० । ०२
३२ । ०८ । ३४ । १५	,, स्वाती	१५	१२ । ५१ । २५ । ४५
३४ । १७ । ०८ । ३२	,, विशाखा	१६	१३ । ४२ । ५१ । २८
३६ । २५ । ४२ । ४९	तक अनुराधा	१७	१४ । ३४ । १७ । ११
३८ । ३४ । १७ । ०६	तक ज्येष्ठा	१८	१५ । २५ । ४२ । ५४
४० । ४२ । ५१ । २३	,, मूल	१९	१६ । १७ । ०८ । ३७
४२ । ५१ । २५ । ४०	,, पू० षा०	२०	१७ । ०८ । ३४ । २०
४४ । ५९ । ५९ । ५७	,, उ० षा०	२१	१८ । ०० । ०० । ०३
४७ । ०८ । ३४ । ०४	,, अभिजित्	२२	१८ । ५१ । २५ । ४६
४९ । १७ । ०८ । ३१	,, श्रवण	२३	१९ । ४२ । ५१ । २९
५१ । २५ । ४२ । ४८	तक धनिष्ठा	२४	२० । ३४ । १७ । १२
५३ । ३४ । १७ । ०५	तक शतभिषा	२५	२१ । २५ । ४२ । ५५
५५ । ४२ । ५१ । २२	,, पू० भा०	२६	२२ । १७ । ०७ । ३८
५७ । ५१ । २५ । ३९	,, उ० भा०	२७	२३ । ०८ । ३३ । २१
६० । ०० । ०० । ००	तक रेवती	२८	२४ । ०० । ०० । ००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ अहोरात्र (२४ घंटे) में चतुर्दश शिव सूत्रों का भोग्यकाल ॥
(स्थूल मान से) सूर्योदयकालसे

घटी—पल—वि०—प्र०वि०	सूत्र नाम	सं०	घंटा—मि०—से०—प्रति से०
४ । १७ । ८ । ३४	तक अइउण्	१	०१ । ४२ । ५१ । २६
०८ । ३४ । १७ । ०८	तक ऋलक	२	०३ । २५ । ४२ । ५२
१२ । ५१ । २५ । ४२	„ एओङ्	३	०५ । ०८ । ३४ । १८
१७ । ०८ । ३४ । १६	„ ऐऔच्	४	०६ । ५१ । २५ । ४४
२१ । २५ । ४२ । ५०	„ हयवरट्	५	०८ । ३४ । १७ । १०
२५ । ४२ । ५१ । २४	तक लण्	६	१० । १७ । ०८ । ३६
२९ । ५९ । ५९ । ५८	तक ञमङणनम्	७	१२ । ०० । ०० । ०२
१७ । १७ । ०८ । ३२	तक झभञ्	८	१३ । ४२ । ५१ । २८
३८ । ३४ । १७ । ०६	„ घढधष्	९	१५ । २५ । ४२ । ५४
४२ । ५१ । २५ । ४०	„ जवगडदश्	१०	१७ । ०८ । ३४ । २०
४७ । ०८ । ३४ । १४	„ खफछठ-थचटतव्	११	१८ । ५१ । २५ । ४६
५१ । २५ । ४२ । ४८	तक कपय्	१२	२० । ३४ । १७ । १२
५५ । ४२ । ५१ । २२	तक शषसर्	१३	२२ । १७ । ०७ । ३८
६० । ०० । ०० । ००	तक हल्	१४	२४ । ०० । ०० । ००

सूर्योदय काल में जो सूत्र होगा उसी सूत्र से अहोरात्र में १४ सूत्र भोग करेंगे यथा—चैत्र सुदि में ७ सप्तमी में शनिवार है शनि को (ञमङणनम्) इस सूत्र का उदय है—७ बजकर ३५ मिनट ५१ सेकण्ड २६ प्रति सेकण्ड रहेगा। इसी प्रकार—सूर्योदय काल से अहोरात्र में २८ नक्षत्र-७ बार-१५ तिथियां आदि सभी भोग करेंगी। प्रश्न समय का—सूत्र—वार—नक्षत्र आदि गणित से देखना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथसूत्रयोर्नक्षत्रविभागः ॥

श्लोकः—स्वातीमूलकरोत्तरात्रयमघावह्नियंमश्चाश्विनी-
पूर्वाभाद्रपदाऽदितिश्च वसबोमैत्रंजगु:पूर्वजा: ।
नक्षत्राणिच पञ्चमस्य मुनयः सूत्रस्यशम्भोस्तथा-
सूत्रस्यापिचतुर्थकस्यकृतिनोभानीहशेषाणिवै ॥१०॥

अर्थ—स्वाती–मूल–हस्त–तीनों उत्तरा–मघा–कृत्तिका–भरणी-अश्विनी–पूर्वाभाद्रपदा–पुनर्वसु–अनुराधा–धनिष्ठा ये १४ नक्षत्र महर्षियों ने "हयवरट्" इस सूत्र के अधिकार में निश्चित किये हैं तथा शेष १४ नक्षत्र "ऐऔच" इस सूत्र के अधिकार में निश्चित किये हैं ।

नक्षत्र विभाग का चक्र स्पष्ट आगे लिखा है ।

भूमि में स्थित द्रव्य व शल्य आदि निर्णयार्थ नक्षत्र विभाग

"ऐऔच्" सूत्र के नक्षत्र	"हयवरट्" सूत्र के नक्षत्र
रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुष्य, आश्लेषा, पुर्वाफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़, अभिजित्, श्रवण, शतभिषा, रेवती ।	कृत्तिका–पुनर्वसु, मघा–उत्तराफाल्गुनी, हस्त स्वाती, अनुराधा, मूल–उत्तराषाढ़, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद-उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, भरणी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निधि आदि निर्णयार्थं अष्ठविंशति कोष्ठात्मक चक्र

पूर्व

उ० (बाएँ) — द० (दाएँ)

आश्लेषा 'जवगड्दश'	मघा खफछठथ चटतव्	पू० फा० 'कपय्'	उ० फा० 'शषसर'	हस्त 'हल्'	चित्रा 'अइउण्'	स्वाती 'ऋलृक्'
पुष्य 'घढ़घष्'	धनिष्ठा	शतभिषा	पू० भा०	उत्तराभाद्र	रेवती	विशाखा 'एओङ्'
पुनर्वसु 'झभञ्'	श्रवण	अभिजित्	उत्तराषाढ़	भरणी	अश्विनी	अनुराधा 'ऐऔच्'
आर्द्रा 'ञमङ्णनम्'	मृगशिर	रोहिणी	कृत्तिका ग्रहद्वार	पू० षा०	मूल 'लण्'	ज्येष्ठा 'हयवरट्'

पश्चिम

भूमि में स्थित द्रव्य आदि निर्णय का उदाहरण ।

यथा—किसी प्रच्छक ने सं० २०३१ चैत्रसुदि ७ सप्तमी—शनिवार ता० ३०-३-७४ में द्रव्य आदि निर्णयार्थं प्रश्न किया—सूर्योदयसे ५ बजकर ५३ मिनट पर है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न का समय प्रातः ७ बजे का है—सूर्यादिष्ट ०२।४७।३० है। स्थूलमान से लग्न ००-८।३।४९।२६ है।

'गुलाब का पुष्प मुख से कहा है (प्रातः काले पुष्पमेकन्नि-गद्यादिति इस नियम से) पिण्ड १९ हुआ (पूर्ववत् पिण्ड बनाने की विधि से)

सूर्योदय पर मृगशिर नक्षत्र है इसीं मृगशिर नक्षत्र से आरम्भ करके अहोरात्रि के दो घटी—०८ पल १४ विपल १७ प्रति विपल अर्थात् ०० घटा ५१ मिनट २५ सेकण्ड ५३ प्रति सेकण्ड—प्रति नक्षत्र के भोग से २८ नक्षत्र भोग करेंगें इस क्रम से मृगशिर में मृगशिर नक्षत्र का भोग निकालकर वर्तमान नक्षत्र आर्द्रा हुआ जो ७ बजकर ३५ मिनट ५१ सेकण्ड ६ प्रति सेकण्ड रहेगा।

इसी क्रम से अहोरात्र में १४ सूत्र भी प्रति सूत्र ४ घटी १७ पल ८ विपल ३४ प्रति विपल अर्थात् १ घंटा ४२ मिनट ५१ सेकण्ड २६ प्रति सेकण्ड के क्रम से भोग करेंगे। सूर्योदय में शनि-वार में "ञमङणनम्" सूत्र का उदय होने से ७ बजकर ३५ मिनट् ५१ सेकण्ड २६ प्रति सेकण्ड इक 'ञमङणनम्' यह सूत्र रहेगा। अर्थात् वर्तमान 'ञमङणनम् यह सूत्र है।

अष्टाविंशति कोष्ठात्मक चक्र में विचार करना है कि वर्तमान नक्षत्र आर्द्रा है पर वर्तमान सूत्र "ञमङणनम्" है उस सूत्र को आर्द्रा नक्षत्र वर्तमान होने से स्थापित क्रिया जो चक्र देखने से स्पष्ट होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गृह का द्वार-पश्चिम दिशा में है अतः पश्चिम दिशा से कृत्रिकादि नक्षत्र चक्र में स्थापित किये गये हैं।

सङ्केत—जिस दिशा में गृह का द्वार होता है उसी दिशा से कृत्तिकादि नक्षत्र स्थापित करे।

यदि मैदान हो तो प्रश्नकर्ता जिस समय प्रश्न करे उस समय का सूत्र जिस दिशा का स्वामी हो उसी दिशा से कृत्तिकादि नक्षत्र स्थापित करे पृष्ठ न० ५ का चक्र देखिये। वर्तमान समय में गृह में निर्णय करना है तो अष्टाविंशतिकोष्ठात्मक चक्र में "ऐऔंच्" यह सूत्र अनुराधा नक्षत्र में है जो कि 'हयवरट्' सूत्र का नक्षत्र है तथा "हयवरट्" यह सूत्र ज्येष्ठा नक्षत्र में है जो कि "ऐऔच्" इस सूत्र का नक्षत्र है अतः एक दूसरे में सूत्रों की स्थिति होने से द्रव्य आदि कुछ भीं नहीं है।

द्रव्य लाभालाभ का निर्णय

प्रश्नकर्त्ता के मुख से प्रश्न करते समय जो पुष्प आदि निकले उसका पिण्ड बनाकर उस पिण्ड तथा वर्तमान सूत्र गणना 'अइउण' सूत्र से गिनकर जोड़ कर तीन का भाग देने से जो शेष बचे उनसे लाभालाभ का निर्णय करे—१ शेष से लाभ। २ शेष से सामान्य लाभ। ३ शेष से लाभ नहीं होगा।

द्रव्यादि स्थिति की गहराई

पुष्पादि द्वारा जो पिण्ड बनाया गया है, उस पिण्ड में प्रश्न समय का जो सूत्र वर्तमान हो, उसकी सङ्ख्या 'आइउण' से गिनकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोड़कर शिव सूत्र सङ्ख्या (१४) का भाग देने से जो शेष बचें उतने ही हाथ अथवा बालिस्त गहराई पर द्रव्य आदि कहना चाहिये। 'ऐऔच्', के कोठे में निधि और 'हयवरट्' के कोठे में शल्यादि।

यथा—पिण्ड १९ (गुलाब) इस पुष्प के नाम से
वर्तमान सूत्र ७वाँ ञमङणनम्।
२६ यह प्रधान पिण्ड हुआ। इसमें १४ का भाग दिया तो १२ शेष बचे। १२ हाथ या १२ बालिस्त गहराई पर द्रव्यादि कहे।

अथवा—१४से प्रधान पिण्ड में भाग देनेसे जो शेष बचे उनको शिव सूत्रानुसार सूत्र मानकर उस सूत्र में जितने अक्षर हों उतने ही हाथ या बालिश्त पर द्रव्यादि कहे।

यथा—प्रधान पिण्ड में १४ का भाग देने से १२ शेष बचे तो १२वां सूत्र 'कपय्' हुआ। इसमें दो अक्षर हैं अतः २ हाथ या दो बालिस्त पर द्रव्यादि कहे।

सङ्केत—दोनों नियमों में भेद होना स्वाभाविक है अतः दोनों शेषों को जोड़कर दो का भाग देने से जो लब्ध आवे उतने ही हाथ या बालिस्त पर द्रव्यादि कहे। यथा १२+२=१४ हुये दो का भाग देने से ७ लब्ध आये इतने हाथ या बालिस्त पर द्रव्यादि कहे। १बालिश्त १२ अङ्गुल का होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसङ्ग वश चौर आदि के नाम का प्रथमाक्षर निकालने की विधि

यथा—चौरादि नाम का प्रथमाक्षर निकालना है।

श्लोकः—तत्कालसूत्रसहितङ् कुसुमादिपिण्डं-
वर्गैर्विभज्यसुधिपाचपुनर्विभज्य ।
वर्गाक्षरैश्चकिलशेषवलेनवाच्यं-
नाम्नोऽक्षरंहिप्रथमम्भुवितस्करस्य ॥

अर्थ—चौर के नाम का प्रथमाक्षर जानने के लिये—पुष्पादि नाम का पिण्ड तथा वर्तमान सूत्र सङ्ख्या जोड़कर - उस योग में ८ का भाग देने से जो शेष बचें उसी वर्ग के (अवर्ग - कवर्ग आदि के) अक्षरों में अक्षर होगा।

पुनः—जिस वर्ग के अक्षरों में अक्षर है उस वर्ग में जितने अक्षर हों उतने ही अक्षरों का भाग पुनः पूर्व योग में भाग देने से शेष से वही सङ्ख्यक अक्षर जानना चाहिये ॥११॥

यथा—वर्तमान समय का सूत्र (प्रश्न करते समय का सूत्र) ७वां है—गुलाब, यह पुष्प का नाम प्रश्न के समय का 'गुलाब' का पिण्ड (१९) हुआ योग १९+७=२६ हुआ। ८ वर्ग होते हैं अतः ८ का भाग देने से २ शेष से कवर्ग आया। कवर्ग में ५ अक्षर होने से २६ में पांच का भाग दिया तो शेष १ बचने से चौर के नाम का प्रथमाक्षर (क) आया।

सङ्केत—इसी प्रकार पूर्व में ४ का भाग देने से शेष से (१ ब्राह्मण, २ क्षत्री, ३ वैश्य, ४ शूद्र) चोर जाने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवम्—पूर्वं योग में १० का भाग देने से—१ पूर्व—२ आग्नेय ३—दक्षिण—४ नैऋत्य—५ पश्चिम—६ वायव्य—७ उत्तर —८ ईशान—९ ऊपर—१० नीचे वस्तु स्थित रहे।

एवम्—इसी प्रकार योग द्वारा बुद्धि बल से विविध प्रश्नोत्तर निकाले जा सकते हैं।

यथा—किसी मन का अभिप्राय जानना है तो पूर्व में ४८ का भाग देने से जो शेष बचे वह अक्षर स्मरण रक्खें—पुनः उसी योग में १४ का भाग देने से जो शेष बचे उससे सूत्र स्मरण रक्खें पुनः दोनों के मिलान से उत्तर सहित अभिप्राय अवगत हो जायेगा।

यथा—१९+७=२६ योग है इसमें ४८ का भाग देने से २६ शेष बचे—पुनः २६ में १४ का भाग देने से १२ शेष बचे अर्थात् १२वां सूत्र 'कपय्' हुआ २६ तथा 'कपय' के मिलान प्रश्नोत्तरों के मिलाने से २६वां अक्षर 'भ' का प्रश्न है—किसी काम करने के विषय में लाभ हानि का उत्तर 'कपय्' सूत्र तथा २६ के मिलान से (भ अक्षर के मिलान से) निकला (यह काम लाभप्रद होगा)

इसी प्रकार अनेक प्रकार के प्रश्न-उत्तर सहित निकाले जा सकते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। मुहूर्तविषयेनिर्णयः ।।

श्लोक– लोकेसदासर्वविधंहिकार्यङ्–
कुर्याज्जनः शोभनसूत्रकाले ।
साफल्यमेवालभतेमनस्वी–
सूत्रोदयेनैवमुहूर्तचिन्ता ।।१२।।

\+ + + +

अर्थ–सभी प्रकार के कार्यारम्भ शुभ सूत्रोदय में करने से अवश्य सफलता मिलती है। सूत्रोदय काल में मुहूर्त विचार ने की आवश्यकता नहीं है ।।१२।।

श्लोक– सदापृच्छकः प्रश्नमेकं विदध्यान्–
नचान्यन्द्वितीयादिकञ्चैकवारे ।
फलंशम्भुसूत्रानुसारंवदेद्वै–
मुनीन्द्रादिवृन्दैरिदन्निश्चितंयत् ।।१३।।

\+ + + +

अर्थ–एक पृच्छक एक दिन में एक ही प्रश्न करे द्वितीय-तृतीय आदि न करे। ऐसा मतमुनीन्द्र आदि निश्चित कर गये हैं।

।। इति भूमिशोधनादिप्रकारः ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ अथजातकफलादेशवर्णन ॥

श्लोक— मेषादिराशिषुबुधैरपि जन्मकाले—
माहेश्वरं सपदिसूत्रगणंविलिख्य ।
भावस्थितैश्चक्रमतः किलशम्भुसूत्रै—
र्वाच्यंशुभाशुभफलम्भुविमानवानाम् ॥

\+ + + +

अर्थ-जन्म काल में मेष राशि आदि १२ राशियों में अइउण् आदि १४ सूत्रों को क्रम से प्रति राशि में स्थापन करना चाहिए। अर्थात् मेष में 'अइउण्' वृष में 'ऋलक्' मिथुन राशि में (एओङ) कर्क में (एऔच्) इत्यादि क्रम से सूत्रों को स्थापन करे अर्थात् द्वादश भावों में मेष आदि १२ राशियों के क्रम से १४ सूत्रों को लिखे मेष में 'अइउण्' और शषसर, ये सूत्र स्थापित होगे। वृष राशि में 'ऋलक्' और 'हल' ये दो सूत्र रहेंगे। शेष १० भावों में एक एक सूत्र रहेगा। भावस्थित सूत्रानुसार शुभ तथा अशुभ फल कहना चाहिए। जैसे जन्म काल की लग्न कर्क है तो १२ भावों में कर्क सिंह कन्या आदि तनुभाव आदि में रहेंगीं किन्तु अइउण् मेष राशि में ऋलक् वृष राशि में ही रहेंगे : शेष सूत्र भी इसी क्रम से मिथुन आदि राशियों में रहेंगे। यहां कर्क लग्न होने के कारण कर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाव अर्थात् दशमभाव में मेष राशि से अइउण् तथा शषसर् ये सूत्र रहेंगे। ११वें भाव में 'ऋलृक् तथा 'हल् ये दो सूत्र रहेंगे शेष भावों में एक एक सूत्र रहेगा। लग्न में कर्क राशि होने से (ऐऔच्) यह सूत्र रहेगा। शुभ तथा अशुभ फल चक्रानुसार जानना चाहिए। चक्र पृष्ठ नं० ५ में देखिये।

॥ शिवसूत्रस्थापनकुण्डली ॥

<table>
<tr><td colspan="2">५
हयवरट्</td><td rowspan="2">४
एऔच्</td><td colspan="2">३
एओङ्</td></tr>
<tr><td colspan="2">६
लण्</td><td colspan="2">ऋलृक्
२
हल्</td></tr>
<tr><td colspan="2">७
अमङणनम्</td><td rowspan="2">१०
जबगडदश्</td><td colspan="2">अइउण्
१
शषसर्</td></tr>
<tr><td>८
झभञ्</td><td>९
घढधष्</td><td>११
खफछठथ-
चटतव्</td><td>१२
कपय्</td></tr>
</table>

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ भावों का शुभ तथा अशुभ फल का विवरण यहां नीचे लिखे सङ्केतानुसार जानना चाहिये–

१-तनुभाव	–	शुभ फल रहेगा
२-धनभाव	–	अशुभ
३-सहजभाव	–	शुभ
४-सुखभाव	–	शुभ
५-पुत्रभाव	–	अशुभ
६-शत्रुभाव	–	शुभ
७-जायाभाव	–	अशुभ
८-मरणभाव	–	अशुभ
९-धर्मभाव	–	शुभ
१०-कर्मभाव	–	अशुभ
११-लाभभाव	–	शुभ
१२-व्ययभाव	–	साधारण

सङ्केत–पृष्ठ संख्या ५ के चक्रानुसार शुभ तथा अशुभ फल यहाँ लिखा गया है। इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। अथशिवचतुर्दशसूत्रभोग्यकाल ।।

१ २ ३ ४ ५
श्लोक– महीहस्तारामाः श्रुतिपरिमिता वा शरमिता–
६ ७ ८ ९
रसाः शैला नागा नव चकथिता वर्षगणना ।
१० ११ १२ १३ १४
दिशारुद्राःसूर्या अनलवसुधा चैवमनवः–
क्रमाद्वैसूत्राणामखिलफलवोधाय कथिता ।।

\+ \+ \+ \+

अर्थ-शिव सूत्रों का भोग्य काल-अइउण् का १ वर्ष ऋलृक् का २ वर्ष। एओङ का ३ वर्ष। ऐऔच् का ४ वर्ष। हयवरट् का ५ वर्ष। लण्का ६ वर्ष ञमङणनम् का ७ वर्ष। झभञ् का ८ वर्ष। घढ्धष् का ९ वर्ष। जवगडदश् का १० वर्ष। खफछठथचटतव् का ११ वर्ष। कपय् का १२ वर्ष शषसर् का १३ वर्ष। हल् का १४ वर्ष। फल ज्ञान के लिए कहा है। कुल १०५ वर्ष का प्रमाण चाहिये।

\+ \+ \+ \+

।। दशा का क्रमवर्णनप्रकार ।।

श्लोक– अइउणादिदशा क्रमत्तोभवे–
दनिलभात्कथित।मुनिमण्डलैः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भुविविचार्यफलञ्चशुभाशुभं
सुकथने नितराञ्च यशोललभेत् ॥

\+ \+ \+ \+

अर्थ— अइउण् अदि शिवसूत्रों की दशा क्रम कृतिका नक्षत्र से जानना चाहिये अर्थात अइउण् दशा कृतिका नक्षत्र में प्रारम्भ होगी। रोहिणीनक्षत्र में ऋलृटक् सूत्र की दशा प्रारम्भ होगी। मृगशिर नक्षत्र में (एओङ) सूत्र का दशा प्रारम्भ होगी। दशा का भी योग काल पूर्व कथित प्रमाण के अनुसार ही जानना चाहिए यथा—अइउण् की दशा एक वर्ष रहेगी। ऋलृटक् की दशा २ वर्ष रहेगी। (ऐओङ—सूत्र की दशा ३ वर्ष रहेगी उसी क्रम से ऐऔच् आदि सूत्रों को भी दशा प्रमाण वर्षों में जानना चाहिये। दशा का भुक्त तथा योग्य वर्षादिप्रमाण-विंशोत्तरी आदि दशा के समान ही भयात तथा भभोग से निकाल लेना चाहिए। अन्तर्दशा के समान अन्तर्दशा भी निकाल लेना चाहिए। यथा—किसी का जन्म रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हुआ है। भभोग ६०/०४ पल हैं-भयात १५ घटी पल १ बिपल पल है-तो प्रथम चरण प्रायः समाप्त हो गया है स्वल्प मात्र बर्तमान है तो कृतिका के क्रम से दशा निकालने से ऋलृटक्, सूत्र की दशा वर्तमान है—स्थूलमान से एक चरण प्रथम चरण व्यतीत हो चुका है—दूसरा चरण प्रारम्भ हुआ है। ऋलृटक् दशा का फल चक्रानुसार देखकर कहना चाहिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्र-पृष्ठ ५ में है। इन सब का आधार श्रीगुरुदेव वाक्य ही जानना चाहिए।

(१)

।। अथशिव शूत्रदशा चक्र ।।

ऋऌक्	एओङ्	ऐऔच्	हयवरट्	लण्	ञमङणनम्	झभञ्	घढधष्	जबगडदश्	खफछठथ चटतव्	कपय्	शषसर्	हल्	अइउण्	शिवसूत्र	
०१	०३	—४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	०१	व०	
०६														मा०	
००														दि०	
२०२८	२०३०	२०३३	२०३७	२०४२	२०४८	२०५५	२०६३	२०७२	२०८२	२०९३	२१०५	२११८	२१३२	२१३३	संबद्गण
११	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५		सूयराशिः
२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६		सूर्यांशाः
५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३		सूर्यकलाः
००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००		सूर्यविकलाः

सङ्केत—विंशोत्तरी आदि दशा की तरह जन्म समय के सूर्य राशि अंशकला विकला पूर्ण ज्ञान करके शिव सूत्र दशा चक्र बनाना चाहिए। दशा आदि का शुभ तथा अशुभ फल-पृष्ठ संख्या ५ के चक्र में लिखानुसार जानना चाहिए। अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर्दशा आदि विंशोत्तरी दशा आदिवत् जानिये।

इति संक्षेप से जातकजन्मफलकथनसमाप्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

॥ श्रीशिवसूत्राक्षरदशाचक्रमद: ॥

सूत्राणि	व०	मा०	दि०	घ० प०	२०७१	रा०	अं०	क०	वि०
ऋऌक्	०१	०६	००	००	२०२८	११	२६	५३	००
एओङ्	०२	००	००	००	२०३०	०५	२६	५३	००
ऐऔच्	०२	००	००	००	२०३२	०५	२६	५३	००
हयवरट्	०४	००	००	००	२०३४	०५	२६	५३	००
लण्	०१	००	००	००	२०३८	०५	२६	५३	००
ञमङणनम्	०५	००	००	००	२०३९	०५	२६	५३	००
झभञ्	०२	००	००	००	२०४४	०५	२६	५३	००
घढधष्	०३	००	००	००	२०४६	०५	२६	५३	००
जबगडदश्	०५	००	००	००	२०४९	०५	२६	५३	००
खफछठथ चटतव्	०८	००	००	००	२०५४	०५	२६	५३	००
कपय्	०२	००	००	००	२०६२	०५	२६	५३	००
शषसर्	०३	००	००	००	२०६४	०५	२६	५३	००
हल्	०१	००	००	००	२०६७	०५	२६	५३	००
अइउण्	०३	००	००	००	२०६८	०५	२६	५३	००

सङ्केत—श्री शिव सूत्रदशा के वर्षों का मान क्रमश: १-२-३-४ आदि है। श्री शिवसूत्राक्षर दशा के वर्षों का प्रमाण प्रतिसूत्र के अक्षर क्रम से जानिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ २ २ २ ४ १ ५ २ ३
श्लोक– रामाद्वौचकरौकरौ श्रुतिमिताश्चन्द्र:, शरा द्वौत्रय:–
५ ८ २ ३ १
पञ्चाष्टौचकरौ त्रयश्च वसुधा ज्ञेया:क्रमाद्वै .
२ ३ ४
समा: । निन्द्यंसौख्यकरं शुभाशुभफलंसौख्यप्रदञ्
५ ६ ७ ८ ९
चाशुभं सर्वंशोभनमेवपूर्णशुभदं कष्टप्रदं सौख्यदम् ।
१० ११ १२ १३ १४
॥१॥ निन्द्यन्निन्द्यतरं सदाशुभकरङ्कष्टप्रदंशोभ–
नंशम्भो सूत्रफलंवुधैर्निगदितंलोकोपकाराय च ॥

अर्थ-श्री शिवसूत्राक्षर दशा के वर्षों का मान-प्रतिसूत्र के स्वर सहित अक्षरों के अनुसार जानना चाहिये । यथा—अइउण् में ३। ऋलृक् में २ । आदि प्रति सूत्र का फल निम्नलिखित क्रम से जानिये ।

यथा-१ अशुभ । २ शुभ । ३ शुभाशुभ । ४ शुभ । ५ अशुभ । ६ शुभ । ७ शुभ । ८ अशुभ । ९ शुभ । १० अशुभ । ११ अशुभ । १२ शुभ १३ अशुभ १४ शुभ ।

(प्रमाण-योगिजन व विद्वत्समुदाय)

॥ शिवचतुर्दशसूत्राणांयन्त्ररूपेणविधानम् ॥

श्लोक– जगति विषमकालो विद्यमानोयदा स्यात्–
पशुपतिवरलब्धं सूत्रजालं विलिख्य ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मधुनिपयसिसम्यक् सर्पिषिस्थापयित्वा–
प्रतिदिनमतिभक्त्या पूजयेद् विल्वपत्रैः ॥१॥

\+ + + +

श्लोक– सद्रक्तचन्दनयुतेन च कुङ्कुमेन–
स्वर्णादिधातुरचितेऽमलशुद्धपत्रे ।
सम्यक्चयन्त्रमथवा किलभूर्ज पत्रे–
विद्वान्लिखेच्चशुभदाडिमशाखयाच ॥ २ ॥

\+ + + +

अर्थ-जिस समय संसार में अपने ऊपर आपत्ति काल प्राप्त हो उस समय श्रीपशुपति से प्राप्त चतुर्दशसूत्र-सुवर्ण आदि धातु से निर्मित पत्र पर अथवा भूर्ज पत्र परके-शर-युक्त रक्त चन्दन से अनार की कलम से लिख कर शहद या दूध या घृत में लिखित यन्त्र रखकर दैनिक 'विल्वपत्र आदि से षोऽशोपार पूजन करना चाहिए ॥१॥ ॥२॥

श्लोक– कुसुमफलपयोभिः शुद्धनैवद्यधूपै–
मनुदिनमिति यावत् पूजयेद् भक्तियुक्तः ।
पततिरिपुसमूहस्तस्य पादेतदाशु–
वसति भुवनमध्ये सर्वकल्याणयुक्तः ॥३॥

\+ + + +

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ-सुवर्णादि धातु पर अथवा भोज पत्र पर पूर्ण लिखित नियमानुसार लिखा हुआ शिवचतुर्दशसूत्ररूपीयन्त्र - शहद - घृत दूध अदि किसी एक में रखकर १४ दिन तक पुष्पफल दूध तथा नैवेद्य आदि से पूजन करने से समस्त आपतियाँ नष्ट हो जाती हैं-शत्रुगण चरणों में आकर गिरते हैं। समस्त कल्याण सदा बने रहते हैं।

\+ \+ \+ \+

श्लोक— भ्रमश्वासोन्मादज्वरविविधपीडादिसमये—
तथासर्पादीनां विषहरणकाले धृतमिदम् ।
लिखित्वालेखन्या जगतिविदुषा दाडिमतरो—
भुंजे वा कण्ठे वैहरति सकलंव्याधिनिचयम् ।।४।।

\+ \+ \+ \+

अर्थ—भ्रम - श्वास - उन्माद - समस्त प्रकार के – ज्वार – विविध प्रकार की पीड़ा तथा सर्पवृश्चिकादि की विषकृत पीड़ा आदि में यदि यह श्री शिववर से प्राप्त चतुर्दश सूत्र-भूर्जपत्र पत्र पर अनार की कलम से रक्त चन्दन से लिखकर गले या वाहु में धारण किया जाय तो समस्त पीड़ायें दूर होंगी। यह शिवचतुर्दश सूत्र रूपी यन्त्र समस्त आपत्ति हर तथा सकल सौख्यप्रद है। इसका विशेष विस्तार आगे लिखा जायगा ।।४।।

\+ \+ \+ \+

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ 卐 ॥ अथशिवसूत्रयन्त्ररूप ॥ 卐 ॥

अइउण्	ऋलक्	एओङ्	ऐऔच्
हयवरट्	लण्	ञमङणनम्	झभञ्
घढधष्	जवगडदश्	खफछठथ चटतव्	कपय्
शषसर्	हल्	ॐ देवदत्त	ओं नमः शिवाय

॥ अथशिवचतुर्दश सूत्रों का यन्त्र रूप से सङ्क्षेप से विवेचन ॥

सङ्केत-देवदत्त के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए कि जिस व्यक्ति का सम्बन्ध उस कार्य से हो यथारामनारायण नाम व्यक्ति के प्रति यदि यन्त्र का प्रयोग करना है तो यन्त्र में रामनारायण लिखना चाहिए ।

१—इस यन्त्र को स्वर्ण आदि धातु से बने हुये पत्र अथवा भोज पत्र पर केशर से युक्त चन्दन (लाल चन्दन) से अनार की कलम से लिखकर दूध या घृत या शहद में रखकर दैनिक षोडशोपचार पूजा करने से १४ दिन में अथवा (कलौसङ्ख्या चतुर्गुणा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के मत से ५६ दिन में अति कठिन कार्य पूर्ण हो जाते हैं। वेल पत्र तथा श्वेत पुष्प चावल का सदा पूजन में ध्यान रहे।

विशेष सङ्केत—यन्त्र में यदि १४ सूत्र न लिखकर केवल एक ही कोई सूत्र (अइउण् आदि) १४ कोष्ठों में लिखकर पूर्व-लिखित विधि से पूजनादि करे तो भी कार्य सिद्धि में शीघ्र सफलता मिलती है। दोनों प्रकार के प्रयोग अनेकों वार के अनुभूत हैं।

(क) पूजन के लिए एक दूसरा पात्र रखना चाहिए सभी षोडश-प्रकार के पुजन की सामग्री उसी दूसरे पात्र में छोड़ना चाहिए। जिसमें यन्त्र रक्खा है उसमें पूजन सामग्री नहीं छोड़नीं चाहिए।

(ख) यदि दुष्ट व्यक्ति किसी को परेशान करता हो तथा घोर पाप करता हो ऐसे दुष्ट व्यक्ति को दमन करने के लिये तथा सुमार्ग पर लाने के लिये उस व्यक्ति का नाम यन्त्र में पूर्व-वत् लिखकर दूध में डालकर दूध को अग्नि पर रखकर खोलाना (विशेषगरम) कर ा चाहिये। १४ दिन दैनिक तक लिख लिखकर यह प्रयोग किया जाये तो दुष्ट व्यक्ति शीघ्र सुमार्ग पर आ जायगा—यह प्रयोग भी अनेकों बार का अनुभूत है।

(ग) यन्त्र में दुष्ट व्यक्ति का नाम लिखकर शहद या घृत में रखने से भी सुमार्ग पर आ जाता है। अनुभूत है प्रयोग।

(घ) भोजपत्र पर यन्त्र लिखकर गलै या हाथ में बांधने से भ्रम-उन्माद-श्वास-विविध प्रकार के ज्वर-सर्पादि—विषकष्ट आदि सभी दूर हो जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(च) परदेश में गये पुरुष को बुलाने के लिये-उस व्यक्ति का नाम पीपल के पत्र पर लिखकर—उसी पीपल के पत्र में एक या दो-या जितने भी सूत्र लिखने में आ सकें लालचन्दन से लिखकर एक कोरी (जिसमें काला दाग न हो) हांडी में वह पत्र डालकर तथा नदी के १४ कांकड़ भी उसी हांडी में डालकर सराव से हांडी वन्द कर देना चाहिये। दैनिक स्नान करने के बाद उस हांडी को १४ बार हिलाना चाहिये तो २१ दिन में भगा हुआ व्यक्ति अवश्य घर आ जायगा। यदि एक पत्र में १४ सूत्र लिखने में न आ सकें तो कई पत्रों में लिखकर डाल देना चाहिये। इतना ध्यान रहे कि जितने पत्रों में सूत्र लिखे जायें तो प्रतिपत्र में भग हुये व्यक्ति का नाम अवश्य लिखना चाहिये। यह भी प्रयोग अनेकों बार का अनुभूत है।

विशेष चौदह सूत्र १४ कोष्ठों में लिखे या केवल एक ही सूत्र १४ कोष्ठों में लिखे। अथवा जितने सूत्र एक पत्र पर आ सकें उतने लिखे-दूसरे या तीसरे पत्रों पर शेष रहे सूत्र लिखे नाम प्रत्यक पर लिखना चाहिये।

(छ) १४ वेलपत्रलाकरप्रतिपत्रापर १-१ सुत्रा किखे अर्थात् एक पत्रा पर एक सूत्रा लिखे—इस प्रकार १४ को १४ विल्व पत्रों पर लिखकर शङ्कर जी पर १४ या ५६ दिन तक चढ़ाने से भगवान् शिव सभी कामनायें पूर्ण करते हैं। अनुभूत है यह प्रयोग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ज) १४ सूत्रों को विल्वपत्रों पर लिखकर बहते हुये नदी के जल में दैनिक छोड़ने से भी कार्य सिद्धि में पूर्ण सफलता मिलती है। अनुभूत है यह प्रयोग।

श्कोल- एवं विधानेन विपत्तयोऽ निश-
न्नश्यन्तिनूनं शिवसूत्रजालतः।
आयान्तिगंहे किलतस्य सम्पदो-
नीरोगदेहश्च चिरायजीवति ॥५॥

इतियन्त्रप्रकरणंसमाप्तम

\+ \+ \+ \+

अर्थ-पश्चात् जो विधान सङ्क्षेप से लिखा गया है जो उस विधान से चौदह सूत्र रूपी यन्त्र का प्रयोग करेगा तो उसकी सभी आपत्तियाँ नष्ट होकर उसके घर में सम्पदायें परिपूर्ण होंगी। तथा भगवान् शङ्कर जी की कृपा से चिरायु होगा।

इति यन्त्र प्रकारण समाप्त

॥ शिवशूत्रों की मन्त्ररूप होने से उपयोगिता वर्णन ॥

श्लोक- यदाचैकश्वासे कठिनसमये सूत्रनिचयम्-
परम्मन्त्रं शम्भोः पठति मनजो निश्चलमनाः।
तदायान्तित्वस्मिञ्जगतिविलयन्तस्यविपदो-
न किञ्चिद्दुःसाध्यङ्कठिनमपिकार्यम्प्रभवति ॥६॥

\+ \+ \+ \+

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ–जिस समय आपत्तियां प्राप्त हों तो उस समय में भगवान् शिव की डमरू से प्राप्त १४ सूत्रों को एक श्वास में कहने का अभ्यास करके दैनिक एक माला (अष्टोत्तरशत सङ्ख्या) जप करने से सभी आपत्तियां दूर होकर संसार में पूर्ण सुख प्राप्त होता है कोई भी अति कठिन कार्य नहीं है जो इस मन्त्र से पूर्ण न हो सके अर्थात् कठिन से कठिन कार्य पूर्ण हो सकते हैं ॥६॥

विशेष सङ्केत–श्री शिवसूत्रावली का प्रयोग अनेक बार का अनुभूत है सभी सङ्कटों में सफलता मिलती है ।

(१) विच्छू विष में पढ़ते जाइये उतरता जायगा ।

(२) सर्प के काटे हुये व्यक्ति के कान में उच्च स्वर से १४ सूत्र कहने से अवश्य लाभ होगा ।

(३) प्रेतावेश व्यक्ति पर १४ सूत्र एक श्वास में पढ़कर जल के छींटे मारने से तत्काल लाभ होगा अनेकबार छींटें मारने से प्रेतावेश वाला व्यक्ति बिलकुल ठीक हो जायगा १४ सूत्रों को एक श्वास में कहने का अभ्यास होना चाहिये । १४ सूत्रों को भोज पत्र पर लिखकर गले या बाहु में बांधने से प्रेत बाधा नष्ट होगी–सकल व्याधियां नष्ट होगीं ।

(४) ज्वर-तिजारी-चौथिया आदि ज्वर में १४ सूत्रों द्वारा झाड़ा अर्थात् झार-फूंक करने से सभी ज्वर शीघ्र छूट जाते हैं । अथवा १४ सूत्र या १४ सूत्रों में से कोई भी एक सूत्र पीपल के पत्ते पर लिखकर गले या हाथ में बांधने से भी सभी प्रकार के ज्वार नष्ट हो जाते हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) १४ सूत्रों को पढ़कर मृगी उन्माद आदि से पीडित रोगी को झाड़ा देने से ६१ दिन में रोग नष्ट हो जाते हैं। प्रतिदिन १४ सूत्रों द्वारा अभियन्त्रित जल भी मृगी या उन्माद से पीड़ित रोगी को पिलाना चाहिये। भोज पत्र पर १४ सूत्र अनार की कलम से सफेद चन्दन से लिखकर गले या हाथ में बांधने से-मृगी-उन्माद-भ्रम-श्वास आदि रोग दूर होते हैं।
मृगी-उन्माद-भ्रम-श्वास आदि रोग में एक सूत्र एक विल्व पत्र पर लिखकर (अनार की कलम से सफैद चन्दन से) दैनिक रोगी को पिलाने से अवश्य रोग दूर हो जायगा—१४ दिन में १४ सूत्रलिखकर पिलाना चाहिये = पुनः १४ दिन बाद वही क्रम चलाना चाहिये।

(६) १४ सूत्रों को एक श्वास में कहने का पूर्ण अभ्यास होना चाहिये १४ सूत्रों का एक मन्त्र माना गया है।

(७) चौदह सूत्रों को १०८ बार जप करने से सब प्रकार का कल्याण होता है।

(७) ये १४ सूत्र शिवस्वरूप होने से निरन्तर जपनीय तथा प्रार्थनोय हैं सकलाभीष्टप्रद हैं।

विशेष-इन चौदह सूत्रों की अनुष्ठनादि क्रिया में त्रुटि होने पर भी कुछ भी हानि की संभावना नहीं हो सकती है। भगवान् शङ्कर जी को तरह सदा कल्याणप्रद ही रहेंगें।

इतिशिवसूत्र रहस्यकामन्त्रस्वरूप विवेंचन समाप्त

श्लोक— वेदादिशास्त्रचयवोधनमूलरूपम्—
मन्त्रस्वरूपमखिलेश शिवस्वरूपम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दाक्षीसुतादिभिरलंहृदिभावितंयद्–
वन्देऽनिशंशिवचतुर्दशसूत्रजालम् ॥७॥

\+ + + +

अर्थ–वेदादि शास्त्र समूह के ज्ञान के कारण रूप-मन्त्र-स्वरूप-सर्वेश्वर शिवस्वरूप-पाणिन्यादि मुनियों से निरन्तर चिन्तत-शिवजी के वर से प्राप्त चतुर्दश सूत्रों की मैं वन्दना करता हूँ ॥७॥
इस प्रकार दैनिक प्रार्थना करने से भगवान् शिव प्रसन्न होकर सकलमनोऽभिलषित कार्य को पूर्ण करते हैं।

श्लोक– सङ्केतमात्रमुपलब्धमुमेशसूत्र–
जालस्यगुप्तमधिकम्परमंरहस्यम् ।
यस्माद्दयार्णवगुरोस्तपसः स्वरूपात्–
तस्यानिशञ्चरणपद्मयुगन्नमामि ॥८॥

\+ + + +

अर्थ–अति दयालु-तपोमूर्ति-जिन गुरुदेव जी से चौदह सूत्रों का परम रहस्य सङ्केत मात्र प्राप्त हुआ उनके चरण कमलों को निरन्तर नमस्कार करता हूँ।

\+ + + +

श्लोक– शिवचतुर्दशसूत्रसमुच्चये–
विविधगुप्तरहस्यमुदीरितम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगुरुणा विदुषांहिसताम्मुदे-
भुवियथैव तथा प्रकटीकृतम् ।।

\+ \+ \+ \+

अर्थ-श्री गुरुदेव जी ने जिस प्रकार महेश्वर के चतुर्दश सूत्रों का गुप्त रहस्य अति सङ्केत से कहा था मैंने उस रहस्य को विद्वज्जनों के हित के लिये विस्तार करके प्रकाशित किया ।

\+ \+ \+ \+

श्लोक- सङ्क्षेपतोऽतिसरलै विविधैश्चपद्यै -
श्रीशम्भुसूत्रनिचयस्य रहस्यमत्र ।
गुप्तम्प्रकाशितमिदञ्जगतोहिताय-
शम्भोश्च पूर्णदययाजगदम्बिकायाः ।।

\+ \+ \+ \+

अर्थ-अति सङ्क्षेप से जो गुरुदेव जी ने शिव चतुर्दश सूत्रों के रहस्य को बतलाय था उसको मैंने अति सरल-अनेक प्रकार के श्लोकों द्वारा लोक हित के लिये विस्तार से प्रकाशित किया ।

\+ \+ \+ \+

८ २ ० २

श्लोक- वसुनयनखनेत्रे वत्सरेभाद्रमासेऽ-
सितदलभृगुवारे चाष्टमीसंयुतंच ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरणकमलयुग्मे पावनेशाम्भवेतु–
शिवमतिशिवदत्तेनार्पितन्निर्मितन्तत् ॥

+ + + +

अर्थं–श्री भवानीशङ्कर की कृपा से संवत् २०२८ भाद्र मास कृष्ण पक्ष में अष्टमी शुक्रवार में शिवभक्त शिवदत्त शास्त्री ने अति पावन शिवचरण कमलों में यह शिव सूत्र रहस्य बनाकर समर्पण किया।

+ + + +

श्लोक– नाहङ्कविर्नहिबुधोनहिपूर्णविद्यो–
ज्ञानीगुणीनविदुषाङ्कृतपादसेवः ।
श्रीमच्छिवस्यपदपद्मपरागसेवी–
पूर्णंव्यधाच्च शिवसूत्ररहस्यमेतत् ॥

+ + + +

अर्थं–में कवि विद्वान् व पूर्ण विद्यायुक्त-ज्ञानी-गुणी तथा विद्वज्जन समुदाय की सेवा करने वाला भी नहीं हूँ-श्री भगवान् शिवजी की चरणकमलसेवा से इस शिवसूत्र रहस्य को पूर्ण किया।

+ + + +

श्लोक– इटावाख्येप्रान्तेवुधगणयुतेलोकविदिते–
निवृत्तानाचारेविविधविभवाक्रान्तसदने ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रमागारेरम्ये प्रणतजनतापूर्णभवने–
सल्लेमादौग्रामेकुलजवसतिश्चान्तपुरके ।

\+ + + +

अर्थ–विद्वज्जन समुदाय से युक्त-लोक में प्रसिद्ध-सदाचार से युक्त अनेक प्रकार से विभव से युक्त भवन वाले-धनी लोगों से युक्त-अति सुन्दर विनम्र जनता से युक्त-इटावा प्रान्त में सलेमपुर नाम के ग्राम में मेरे पूर्वजों का निवास रहा है ।

\+ + + +

श्लोक– प्रसन्नमूर्तिर्ममशान्तचेता–
विद्वान् सदाचाररतोवदान्यः ।
पितामहःकेशवदेवनामा–
श्रीकेशवाराधनतत्परोऽभूत् ॥

\+ + + +

अर्थ–प्रसन्नमूर्ति-शान्त स्वभाव-विद्वान्-सदाचार से युक्त-दानी श्री कृष्णचन्द्र के आराधन करने बाले-श्री केशवदेब जी मेरे पितामह (बाबा) थे ।

\+ + + +

श्लोक– तस्यात्मजश्चारुगुणःसुशीलो–
दातादयालुर्बहुशास्त्रवेत्ता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सद्बुद्धिशालीवुधबृन्दवन्द्य–
श्चाधीतविद्यामितशिष्यवर्गः ॥

\+ \+ \+ \+

श्लोक– आचार्यबर्योहिविशालकीर्तिः–
श्रीश्यामलालोजनकस्तुयस्य ।
तस्यात्मजश्श्रीशिवदत्तनामा–
गुप्तन्त्वकार्षीत्प्रकटंरहस्यम् ॥

\+ \+ \+ \+

इति श्रीशिवसूत्ररहस्यमखिलंशिवदत्तशास्त्रिणासमाप्तम् ।

अर्थ–उन श्री केशवदेव जी के पुत्र-सद्गुणी-सुशील-दाता-दयालु-अनेक शास्त्रवेत्ता–सुन्दर बुद्धि-वाले पण्डित मण्डली से पूजनीय जिनके पढ़ाये हुये असङ्ख्य शिष्यगण वर्तमान हैं आचार्य वर्य्यं-विशाल कीर्तिवाले–श्री श्यामलाल जी थे उन श्री श्यामलाल जी के पुत्र श्री शिवदत्त शास्त्री ने इस गुप्त रहस्य को प्रकट किया ।

इति श्रीशिवसूत्ररहस्य का समस्त विवेचन शिवदत्तशास्त्री ने समाप्तकिया

—०—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ आदिशक्तयेनमः ॥

परिशिष्टभागः

लेखक :—

ज्योतिर्वित् श्री पण्डित शिवदत्तशास्त्री व्या०

आ० आ० कर्मकाण्ड

विशारदः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीदेवीशकुनावली

(उदाहरणहिन्दीभाषानुवाद—सहित)

प्रणेताज्योतिर्वित्श्रीपण्डितशिवदत्त शास्त्री
व्या० आ० आ० कर्मकाण्ड विशारदः

स्थान—सलेमपुर

पत्रालय—अछल्दा

मण्डल—इटावा (उ० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। श्रीदेवीशकुनावली ।।

(१) सर्वेविघ्नाविनश्यन्ति जगदम्बाप्रसादतः ।
मनोऽभीष्टञ्च ते पूर्णम्भविष्यति न संशयः ।।

प्रश्नोत्तर उत्तम है भगवती के प्रसाद से समस्त विघ्न नाश होंगे मनोऽभिलषित कार्य पूर्ण होगा ।

(२) कार्यं सिद्धौ च सन्देहो विघ्नाधिक्यम्भवेत् बहु ।
यशोहानिर्महद्दुःखन्देव्या आराधङ्कुरु ।।

प्रश्नोत्तर अच्छा नहीं है विघ्न विशेष हैं यश हानि तथा महान् दुखः प्राप्त होंगे । देवी जी का आराधन करना चाहिये ।

(३) कार्यपूर्तौ न सन्देहो मनोऽभीटम्भविष्यति ।
जगदम्बाप्रभावेण सर्वत्र विजयी भवेत् ।।

प्रश्नोत्तर उत्तम है । भगवती देवी के प्रभाव से मनोऽभीष्ट कार्य होगा हर स्थान में विजय होगी ।

(४) जगन्मातुः कृपाऽऽपूर्णा कार्यसिद्धौतु संशयः ।
यशोलाभोऽर्थलाभोन शत्रुसङ्घोऽक्षयंब्रजेत् ।।

प्रश्नोत्तर साधारण है भगवती की कृपा पर्ण नहीं है। कार्यसिद्ध में सन्देह है यशलाभ अर्थ लाभ नहीं होगा शत्रुगण पराजित न होंगे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) देव्या आराधनम्भक्तया कुरु कार्यन्तदा भवेत् ।
अन्यथाकार्यसिद्धौतु नचाशा पूर्णनिश्चयः ।।

प्रश्नोत्तर अच्छा नहीं है। अतिभक्ति से भगवती का पूजन करने से कार्य सिद्धि की आशा है अन्यथा कार्य न होगा।

(६) कार्यसिद्धौ त्यजाशाञ्च विघ्नाधिक्यं विराजते ।
भगवत्या महादेव्याः कुरुपूजां विधानतः ।।

प्रश्नोत्तर अच्छा नहीं है विघ्न अधिक हैं। भगवती का पूजन विधिवत् करना चाहिये।

(७) महादेव्याः कृपापूर्णा कार्यसिद्धौ न संशयः ।
सन्देहो नैव कर्तव्यो सर्वाऽभीष्टम्भविष्यति ।।

प्रश्नोत्तर अत्युत्तम है भगवती की कृपा है। मनोभिलषित कार्य पूर्ण होगा। कुछ भी सन्देह नहीं है।

(८) जगन्माता प्रसन्नास्ति कार्यसिद्धौ न संशयः ।
अर्थलाभो यशोलाभो चेष्टितंसकलंभवेत् ।।

प्रश्नोत्तर उत्तम है। कार्यसिद्धि में सन्देह नहीं है भगवती प्रसन्न है। अर्थलाभ यशलाभ मनोभीष्ट कार्य होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। प्रश्नोत्तर निकालने की विधि ।।

किसी भी प्रश्न को निकालने के के लिये भगवती दुर्गा देवी का ध्यान करके श्री देवी शकुनावली के चक्र में किसी कोष्टक में अङ्गुली रखना चाहिये। उस कोष्टक के उस अक्षर को तथा उस अक्षर से नवें अक्षर को, पुनः उससे नवें अक्षर को इसी प्रकार लिखते जाने से एक श्लोक बनेगा। श्लोक के अनुसार प्रश्नोत्तर ज्ञात हो जायगा। जब तक अङ्कित अक्षर नवें-नवें-अक्षर के क्रम से समाप्ति न हो तब तक बारबर सभी अक्षर लिखते जाना चाहिये उदाहरण–

किसी ने भगवती का ध्यान करके और इच्छित प्रश्न को मन में रख कर चिन्हत अक्षर (●) 'क' पर अंगुली रखी। 'का' और उससे प्रति नवें अक्षर को लिखने से निम्नलिखित श्लोक निकलेगा :—

का यं पू तों न स न्दे हो म नोऽ भी ष्ठम् भ वि ष्यति। ज ग द म्ब प्र भा वे ण स र्वं त्र वि जयी भ वेत् ।।

प्रश्नोत्तर उत्तम है।

।। विशेषोपयोगिसङ्केतः ।।

श्लोक– रिक्तानशस्तास्तिथयःकदापि–
प्रश्नोत्तराणाङ् कथनेमुनीन्द्रैः।
तत्रापिप्रातर्नगवादनाद्धि–
कालःशुभोवैनववादनान्तः ।।

अर्थ–महार्षियों ने चतुर्थी नवमी तथा चतुर्दशी ये तिथियां प्रश्नोत्तर कहने में निषद्ध कहीं हैं–यदि इन तिथियों में ही प्रश्नोत्तर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान की विशेष आवश्यकता पड़ जाये तो प्रात:काल में ७ वजे से ९ बजे के अन्दर समय शुभ रहेगा उस समय में प्रश्नोत्तरादि हो सकते हैं।

सारांश-किसी प्रकार के भी प्रश्न चाहे 'श्री शिवसूत्ररहस्यम्" के हों या 'श्रीमान् शास्त्री जी से रचित अनुभूत' 'देवी शकुनावली' के हों पूर्वलिखित तिथियों में कथित निश्चित समय को छोड़कर प्रश्न नहीं करना चाहिये तथा उत्तर भी नहीं निकालना चाहिये।

सङ्केत-यह (श्री देवीशकुनावली,) परम पूज्य श्रद्धास्पद श्री १०८ श्रीमान पं० शिवदत्त शास्त्री जी ने जनता के कल्याण हेतु श्री कामाख्या देवी (आसामप्रान्त में हैं) के चरण कमलों में रहकर निर्माण की थी तथा चिरकालतक बराबर अनुभवकिया श्री जगज्जननी भगवतीमाता कामाख्या देवी जी की कृपा से सभी प्रश्नोत्तर सत्य घटित होते रहे। सुजन समुदाय इसका अनुभवअवश्य करे।

प्रार्थी—कुमुदेशचन्द्र जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष आवश्यक शब्दों का शुद्धाशुद्ध पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पङ्क्ति
विघि	विधि	२	१८ (श्लोक-४)
श्लोक-८	श्लोक-७	७	१
दिद	दिन	१३	४
स्थाएना	स्थापन	१३	९
पञ्च	पञ्चमी	१४	१६
पृथक-पृथक	पृथक्-पृथक्	१५	१५-१६
लिखी है	लिखा है	१५	१७
रक्ख	रक्खे	६९	१४
एओङ	एओङ्	७१	६
मकदमा	मुकदमा	७४	९
हयवरट	हयवरट्	७५	७
अङ्गली	अङ्गुली	७८	२
मी	में	७८	३
रहगा	रहेगा	७९	६
पद्म	पद्म	८०	५
प्रातकाले	प्रातःकाले	८०	१२
मध्याह्न	मध्याह्ने	८०	१३
कृत्वोद्धतं	कृत्वोद्धृतं	८१	९
जसे	जैसे	८२	१२
व्यजन	व्यञ्जन	८३	२
व्यंजनों	व्यञ्जनों	८४	१
व्यजनोके	व्यञ्जनोंके	८४	६
पृथक-पृथक	पृथक्-पृथक्	८५	२
भगवन्त	भगदन्त	८८	१३
भविष्तीति	भविष्णीति	९८	१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पङ्क्ति
सङघकेन	सङ्घकेन	१०१	१६ (श्लोके-९)
शम्भो	शम्भोः	१०८	१० (श्लोके)
एवः	एव	१०८	९ (श्लोके)
नन्दश	नन्देश्	१०८	१३ (श्लोके)
गचें	वचें	१०८	१८
कृष्णाला	कष्णलाळ	१०९	२०
अकित	अङ्कित	१११	६
सङ्ख्ये	सङ्ख्ये	११२	१० (श्लोके)
विघाय	विधाय	११५	१३ (श्लोके-५)
निशश्पाशु	निशम्याशु	११५	१९ (श्लोके-६)
नानाविघ	नानाविधं	११५	२० (श्लोके-६)
अष्ठविंशति	अष्टाविंशति	१२१	१
भद	भेद	१२४	१६
सुघिया	सुधिया	१२५	५ (श्लोके)
किसीमनका	किसीकेमनका	१२६	६
साफल्यमवा	साफल्यमेवा	१२७	४ (श्लोके-१२)
यशोल्लभेत्	यशोलभेत्	१३२	२ (श्लोके)
अमलशुद्धपत्र	अमळशुद्धपत्रे	१३६	४ (श्लोके-२)
नैवद्यघूपै	नैवेद्यधूपैः	१३६	१३ (श्लोके-३)
मनुदिनिमिति	मनुदिनमिति	१३६	१४ (श्लोके-३)
श्रासक	श्रासकें	;४०	१५
एव	एवं	१४१	४ (श्लोके-५)
गह	गेहे	१४१	६ (श्लोके-५)
समाप्तम	समाप्तम्	१४१	८
ज्वार	ज्वर	१४२	२३
वतलाय	वतलाया	१४५	११
विदुषाङ्कत	विदुषाङ्कृत	१४६	९ (श्लोके)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमान् पूज्य पण्डित श्री शिवदत्त त्रिपाठी शास्त्री जी की रचित, अनुवादित व संशोधित पुस्तकों की सूची नीचे लिखी है ।

१–श्रीदेवीस्तोत्रम् भा० टी० सहितम्
२–श्रीगुरुस्तोत्रम् " "
३–श्रीरामस्तोत्रम् " "
४–श्रीशिवस्तोत्रम् " "
५–श्रीहनुमत्स्तोत्रम् " "
६–श्रीकामदस्तोत्रम् " "
७–यन्त्रतत्वविवेचनम् " "
८–मन्त्रतत्वविवेचनम् " "
९–सावरमन्त्रतत्वविवेचनम् " "
१०–वेदान्ततत्वविवेचनम् " "
११–जीवनतत्वविवेचनम् " "
१२–श्रीगायत्रीतत्वविवेचनम् " "
१३–वैयाकरणभूषणसारतत्वविवेचनम् भा० टी० सहितम्
१४–शिवसूत्ररहस्यम् उदाहरण भा० टी० सहितम्
१५–श्रीनारायणीशकुनावली भा० टी० सहिता
१६–श्रीहरवंशपुराणश्रवणविधि: ।
१७–शक्तिपीठनिर्णयः " "
१८–श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती " "
१९–नर्वाणमन्त्रसङ्केत " "
२०–श्रीगायत्रीतत्वनिर्णय । " "

पाठकगण अपने उत्तर के लिये जवाबी पोस्ट कार्ड या टिकट तथा पुस्तक मंगाने हेतु डाक व्यय का अनुमानित रजिस्ट्री धन २ रुपया अग्रिम भेजने की कृपा करें ।

मुद्रक— एलोरा कानपूर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi